अनुभूति

अनुभूति

पन्ना झा

अंतिका प्रकाशन

अनुभूति

पहिल सजिल्द संस्करण : 2009

मूल्य :

प्रकाशक :

अंतिका प्रकाशन

ANUBHUTI
(Collection of short stories)
by Panna Jha

समर्पण

ओहि सब पात्र ओ व्यक्ति

के जिनका स' कथा

लिखवाक प्रेरणा भेटल।

दू आखर

कोनो काजक लेल प्रोत्साहन आत्मबल अनैत छै। साहित्यिक अभिरूचि स्कूल कालहि स' अछि। स्कूल-कालेजक पत्रिका मे लेख छपल छल। कलकत्ताक छात्र-जीवन मे साहित्यिक गुरूजन लोकनि स' मैथिली मे लिखवा लेल प्रोत्साहन भेटल त' हमर लेखनी ससरल। ओहि समय मे हमर निवास-स्थान पर प्राय: नित्य मैथिली साहित्यकार आ मैथिली-सेवी लोकनिक जुटान होइत छलैन्ह। लगैत छल जेना सब पर मैथिली रूपी भांगक नशा चढ़ल होइन्ह। ओहि प्रभाव स' हमहूँ असंपृक्त नहि रहलहुँ। दैनिक-जीवन मे व्यक्तिक व्यवहार आ घटित होइत घटना के सब देखैत छथि मुदा ओकर अनुभव करवाक दृष्टिकोण नितान्त वैयक्तिक होइत छै। एके घटना एक व्यक्तिक विचार आ व्यवहार के अस्त-व्यस्त क' दैत छै त' दोसर लेल ओ घटना बड़ सामान्य रहैत छै। ''अनुभूति'' नामकरणक कारण अछि जे हमरा प्रत्येक कथाक पात्र संगे जीवाक अवसर भेटल, घटित घटना हमरा हृदय के प्रभावित कयलक आ हम ओकरा लिपिबद्ध करक प्रयास कयल। घटना के कथा क रूप देबा लेल नोन हरदि लागब आवश्यक भ' जाइत छै।

सत्तरिक दशक मे तत्कालीन 'मिथिला-दर्शन' 'मिथिला-मिहिर', 'शिखा', 'कथा-पुष्प' आदि मे किछु मौलिक लेख आ कथा एवम किछु अनुदित कथा छपल। अस्सी दशकक उत्तरार्द्ध मे पटनावासी भेलहुँ त' एतयक आकाशवाणी स' सेहो कथा-पाठ, परिचर्चा आ आलेख पाठक अवसर भेटल। ठाम-ठीम किछु पोथी आ पत्रिका मे सेहो आलेख आ कथा छपल। कच्छप गतिये लेखन चलैत रहल। संग लागल गृहणी आ प्राध्यापिकाक ड्यूटी बड़ कड़गर छल तेँ लेखन-प्रक्रिया के अवाध गति नहि द' सकलियै।

दिना-दीनी एतयक साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संस्था स' जुड़ैत गेलहुँ त' हित, मीत, आपकता रखनिहारक क्षेत्र सेहो बढ़ि गेल। ओही मे स' किनको कथन छलैन्ह - नेना स' अहाँक कथा पढ़ैत-सुनैत जवान भ' गेलहुँ त' किनको कथन छलैन्ह जवान स' बूढ़ भ' गेलहुँ मुदा अहांक लिखल कथा-संग्रह देखवा मे नहि आयल।

सेवा-निवृत्तिक बाद बहुत साहस क' बीछ-बाँछि क' थोड़ेक कथा जुटेने छी। सरिया क' नहि रखने किछु कथा हेरा गेल। जे उपलब्ध भेल ओकर संकलन ''अनुभूति'' मे अछि।

पाठक-वर्ग स' 'अनुभूति' क प्रति खटगर-मिठगर प्रतिक्रिया क हमरा प्रतीक्षा रहत।

अनुक्रम

पृ. सं.

असामान्य के

डाक्टर नन्दीक चेम्बर मे बैसल-बैसल मोन थाकि गेल। अनायास भेंट करक समाद पठेने छलाह। मोने-मोन कारणक अटकर लगा रहल छलहुं। कतेको कारण मोन मे आयल मुदा एकोटा कारण सटीक नहि बुझना जाइत छल। डा. नन्दीक अनुपस्थिति मे हुनकर रोगी या सम्पूर्ण नर्सिंग सम्हारयवला हुनकर दहिना हाथ डा. सिन्हा कतेको बेर अपन मुखरित मुखारविन्द देखाय गेला। पुछला पर कहने छलाह कारण त' हमरो नहि बूझल अछि, तखन मात्र एतबे कहने

छथि जे अयला पर बैसय कहबन्हि।

डा. नन्दीक कार्यव्यस्तता आ समयक अभाव मोन पड़ला पर इच्छा भेल उठि क' चल जाइ। आखिर कतेक काल प्रतीक्षा कयल जाय? एना कयला स' गुरुक गुरुता लघु भ' जयतन्हि। समय बितयबाक लेल नर्सिंग होमक निरीक्षण करय लगलहुं। आधुनिक आ सुरूचिपूर्ण सजावट, जीवाक लालसा उत्पन्न करयवला चित्र सब, जे संभवत: मानसिक रोगी सभक द्वारा चित्रित छल, एक कोन मे लतरल मनी प्लान्ट, टेबुल पर टटका फूलक गुच्छा कांचक पात्र मे पानि पर राखल। भीतर जा क' रोगी सब स' भेंट करक इच्छा भेल मुदा नहि गेलहु जे कोन ठीक एही बीच डाक्टर साहब आबि ने जाइथ।

अपना स्थान पर बैसले छलहुं कि एक सौम्य, हृष्ट-पुष्ट, प्रसन्नमुख युवक प्रवेश कयलन्हि। हुनकर अनुसरण आवश्यकता स' अधिक गंभीर एक व्यक्ति क' रहल छलाह। अबितहिं पहिल युवक हमरा स' प्रश्न कयलन्हि – डा. नन्दी छथि कि नहि?

''नहि, बैसू कनेक काल मे औताह''– हमर उत्तर छल। पहिल युवक कें देखि क' लागल जे हम पूर्व-परिचित छी। स्मरण नहि भ' रहल छल। सोचल-हमर संबंधी त' नहिये छथि तखन कतय देखने छियैन्ह? कोना चिन्हैत छियन्हि? पूर्व मे कतहु देखने छियन्हि, एतबा निश्चित छलहुं। एही ओझराहटि मे छलहुँ कि संग आयल दोसर युवक ठठा क' हँसि पड़ल आ फेर तुरत गंभीर भ' फुसफुसाय लागल, जेना ककरो स' गप्प क' रहल हो। एहि तरहक व्यक्तिक एहि तरहक क्रिया-कलाप देखक अभ्यस्त भ' गेल रही तें कोनो विशेष प्रभाव नहि पड़ल। संग आयल पहिल युवक सेहो तटस्थ छलाह। मुदा तीव्र ठहाका डा. सिन्हा के ओतय अयबा लेल बाध्य कयने रहनि। आगन्तुक दिस अभिमुख होइत पुछने छलखिन्ह – कहल जाय, नब कोनो समाचार? संगे के छथि? आगन्तुकक शान्तभावें उत्तर छलन्हि - अहां लेल कोनो नब नहि। हमरा लेल अशान्तिदायक। ई छथि, रोगीक मित्र रोगी आ ओ बिहुंसल छल। डा. सिन्हा हमरा पुछलन्हि - हिनका चिन्हलियैन्ह? अपन केस-हिस्ट्री ई मात्र अहींके कहने छलाह। हमरा भक्क द' सब स्मरण भ' आयल। ओ व्यक्ति लज्जापूर्वक आंखि नीचा कयनहिं हाथ जोड़ि देने छल।

ओकर स्वास्थ्य लाभ पर हार्दिक बधाई दैत हमरो हाथ जोड़ा गेल छल। डा. नन्दी के अयला पर हुनका स' आवश्यक गप्प क' डेरा विदा त' भ' गेलहुं मुदा ओहि व्यक्तिक संग प्रथम साक्षात्कार आर ओकर केस हिस्ट्री पुन: स्मृति-पट पर आबि गेल।

लुम्बिनी पार्क (मानसिक-रोग-अस्पताल) मे डा. मित्राक क्लास आठ बजे प्रात: प्रारम्भ भ' जाइत छलन्हि। अस्पताल डेरा स' काफी दूर छल। डेराक काज सलटि, बस स' पहुंचलहुं त' भीतर जा क' हड़बड़ायल अपना ग्रूपक संगी सबके ताकय लेल एक बेर चारू दिस दृष्टि घुमाओल। तखनहि एक रोगीक कोठली स' अनु हड़बड़ायल निकललि आर हमरा देखितहिं कहने छलि - ''बाज अयलहुं हम एहि डिग्री स'। लुम्बिनीक ई हमर अंतिम भीजिट भेल।'' हमर जिज्ञासा छल - कियैक की भेल? एखने हिम्मत टूटि गेल? एखन त' पूरा एक साल बाकी अछि? अनु गंभीर भ' कहने छलि - ''एहन पेसेन्ट त' एकोटा नईं भेटल छल। किछु साधारण प्रश्न पुछलियै त' मुंह पर थूकि देलक।''

अनु डा. मित्राक चेम्बर दिस बढ़ि गेल छल। हम ओही कोठली मे घुसल रही जतय स अनु बहरायलि छलि। ओतय हमरा ग्रूपक आर सब छात्र-छात्रा बैसल छल। सामने एक सुदर्शन पुरुष मुंह घुमाक' खिड़की बाटे बाहर ताकि रहल छल। किछु क्षण परिस्थितिक निरीक्षण क' हम एक सहपाठी स' आस्ते स' पुछने रहियैक - की कोनो खास बात? ओ शीऽ ऽ ऽ करैत मुंह पर आंगुर देने हमरा बाहर आनि कहलक - एकर केस हिस्ट्री लेबाक हमरा लोकनिक

सब चेष्टा निष्फल भेल अछि। ककरो किछु कहिते नईं छै। अनु किछु बेशी प्रश्न केलकै त' मुंह पर थूकि देलकै। तों त' गिन्नी (विवाहिता, मलिकाइन) छें। सब ठाम 'प्रिफरेन्स' भेटैत छउ। भ' सकैयै एतहु लहि जाउ।

प्रश्न विचारणीय छल, मुदा मित्रा सर कें कंक्रीट काज चाहियन्हि, खाना-पूर्त्ति नहि। साहस क' आगू बढ़लहुं।

ओहि व्यक्तिक सम्मुख जा नमस्कार क' परिचय पूछक साहस कयने छलियैक। ओ निर्विकार भावे मात्र हमरा दिस तकने छल।

''जँ हम गलती नहि क' रहल छी त' अहीं श्री चौधरी छी?

ओ तैयो चुप।

''हमरा डा. मित्रा पठेने छथि। अहां स' किछु जानकारी लेबय लेल। अहांकें असुविधा नहि हो त' हम किछु पूछि सकैत छी?''

ओ एक बेर मूडी उठा, हमरा दिस देखलक फेर खिड़कीक बाहर देखय लागल जेना किछु ताकि रहल छल। ओकर प्रतिक्रियाहीन चुप्पी स' हमरा बल भेटल। बुझबैत कहने रहियैक ''एहि स' अहूंकें लाभ होयत। एहि कैदखाना स' मुक्ति भेटत। ऑफिस जा सकब।'' ओ हमरा पर बरसि पड़ल छल – बन्द करू अपन लेक्चर। भगवानक लेल दया क' अहाँ लोकनि हमरा एसगर छोड़ि दिय'। स्वयं बड़बड़ायल छल – घरक लोक एहि नर्क मे धकेल गेल आर एतय घर जयबाक गप्प।

हमर ग्रूप ओतय स' बिदा भेल ई बुझि जे एकरा पाछू समय नष्ट कयला स' कोनो लाभ नहि। हम जयबा काल अंतिम प्रयास कयल - अहां एकान्त चाहैत छी त' ठीक छैक, हमरा लोकनि जा रहल छी। मुदा अहां त' स्वयं विद्वान आ बुझनुक छी, मोनक कष्ट बँटला स' मोन हल्लुक होयत आ चिकित्सा मे सुविधा सेहो।

क्षीण आशाक संग ओ पुछने छल - तखन हमरा छोड़ि देल जायत? ''एतय अहाँ कोनो जन्म भरिक लेल त' नहिये आयल छी। स्वस्थ्य भेला पर पुन: परिवारक संग रहब।''

ओ हमरा बैसक संकेत कयने छल। बाहर मे अपना ग्रूप के सूचना द' हम आबि क' बैस गेल छलहुं। ओ बिना कोनो भूमिकाक सहज स्वाभाविक रूपें कहब आरंभ कयने छल - नाम हमर अहांकें बुझले अछि। अधिकांश लोक नामे स' जनैत अछि, चेहरा स' ओतेक नहि। हम कलकत्तेक वासी छी। इन्जीनियर छलहुं। एखन त' पागल छी। जेना सब रहैत अछि हमहूं रहैत छलहुं। डेरा, ऑफिस, क्लब, मित्र-वर्ग, संबंधी सब स' लगाव छल। अनायास एक दिन अपने महल्ला क रीना स' परिचय भेल। हमरे ओहिठामक आयोजित एक भोज मे। रीना सुन्दरि, स्मार्ट, हँसमुख, डिग्री कोर्स - फाइनलक छात्रा। ओकर सब किछु हमरा आकर्षित कयलक। हाव-भाव, व्यवहार, वेश-भूषा सब नीक लागल। ओकरा स' बेशी काल भेट होमय लागल या कहि सकैत छियैक जे भेटक सुयोग बनबैत गेलहुं। ओहो बिना कोनो प्रतिवादक हमर संग दैत गेलि। लेक, सिनेमा, थियेटर, होटल कतहु संग जयबा मे हिचकिचायल नहि। हमरो ओकरा बिना कतहु मोन नहि लगैत छल। सतत एक्केटा ध्यान मे रहैत छल - रीनाक सामीप्य। ओहो कहैत छलि - क्लास, लेक्चर, घर कतहु मोन नहि लगैत अछि। हम विभोर भ' जाइत छलहुं। दूनू गोटे मे कतेको प्रेम, आश्वासन आर प्रतिज्ञाक गप्प होइत छल। हमरा लोकनि दिन-प्रतिदिन एक दोसराक समीप होइत रहलहुं। घरक लोकक प्रतिवादक उपरान्तो हम ओकर प्रत्येक इच्छा आर आवश्यकताक पूर्त्ति करैत रहलियैक।

ओ आनर्सक परीक्षा पास कयलक। ताहि उपलक्ष मे हम ओकरा अपन औंठी उपहार स्वरूप द' कहने छलियै

–एकरा अपना स' अलग करक अर्थ होयत अहाँ हमरा अलग करब। उत्तर मे ओ मात्र बिहुँसि देने छल। एक दिन रीना नौकरी करक इच्छा व्यक्त कयने छलि, जाहि मे हमर सहयोग अपेक्षित छलैक। हम हंसि क' कहने रहियैक – दूनू गोटे बाहरे काज करी ई आवश्यक छैक की? मात्र हमर आय पर्याप्त नहि होयत?

ओ मौन रहि गेल छलि। आस्ते–आस्ते हम रीना मे परिवर्त्तनक अनुभव कयल। ओ हमर सामीप्य त' दूर भेंट तक नहि करय चाहैत छलि। हमर देल उपहार सेहो आब नहि लेबय चाहैत छलि। कारण पुछला पर कतेको बहाना। हमरा कोनो कारण बुझवा मे नहि आबि रहल छल। हम अपना कें कमजोर आ विचलित अनुभव करय लागल छलहुं।

बीच मे किछु दिन सर्दी–ज्वरक कारण डेरा स' निकलल नहि भेल। रीना पुछारियो तक करय नहि आयल। कनेक स्वस्थ भेला पर हमहीं ओकर डेरा गेलहुं त' पता लागल जे किछुए काल पहिने बाहर निकललि अछि। मोन कें संतोष देलहुं – ई बताहि निश्चित नोकरीक पाछू बउआइत होयत।

समय व्यतीत करक ध्येय स' हम सिनेमा हॉल दिस बढ़ि गेल रही। संयोग स' टिकट भेट गल छल। सिनेमा आरंभ भ' गेल छलै। हमरा सामनेक सीट पर एकटा जोड़ी बैसल छल। हाव–भाव स' नव–दम्पति हेबाक आभास भेल। इन्टरवलक प्रकाश मे जे देखल ओहि स' बड़ पैघ मानसिक झटका लागल। ओ युवती हमर रीना छल, आ युवक हमरा लेल अपरिचित छल। अनायासे मुंह स' निकलि गेल छल – रीना! अहूं आयल छी? हम अहांक डेरापर गेल छलहुं। अहाँ स' भेट नहि भेल त' सोचल सिनेमा देखि समय बिता आबी।

रीनाक प्रति हमर सम्मोहन हटल नहि छल। ओहि युवकक उपस्थिति हमरा लेल नगण्य छल। तखनहि सुनाइ पड़ल – ई के थिकाह, रिनी? ''हमरा मुहल्ला मे रहैत छथि।'' रीनाक एहि उत्तर स' हमरा मोन मे ठेस लागल। हॉल मे फेर अन्हार भ' रहल छलैक। ओ व्यक्ति रीनाक हाथ पकड़ि सीट पर बैस गेल छल। ओतय रहब हमरा असह्य बुझना गेल आ हम डेरा घुरि आयल रही। हमर आत्मा ई स्वीकार नहि क' पाबि रहल छल जे रीना एहन कोनो काज करत जाहि स' हमरा – ओकरा बीच मनमुटाव भ' जाय। दर्द स' हमर माथ फाटय चाहैत छल। मुदा से भेलै नहि। कखन झपकी लागि गेल, नहि बुझलियै। निन्न मे हम चिचिया उठल रही – नहि, नहि एना नहि भ' सकैत अछि, ई असंभव ..... मिथ्या छी। माय जगा देने छलि – की स्वप्न देखैत छी यौ? निन्न मे बाजक बीमारी त' अहां कें नहि अछि? दू दिन बाद रीनाक ओतय स्पष्टीकरण लेल जयबाक साहस कयने छलहुँ। गप्पक क्रम मे कहने छलि – विवाह आ मित्रता मे कोनो सम्पर्क नहि होइत छैक। मित्र कतेको भ' सकैत छथि, विवाह कोनो एकटा स' होयत। विवाह करक योग्य मित्र एखन तक नहि भेटल अछि। सिनेमा हालक ओकर संगी युवकक चर्चा कयला पर कहने छलि – ''.......... इन्डस्ट्रीक मालिक छथि। इन्टरव्यू मे हमरा स' बहुत प्रभावित छलाह। बड़ सरल आ मिलनसार लोक। हमहूँ हुनका स' प्रभावित छी।''

हतप्रभ भेल मानसिक झंझावात नेने डेरा चल आयल रही। तखनहिं स' प्रत्येक महिला हमरा नाटकक पात्र लागय लागलि। लागल जेना सब अपन–अपन कुशल अभिनय मे लागल अछि।

हमर छोट बहीन भोजन लेल पूछय आयलि त' प्रश्न कयने रहियै – तोंहु कोनो अभिनय क' रहल छें? अप्रत्याशित प्रश्नक उत्तर प्रश्ने स' भेल छल – ''अहां पागल भेलहुं अछि की?'' हमरा भय छल एहि पीड़ा स' हमर मस्तिष्क ने विकृत भ' जाय आर यैह कटु सत्य हमर बहीन बाजल छल। तामसे हम पेपर वेट उठा क' ओकरा पर फेकने छलियैक जे ओकरा माथ स' शोणित बाहर क' देने छलैक। तकर बाद सबक पूछल प्रश्नक उत्तर हम टेढ़ आ अपशब्द मे देने रहियै। भोर मे ऑफिस जयवाक या किछु करक इच्छा नहि भेल तें घर बन्द क' पड़ल रहलहुँ आर रीनाक व्यवहार

पर सोचैत परेशान होइत रहलहुँ। हमर दुर्व्यवहार बढ़ि ने जाय तें ककरो स' गप्प नहि कयल, एसगर कनैत रहुलहुं, स्वयं मे ओझरायल गप्प करैत रहलहुं। घरक सब गोटे केवाड़ खोलक नेहोरा करैत रहैत छल, हम नहि खोलैत छलियै।

दैनिक-दिनचर्या बाधित भ' गेल छल। ऑफिस जयबाक त' कोनो प्रश्ने नहि छल। स्वयं मायक खुओला पर एक दू क'र खा लैत छलहुँ। एहिना कतेक दिन बीतल मोन नहि अछि। आब घर स' निकली त' सभक कातर दृष्टि हमरा पर रहैत छलै। हमरा भेल छल आब सभ हमरा क्षमादान द' देने अछि। एक दिन बाबूजीक आग्रह पर हुनकर एक नजदीकी मित्रक ओतय जयबा लेल तैयार भेल छलहुं। माय भरि पाँज क' पकड़ि कानय लागल छल, जे अनर्गल लागल। बाबूजी माय के डटने छलखिन्ह। संभवत: डर भेल रहनि जे हम जयबा स' बिमुख नहि भ' जाइ। बाबूजीक ओ मित्र वास्तव मे एतयक डाक्टर छलाह आ तहिया स' हम एतहि छी। अहाँ पूछि सकैत छी जे अहाँक सहपाठिका पर हम थूकि कियैक देलियन्हि। एक त' ओ अनावश्यक चहकि रहल छलीह, रीना जकाँ। हुनक स्वर आ आकृति अझक्के मे हमरा रीना सन लागल। लागल जेना ओ जानि-बूझि क' हमरा खौंझा रहल छल।

चौधरीक केस-हिस्ट्री बूझि हम बहुत आश्वस्त भेल छलहुं। हुनका सांत्वना दैत बाजल रही - अहां त' एकदम स्वस्थ छी। एतेक नीक जकां अपन मोनक गप्प हमरा स' कयलहुं। हम मित्रा सर के अहांक प्रोग्रेसक रिपोर्ट द' दैत छियन्हि।

चौधरीक आकृति पर पुन: आक्रोशक भाव आबि गेल छलै। ओ हमरा स' पुछने छलाह - हमर एक प्रश्न अछि - लोक हमरे कियैक पागल कहैत अछि? अहाँ लोकनिक शब्द मे असामान्य। असामान्य हम कियैक? रीना या एहि तरहक अभिनय करयवाली कियैक नहि? हम हुनक प्रश्नक उत्तर बिना देनहिं ओतय स' बिहुंसि क' निकलि गेल रही। ❑

सरोकार

टेलीफोन पर नितिनक स्वर एकदम घबड़ायल छलै – ''मनोज केँ देख' चाहैत छियै त' यथाशीघ्र आउ। अंतिम साँस ल' रहल अछि।''

हड़बड़ायल अस्पताल पहुँचलहुँ। इमरजेन्सी वार्डक वातावरण मे हृदय केँ कँपा देव' वला चुप्पी पसरल छलै। नर्स, डाक्टर, दाई आदि सब विद्युत गतियेँ काज मे लागल छल। मुदा मौन, जेना। सबहक आवाज छिना गेल होइ। अही वार्ड मे अपन पुरान रोग-गैस्टिक अलसर - के ल' क' मनोज भर्त्ती भेल छल। एहि सँ पहिनहुँ ओकरा कतेको बेर गंभीर स्थिति मे अस्पताल आनल गेल छलै। आन बेर बीमारी के, अस्पतालक डाक्टर-नर्सक संगहि माय के गंजन करैत डेरा वापस अबैत छल। ओकर पहिल वाक्य होइत छलै – मामी! देखू पहलवान आबि गेल। सबके चारू-नाल चित्त क' देलियैन्ह। हँ, त' आब खुआ की रहल छी? जखन डाक्टर क अनुसार परहेज सँ रहक गप्प कहैत छलियै त' फेर अपना पराक्रमक बखान आरंभ क' दैत छल।

एहि बेर ओकरा हिस्सा मे पराजय छलै। ओ अपना के 'आनन्द' सिनेमाक नायक कहैत छल। ओहि नायक जेना ओकरो बुझल छलै जे डाक्टर ओकरा निरसि देने छै। ओकर रोग असाध्य छै। जिनगीक बचल दिन के ओ हँसि क' बिताब' चाहैत छल। ओ मात्र किछु दिनक पाहुन छल तेँ अधिक-सँ-अधिक स्थान देखब आर सुखक भोग करब ओकर अभीष्ट रहि गेल छलै। ताहि लेल बेसी काल माय-बेटा मे टोनामानी भ' जाइत छलै।

ओकरा मायक विश्वास छलै जे अपन सेवा आर पथ्य-पानिक बले अपना बेटाक अरूदा कम नहि होवय देत। हरदम संयम सँ रहवाक गप्प मोन पारैत रहैत छलै। मुदा मनोज वर्जना मानय लेल कखनो अपना के रोकि नहि सकल। आई मायक विश्वास ढ़हि-ढ़नमना गेल छलै। आँखि स' अविरल, निःशब्द नोर झहरल जा रहल छलै।

हम चुपचाप मनोजक खाट लग ठाढ़ भ' गेलहुँ। हमर अयवाक समाद जेना ओकरा कान मे कियो कहि देने होइक तहिना आँखि खोलि निर्विकार भावे हमरा देखलक। हमर हाथ केँ छूवाक प्रयास क' रहल छल मुदा हाथ बेसी दूर उठि नहिं रहल छलै। हम ओकर हाथ के अपना हाथ मे लेलियै त' ओ गसिया क' हाथ ध' लेने छल आर आश्वस्त होइत मात्र एतबे कहलक - हमर माँ के बुझेबै आ हाथक पकड़ ढ़ील भ' छुटि गेल रहै।

हम असहाय भेल अनुभव करैत रहलहुँ जे मनोजक चेतना आस्ते-आस्ते विलुप्त भ' रहल छलै। किछु क्षण लेल हमहुँ अपन चेतना के हेरा देने छलहुँ आ किंकर्त्तव्यविमूढ़ ठाढ़ रही। चेतना घुमल, मनोजक मायक हृदयविदारक कानब सँ। तखने बुझबा मे आयल जे मनोज नव यात्रा पर प्रस्थान क' गेल छल। कानब सुनि वार्डक कर्मचारी सब यंत्रवत दौड़ल आयल आ मनोजक मायक हाथ पकड़ि बाहर ल' गेल। कारण इमरजेन्सी-वार्ड मे जोर सँ बाजब तक वर्जित छलै। मनुष्यक संग कतेक विवशता छै, बेटाक मुइला पर मायक कनबो पर प्रतिबन्ध। आधा घंटाक भीतर मनोजक महाप्रयाणक तैयारी भ' गेल। नेयार भेलै अस्पताल सँ सोझे घाट पर जायल जाय। मनोजक माय के ल' हम सब डेरा अयलहुँ। एके मकान मे रहै छलहुँ। मनोजक निःसहाय, निस्तेज होइत मुखमंडल, हाथ केँ कसि क' पकड़ब, असक्क भेल शिथिल शरीर – सब किछु मोन केँ उद्वेलित क' रहल छल। ओकर अन्तिम वाक्य कोमहर संकेत क' रहल छलै? हम ओकरा माय के की बुझेबै? बुझेबै त' कोना बुझेबै? आइ ओ फेर ओहिना एसगरि ठार्हि छलि जतय आई सँ बीस बरख पूर्व ओ ठार्हि छलि।

मात्र बीस बरखक अवस्था मे मनोज जीवनक सब रंग देख लेने छल – सुख-दुख, हर्ष-अवसाद, स्नेह-घृणा, मान-अपमान, कखनो भुखल त' कखनो तृप्त। मायक कारण दोस्त-महीम, सर-संबंधी मे हीन भावक अनुभव करैत छल। ओ की अपना माय के कम बुझेबाक प्रयास केने छल? कखनो मित्रक रूप मे समाजक उचित-अनुचित देखा क' त' कखनो बेटाक रूप मे जिद्' त' कखनो रूसि क'।

मोन पड़ल एक दिनक गप्प। दूनू माय-बेटा मे खटपट भ' गेल रहै। जड़ि रहथिन्ह – मनोजक काका। ओ कखनो काल आबि संगे रहैत छलखिन्ह आ घरक खर्चा-पानि मे मदति सेहो करैत छलखिन्ह। मनोजक कहब छलै – ओकरा अयबा सँ मना क' दहीन। हमरा ओकर कोनो मदति नहि चाही ओकरा सँ हमरा कोनो सरोकार नहि अछि।

ओकरा माय मे एतेक साहस नहि छलै। मनोज रूसि क' दू दिन डेरा नहि आयल। एके फ्लैटक आमने-सामनेक भाग मे रहि क' हमरा दुनू गोटाक परिवार प्रायः साझी परिवार भ' गेल छल। मनोजक माय मात्र कानि क' भावावेग नहिं सम्हारि सकलि। अपन मोन हल्लुक करक लेल हमरा कहने छलि – भौजी! अहूँ हमरा चरित्रहीन आ कुलटा बुझैत होयब। सबहक नजरि मे हम सएह छी। बेटा, जकरा जीवनक सम्बल मानि हम पैघ-सँ-पैघ विपत्ति के पार कयलहुँ ओहो हमरा सएह बुझि रहल अछि। बेटा सेहो जखन उपदेश देबय लगैत अछि त' छाती फाटय लगैत अछि। मनोज के सब गप्प कहने छियै, तैयो अबूझ भ' जाइत अछि। हम त' जन्मे सँ अभागलि छी। कहुना पेट पोसयवला परिवार क पाँच भाई-बहीन मे हम सब सँ जेठ छलहुँ। तखनहुँ हमर दायित्व सब स' बेशी छल। बारह वर्षक अवस्था मे बाप द्वितीय वर सँ बिवाह करा उऋण भ' गेलाह एकोटा पाई नहि लगलैन्ह। एक खंड साड़ी आ चूड़ी-सिन्दूर संग विदा

क' देलैन्ह। कहावत छै जेब' नेपाल कपार जेत' संगे। ओतहु हमरा सतसासु भेटलीह। नैहर मे सब काज कर'क अभ्यस्त रही। एतहु ओहिना भोर सँ राति तक घरक प्रत्येक काज करय लागल रही। ससुर वयस गुने हमर काज देखि बहुत प्रसन्न रहैत छलाह मुदा सासु काज मे खोट निकालि अप्रसन्न रहैत छली। 'अलच्छी त' हमर नामे रखा गेल छल। भगवान कोन घड़ी मे आ कोन मोसि सँ हमर कपार लिखलखिन्ह से नहि जानि।

गाम मे हैजा पसरलै। मनोज तखन मात्र छः मासक छल। दू-तीन बेर कै' आ दस्त भेलैन्ह आ मनोजक पिता संसार त्यागि देलैन्ह। जावत ससुर छलाह कहुना ओतय खेपलहुँ। तकर बाद त' माय-बेटाक भोजनो पर आफत भ' गेल। गामक एक महिला जे कलकत्ता मे अपने चौका-बर्त्तन क' गुजर करैत छल, हमरो ओही काजक सलाह देलक आ हम एहि महानगरी मे मात्र पन्द्रह बरख क अवस्था मे अज्ञानी भेल चल अयलहुँ। ओही महिलाक प्रयास सँ एक डेरा मे काज भेटल। ओकरे 'खोली' (टीनक घर) मे जगह भेटल छल। मनोज के सुता क' जाई मुदा अयला पर ओ फकसियारी कटैत भेटैत छल। बच्चाक संग काज देब ककरो स्वीकार नहि छलै। कम वयस देखि लोक अनेको प्रलोभन देलक। नहि माललियै त' प्रताड़ना, लांछना आ उच्छन्नर भेटल। एक दिन अनायासे, मनोज जकरा काका कहैत अछि ओ काज करयवाली के तकैत हमरा खोली मे आयल छल। हम ओकरा सँ विनती कयने रहियै जे ओकर परिवारक हम आजीवन सेवा करबै। दरमाहा जे उचित बुझाई से देथि मुदा माय-बेटा के माथ नुकयबा लेल दू हाथक जगह अपना डेरा मे देथि। ओ अपन माय के सब वृतान्त कहि हमरा चाकरी आ आश्रय देने छल। तखन मनोजक काका अविवाहित छल, अल्प वयसक छल। दूनू माय-बेटा पर दया-दृष्टि रखैत छल। कखनहुँ माय के कहि पुरान साड़ी त' कखनो मनोजक लेल भातिजवला बेबी-सूट दिया दैत छल। हमहुँ यथासाध्य मनोयोग सँ घरक सब काज मे लागल रहैत छलहुँ।

ओकर दया हमरा प्रति आकर्षण कोना बनि गेलै, नहिं बूझि सकलियै। एक दिन सुन्न घर मे ओ हमर सतीत्वक अभिमान के छहोछित्त क' देलक आ प्रायः भीख मँगैत परिवार मे ककरो किछु नहि कहबाक निवेदन कयने छल। हम अपन दुखित हेबाक बहाना क' दू दिन घर सँ बाहर नहि भेलहुँ। गुनधुन मे रही जे ई घर छोड़ि दी या खूनक घोंट पीब जाई। बाहर लोकक घूरैत आँखि, वहशीपना मोन पड़ैत छल त' ह्रदय काँपि जाय। अन्ततः दरिद्रता, क्रूरता पुनः असहाय बना देलक आ हम पूर्ववत काज मे जुटि गेलहुँ। दोसर अवलम्ब निःस्वार्थ भेटत ई सोचब मूर्खता होइत।

परिवारक बेर-बेरक दबाव मे आबि ओ बिवाह सेहो कयलक। अलग एकटा छोट सन कोठली भाड़ा पर ताकि हमर खर्चाक इन्तजाम करैत रहल। हमरा अस्पतालक दाईक ट्रेनिंग दिया स्वावलम्बी बनेलक। मनोजक पढ़ाईक व्यवस्था कयलक। मनोजक नामे एकटा खोला-बारी' कीनने छै। अहू घरक भाड़ा वैह द' रहल अछि। ई सब ओ अपन गलतीक पश्चाताप मे क' रहल अछि। ओ चाहितय त' ओहू समय मे चुपचाप हमरा सँ मुक्ति पाबि सकैत छल। मुदा से नहिं कयलक, ई हम ओकर उदारता बुझैत छियै। आ सत्त पूछी त' आब जँ चारि दिन ओ नहि अबैत अछि त' अनहोनीक आशंका सँ मोन कोनादन करय लगैत अछि। होइत अछि कहुँ हमरे ग्रह त' ने लपेटि लेलकै। ओहि व्यक्ति के हम कोन मुँहे कहियौ जे तोरा सँ हमरा कोनो सरोकार नहि अछि?

मनोजक मायक प्रश्नक उत्तर ओहु दिन हमरा ल'ग नहि छल। तखन आइ हम मनोजक 'अंतिम वाक्य' ओकरा कोना बुझबियौ, जखन कि मनोजक साँसक संग ओकर अन्तिम आस सेहो चल गेल छलै। ❑

पेन फ्रेंड

प्रताप बाबू बड़ अद्विग्न छलाह। कतबो चेष्टा करथि स्वयं के संयमित रखवाक, मुदा सफल नहिं भ' पाबि रहल छलाह। प्रत्येक आहट चौंका दैत छलैन्ह। प्रत्येक आवाज पर खौंझा उठैत छलाह। एकर परिणाम विशेष रूपे ँ भोगि रहल छलीह नीलू। प्रताप नीलू पर खौंझाहटि उतारि लैत छलाह। नीलू–हुनक पत्नी, खौंझाहटिक कारण बूझि रहल छलीह। ओ त' स्वयं एही समस्या सँ चिन्तित छलीह। दूनू गोटे एके अर्न्तद्वन्द्व मे ओझरायल। दूनू कोनो सहज बाट ताकय मे व्यस्त, अपना-अपना रूपे ँ। हुनका लोकनि के देखला स' लगैत छलै जेना सब तर्क बुद्धि हेरा गेल होइन्ह।

काल्हि प्रताप बाबूक एकमात्र छोट भाई आ नीलूक दुलरूआ दियरक अयवाक दिन छलै। काल्हि बीतल। आइयो उम्हरका अंतिम ट्रेन अयवाक समय बीत गेलै। क्षीण आशाक संग स्टेशन टेलीफोन कयने छलाह। निराशाजनक उत्तर– ट्रेन निर्धारित समय सँ आयल। विचारधारा कोनो निश्चित रूप नहिं ल' पाबि रहल छलैन्ह। एहन समय मे अधलाहे बात बेशी मोन मे अबैत छै। खन होइन्ह जे ऑफिस सँ छुट्टी नहि भेटल हेतैन्ह। टेलीफोन क' सकैत छलाह। तुरत दोसर विचार जोरगर भ' उठैन्ह –कोनो दुर्घटना मे त' ने पड़ि गेलाह या अस्वस्थ्य त' ने भ' गेलाह? फेर होइन्ह जे जानि-बूझि क' निर्धारित दिन बिता क' आवय चाहैत छथि।

जखन सामने मे टेबुल पर राखल चिट्ठी आ फोटो पर दृष्टि जाइन्ह त' अंतिम विचार बेशी युक्ति-संगत बुझना जाइन्ह। निश्चित दिन मे प्रभात के नहिं पहुँचला सँ दूनू बेगती चिन्तित रहबे करथि, प्रभातक नामे अनचिन्हार हस्तलिपि मे अनापेक्षित नाम सँ लिखल पता आर प्रेषक के नाम देखि किछु उत्सुकतावश, किछु अंदेशा सँ लिफाफ खोलने रहथि। तकर बाद त' उत्सुकता संदेह क रूप ल' लेलक। उषा नामक लड़की चिट्ठीक संग फोटो पठेने छलै। दूनू गोटा बेरा-बेरी क' चिट्ठी पढ़लैन्ह। चिट्ठी बड्ड संक्षिप्त छल –

प्रिय प्रभात जी,

बहुत दिन सँ अहाँक पत्रक प्रतीक्षा मे छलहुँ। पत्र पाबि कतेक आनन्दित छी, ई व्यक्त नहिं कयल जा सकैछ। एकहि संगे अपन एतेक रास प्रशंसा पढ़ि बहुत किछु सोचक आर लिखक सामग्री भेट गेल। अहाँक आग्रह पर अपन फोटो पठा रहल छी। आशा अछि अहूँ अपन फोटो पठायब। हमर मित्र-मंडली मे अहाँ खूब चर्चित भ' गेल छी। सब अहाँ सँ भेंट करय लेल उत्सुक छथि। विश्वास अछि हमरा लोकनिक पत्राचार चालू रहत आ दिल्ली अयला पर अहाँ सँ अवश्य भेंट हयत। पहिनहिं सँ कहि क' रखैत छी, एतय आयब त' ठहरय पड़त हमरे ओतय। पटना प्रवासक विचार कतेक दिनक छै? अगिला पत्रक पता कतय रहत?

–उषा

नीलू फोटो के ध्यान सँ देखलैन्ह। नाक-नक्शा बेजाय नहिं। मुँहक भाव चुलबुलिया। सामने मे टाँगल प्रभातक फोटो सँ मिलओलैन्ह, जोड़ी बेजाय नहिं हेतै। कहुँ तईं त' प्रभात एतयक पता नहिं देलखिन्ह? मुदा परसू जे राधेबाबू के बजाओल गेल छैन्ह, हुनका की जबाव देल जयतैन्ह? राधे बाबू –संभ्रान्त प्रतिष्ठित व्यक्ति –अपन एक परिचितक माध्यम सँ प्रभातक संग अपन कन्याक बिवाहक प्रस्ताव रखने छलाह। प्रताप बाबू के कथा पसन्द छलैन्ह। अपन स्वीकृति-भाव बुझा देने छलखिन्ह। तथापि प्रभात नव-युग, नव-विचारक लोक, हुनका अयला पर दूनू गोटेक उपस्थिति मे सब गप्प होय सैह उचित बुझना गेल छलैन्ह। ते ँ प्रभात आ राधेबाबू के सब किछु स्पष्ट क' दिन निर्धारित कयने छलाह।

अर्न्तद्वन्द प्रताप बाबू के भसिया क' ल' गेलैन्ह अतीत मे। पाँच भाई-बहीनक बीच प्रताप सबसँ जेठ त' प्रभात सब सँ छोट। पिता गत भेलखिन्ह त' प्रभात मैट्रिक मे छलाह। परिवारक दायित्व भेने पिताक स्थान पर अनुकम्पा मे प्रताप के नोकरी भेटल रहैन्ह। दू वर्ष पूर्व दोसर पुतहुक मुँह देखबाक, अभिलाषा मोन मे नेनहि माय विदा भ' गेलखिन्ह।

प्रभात के पिताक अभावक कहियो प्रताप अनुभव नहिं होवय देलखिन्ह। प्रभातक निर्णय छलै - नीक नोकरी सँ पूर्व विवाह नहिं करब। आब बरख दिन सँ नोकरी क' रहल अछि। बीच मे कहियो अनावश्यक हस्तक्षेप क' ओकरा मानसिक कष्ट देवय नहि चाहलैन्ह। आब अपन परिवारक गुजर क' सकताह एतबा पाई भेट जाइत छैन्ह। तेँ प्रतापबाबू गप्प आगू बढ़ेने छलखिन्ह। प्रभातक सहमति भेटल रहैन्ह। तखन पुन: ई व्यवहार आ व्यवधान कियाक?

मोहभंगक स्थिति देखि नीलू के किछु नहिं फुरा रहल छलैन्ह। कनेक धखाइते पति ल'ग प्रस्ताव रखलैन्ह – राधेबाबू के फोन क' दियौन्ह जे कोनो कारणवश प्रभात नई आबि सकलाह। प्रताप बाबूक उत्तर खौंझायल छलैन्ह – एखन ओ गाम मे हेताह ओतय फोन नहिं छैन्ह।

त' तार क' दियौन्ह। काल्हि कोनो बेर मे अवस्से भेट जयतैन्ह। तावत जँ प्रभात आबि जाइत छथि त' हुनको विचार बूझि जेना जे हयत से करब।

प्रताप बाबू सेहो एहने सन सोचि रहल छलाह। मौनवत कुरता पहीरि चप्पल मे पयर घुसिया विदा भेलाह। राधेबाबूक अयवाक दिन भोरे पहुँचल प्रभात। आशाक विपरीत डेरा मे पहिने सँ बेशी शान्ति, नीरवता छलै आ भैया-भौजीक उतरल, झमायल सन मुखमंडल। आन बेर जकाँ भैया प्रश्नक लड़ी नहिं लगओलखिन्ह आ ने भौजीक कोनो मसखरी सुनवा मे अयलै। प्रभातक लेल अपना घरक ई वातावरण एकदम नव छलै। कनेक काल लेल भेल रहै जे कोनो अनचिनहार घर मे त' ने आबि गेल छी? ओ त' घर मे नव उल्लास, नव चुहचुही देखक कल्पना करैत आयल छल – भैया के यथास्थान सामान सब रखवा मे व्यस्त हेवाक त' भौजी के पाहुनक भोजन-व्यवस्था मे व्यस्त हेवाक। मोन पड़लै भौजीक गृह-सजावटक योजना, नव सदस्याक स्वागतक योजना आ संगे दूनू भाई पर गृह-काज छोड़ि बाहर घुमवाक योजना। अपन एकाकीपन सँ हुनका बड्ड कष्ट छलैन्ह।

प्रभातक बिवाहक संबंध मे ओकर भैया कम खियाली पोलाव नहिं पकबैत छलखिन्ह। मूड मे अयला पर बरियातीक लिस्ट बनायब, कोना पाग आ माला पहीरि अकिर क' चलब, फोटो खिचयवाक हुनक मुद्रा सब पर तीनू लोट-पोट होइत रहैत छल। ताहि भैया-भौजी ल'ग कोनो चर्चा, कोनो प्रतिक्रिया नहिं देखि ओकरा आश्चर्य भ' रहल छलै।

छुट्टीक दिन रहक कारण ककरो ऑफिसक हड़बड़ी नहिं छलै तथापि भोजन कांड सवेर-सकाल समाप्त भ' गेलै। दूनू भाई मे तखनहुँ कोनो विशेष गप्प नहिं भेलै। प्रतापक मोन के त' अनेक विचार मथि रहल छलैन्ह। विचारि रहल छलाह - प्रभात सँ कोन रूपे गप्प आरंभ कयल जाय। एहि संबंध मे प्रभात कहियो अपन कोनो विशेष रूचि प्रकट नहिं कयने छल। तेँ ओ राधेबाबूक कन्याक प्रति स्वीकारात्मक उत्तर देने छलखिन्ह। अप्रत्यक्ष रूपे बहुतो के एकर भनक भेट गेल छलै। जँ प्रभातक असहमति होयतै त' बहुतो के व्यंग्यपूर्ण हँसी आ व्यंग्य वाणक अवसर भेटि जयतैक। जँ प्रभात के लगाव छलै त' पहिनहिं स्पष्ट क' देने रहितै, ओ कहियो ओकरा पर कोनो प्रतिबंध नहिं लगओने छलखिन्ह। एहि संबंध मे स्वयं गप्प करब प्रताप के ठीक नहिं बुझयलैन्ह तेँ नीलू पर भार छोड़ि देलखिन्ह।

प्रभात चिन्तित, विश्रामक मुद्रा मे छल। नीलू अवसर देखि उषाक चिट्ठी संग फोटो ल' ओतय पहुचलीह। कहलखिन्ह – पहिने त' बिना अनुमतिक लिफाफ फाड़क लेल क्षमा माँगब, मुदा....। वाक्य पूर्ण होयबा स' पूर्वे प्रभात टोकि देलकैन्ह - भौजी! अहाँ सबक चुप्पी हमरा व्यथित कयने अछि आ आब ई औपचारिकता? हम बताह भ' जायब। हमरा पहिलका हँसैत-बजैत घर चाही। पुन: शान्त भावे बाजल – ककर आ केहन चिट्ठी? ओकरो मोन मे उहापोह चलि रहल छलै। नीलूक गंभीर उत्तर छलैं – उषाक। आब प्रभातक उत्सुकता जगलैक – कहिया आयल? प्रभात प्रसन्न भावे चिट्ठी पढ़ि, फोटो के ध्यान सँ देखलक आ सहज भावेँ दूनू के यत्नपूर्वक रखलक। नीलू ओकर प्रत्येक क्रिया-कलाप के ध्यान सँ देखि रहल छलि।

वातावरण के हल्लुक करवाक उद्देश्य सँ प्रभात हँसि क' भौजी के पुछलक – ई फोटो केहन लागल?

– बड़ दीब। अपना फोटो संग लगायब त' सुन्दरता बढ़ि जयतै।

– ओतयक भार त' अहाँ के देने छी।

– कियाक हँसी करैत छी? एक फोटो संग कैकटा फोटो लगायब? भीतरे-भीतर सब ठीक क' लेलहुँ आ ऊपर सँ..। आब प्रभात के बुझबा मे अयलै, अपन भैया-भौजीक गंभीर मुख-मुद्राक कारण। मोन के हल्लुक करैत बाजल – ओह, त' ई बात छै। ते ँ हमरा ने पहिलका दुलार भेटल, ने आशीष। भेट रहल अछि उपराग। जँ हमरा अपने ठीक करक रहैत त' अहाँके चिन्तामुक्त क' देने रहितहुँ। आइ तखन अयबे कियाक करितहुँ। आब नीलू हड़बड़ायल – गप्प के स्पष्ट करू। हमहूँ सब बहुत परेशानी अनुभव क' रहल छी।

– भौजी! अहीं लिखने छलहुँ अयबा लेल। राधेबाबू हमर इन्टरव्यू लेताह। अहाँ हमरा अपन होवयवला दियादनी सँ भेट करायब। एतय त' पासा उनटल अछि। ने ओ नगरी ने ओ ठाम। ने राधेबाबू ने राधे बाला।

– अहाँक राधा त' दिल्ली मे अहाँक पथ हेरि रहल छथि?

– के उषा? एहि घटना-क्रम सँ उषाक कोन संबंध? एही अर्थक अनर्थ क' दूनू गोटे गुम्मी लधने छी? जँ से रहैत त' अहाँसँ हम नुका पबितहुँ? ई एकटा नव बीमारी भेल अछि - पेन फ्रेन्ड बनेवाक। अहाँके ई बात लिखबाक इच्छा भेल छल फेर मोन मे आयल - नोन - मसाला लगा क' कहबा मे जे आनन्द हयत ओ सोझे-सोझे लिखबा मे नहिं। उषा सँ आइ तक भेट नहिं भेल अछि। ओहो हमर मात्र पेन-फ्रेन्ड छथि माने चिट्ठीक माध्यम सँ दोस्त। हमरासन ओकरा आरो अनेक पेन-फ्रेन्ड होयतैक।

नीलू के आर किछु सुनवाक धैर्य नहिं रहलैन्ह। समस्याक समाधान देखि प्रताप बाबूक कोठली दिस दौड़ गेली - शुभ-संवाद देवाक लेल। ❑

पुनरावृत्ति

व्यक्तित्व निर्माण मे किछु आनुवंशकी, किछु पारिवारिक परिवेश, किछु अन्य तरहक वातावरण या घटना, किछु अपन प्रयास आदि काज करैत छैक। सुधा अपन व्यक्तित्व-निर्माण मे कोन तथ्य के बेसी प्रभावी मानय ई ओ कहियो निश्चय नहि क' पओलक। पढ़वा-लिखवा मे ओकरा मायक अभिरूचि छलैक मुदा परिस्थिति संग नहिं देलकै। मातृक परिवार आर्थिक रूपे ँ बहुत सुदृढ़ नहिं छलै। समयक अनुरूप ओकर नाना मात्र बारह बरखक अवस्था मे कन्यादान क' धर्मक भागी बनल छलाह। पैतृक परिवार खेतीक बल पर सुदृढ़ छलै त' उच्च शिक्षा लेल सुदृढ़ अभिरूचि आ ज्ञान नहिं।

सुधाक जीवन मे प्राय: सब पक्ष विपरीत छलै तथापि उच्च शिक्षा पाबि अपना पयर पर ठार्ह हेवाक अदम्य लालसा आ दृढ़ इच्छा-शक्ति ओकरा संग छलै। ओही बल पर सब तरहक झंझावात के सहैत ओ जाही दिस प्रयास केलक सर्वोच्च रहल। स्कूल-कॉलेज मे नृत्य होइ या नाटक, डिबेट होइ या क्लासक परीक्षा ओकर स्थान उपर रहैत छलै। सुधाक प्रत्येक सफलता पर ओकरा मायक आनन्दक नोर झहरै आ सुधा के कोर्ह मे साटि लैत छल आ कारी ठोप लगा दैक।

ओहि समय मे ऑनर्सक परीक्षा हो या एम.ए. के, बैच मे मात्र एकटा फस्ट क्लास होइत छलै। अधिकांशत:

एम.ए. मे प्रथम स्थान प्राप्त कयनिहार क अध्यापन काज विश्वविद्यालय दिस सँ कोनो महाविद्यालय मे हेवाक संभावना रहैत छलै। तखन औपचारिकताक निर्वाह त' करैये पड़ैत छलै। सुधा सेहो अपन लक्ष्य पूरा क' महाविद्यालय मे लेक्चररक पद पाबि गेल छल। तकर बाद त' आश्वस्त भ' ओ पी.एच.डी. सेहो कयने छलि।

नियमानुसार महाविद्यालय मे चारि घंटा रहब अनिवार्य छलै। दू घंटीक क्लासक बाद ओकर एक घंटी खाली छलै आ पुनः एक घंटी क्लास। ओकर कक्षा मे छात्राक उपस्थिति अपेक्षा स' अधिक रहैत छलै। सब निःशब्द भ' ओकर व्याख्यान सुनैत आ लिखैत रहैत छल।

कॉलेजक चारि घंटाक ड्यूटी पूरै पर छलै। क्लास समाप्त भेलाक बाद स्टाफ रूम मे जेवाक ओकर इच्छा नहि भेलै। ओतय गेला पर सबहक व्यंग्यात्मक दृष्टि ओकरे पर आबि अटकि जइतैक। ओकरा ल'ग मधुर खुअयवाक प्रस्ताव राखल जइतैक संग लागल अनेक तरहक उनटा-पुनटा सवाल। तखन स्टाफ रूम मे टटका चर्चाक विषय रहै – डा० सुधा आनन्दक नव-जीवन संगी भेल छथिन्ह शहरक नामी-गिरामी सिन्हा साहब जिनकर अपना पत्नी सँ हालहि मे तलाक भेल छलैन्ह।

ओ एक नजरि अपन हाथ-घड़ी पर देलक आ कॉलेज-गेट सँ बाहर आबि गेल। बाहर दू-चारिटा रिक्शा छलै मुदा ओकरा ल' जयबा लेल कियो तैयार नहिं भेलै। संभवतः ओकरा सब के बुझल छलै जे हिनकर डेरा ल'गे मे छैन्ह। बेसी भाड़ा भेटक आस नहिं। रौदक प्रचंडता के सहैत ओ आगू बढ़ि गेल।

किछुए दूर गेला पर ओकरा अपन मकान झलकय लागल छलै। कनेक आर आगू बढ़ला पर देखलक – दगधल रौद ओकर पितरिया नेम-प्लेट पर आबि छिड़िया गेल रहै आ आँखि के चोन्हिया रहल छलै, तैयो अभ्यासवश ओ पढ़ि गेल – डा० सुधा आनन्द, एम.ए. गोल्ड मेडलिस्ट। अनायासे ओकरा हँसि लागि गेलै। 'गोल्ड मेडलिस्ट' सँ ओ अपन विद्वता क परिचय ककरा द' रहल छल? अनिच्छा रहितहुँ ओहि पितरिया तख्ती के ओ लगवेने अछि। ओकर गृह-प्रवेश मे माय बनवा क' नेने आयल रहथिन्ह। ओहि तख्ती मे ओकरा मायक स्नेह, स्वाभिमान आ चिर प्रतीक्षित पूरित आस देखाइत छलै। पूजाक बाद जखन घर खाली भेल रहै त' माय बुझेवाक प्रयास केने रहथिन्ह – अपना नाम संगे 'पाठक' जोड़ि लिय', चूड़ी-सिन्दूर पहिरू। आखिर व्याहता त' अहाँ हुनके छियैन्ह। एसगर एहन पहाड़ सन जिनगी कोना काटब? सुधाक प्रश्नवाचक दृष्टि माय पर छलै। माय पुनः कहने रहथिन्ह – हमरा माथ पर हमर सहृदय पिताक हाथ छल। अहाँ संगे त' सेहो नहिं अछि।

सुधा आश्चर्य सँ माय दिस तकने छलि - ई मायक कोन रूप छी? सब सँ लड़ि क' हमरा पढ़ाई मे सहयोग देनिहारि, जकरा त्यागि क' ओकर पति दूटा आर विवाह केने रहथिन्ह। ओहू मे दोसर पत्नी डूबि क' मुइली या डुबा देल गेली, ई कियो नहि जानि सकल। तेसर आब पतिक बुढ़ापा आ अस्वस्थताक लाभ उठा हुनका पर लगाम कसने अछि। ओकरा माय के दुराचारिणी कहि त्यागि देल गेलै त' ओ नैहर मे आबि शरण नेने छलि।

सुधा अपना विचार के झटका द' अनायासे फेर नेम-प्लेट पर आबि अटकि गेल। बहुत मानसिक उहापोहक बाद ओ अपना नाम संगे 'आनन्द' जोड़ने छलि। एहू लेल ओकरा कम लिखा-पढ़ी नहिं करय पड़ल छलै। नेना सँ भोगैत मानसिक कष्ट आ भीतरक हीन-भावना के ओ बिसरय चाहैत छल। आब ओ अपना आ अपन माय लेल मात्र आनन्द, सुख आ प्रकाश-पुँज बीछय चाहैत छल। बाटक कोनो आँकर दुआरे अटकब ओकरा नीक नहिं लगैत छलै। कॉलेजक अध्ययन समाप्त भेलाक बाद ओकर माय बहुत जोर देने छलै जे ओ पति आ सासुर-परिवार सँ समझौता क' लैक।

सुधा पी.एच.डी. लेल रजिस्ट्रेशन करा नेने छल आ ओकर तथाकथित पति शिक्षा सँ कोसो दूर कहुना क' मैट्रिक पास केला क बाद पढ़ाई त्यागि देने छलाह। गाम पर खेत–खरिहान, हवेली–दलान, माल–जाल, ज'न–बनिहार, पचीसी–शतरंज आ ताश क दुनियाँ हुनका विशेष आकर्षित केने छलैन्ह। परिवेश क अनुरूप पुरुषोचित अहंकार सेहो कम नहीं छलैन्ह। सुधाक एतेक पढ़व आ नोकरी करब हुनका हिसाबे निरर्थक छलैन्ह। दू भिन्न विचार, दू भिन्न परिवेश आ दू अहंकार क कहियो मेल नहिं भ' सकैत छै, ई सुधा बुझैत छल। एहना मे मायक सामंजस्य वला इच्छाक पूर्त्ति करबा मे ओ अपना के असमर्थ पओने छलि।

किछु सालक बाद ओकर पति दोसर विवाह क' नेने छलखिन्ह त' ओ अपना के स्वतंत्र अनुभव केने छलि। सुधा मकानक फाटक खोलि भीतर प्रवेश कयलक त' क्यारीक फूल आ घासक सफाई, देखि मोन संतुष्ट भेलै जे माली अपन काजक' गेल छल। केवाड़ खोलि घर मे पैसल त' गृहकार्य मे मार्याक कुशलता पर आनन्दित भेल। घरक पाछू एकटा कोठली मार्या के रहवा लेल देने छलै। जखन आवश्यकता होई पाछूक खिड़की सँ एक बेर बजओला पर ओ आबि जाइत छलै। साँझ क' ओकर दूनू छोट बच्चा सँ गप–सप करैत ओकरा नीक लगैत छलै।

थकानक कारणे ँ ओकरा किछु खयवाक इच्छा नहिं भेलै। मात्र एक गिलास ठंढ़ा पानि पीबि सोफा मे धँसि गेल। टेबुल पर किछु नव पत्रिका सैंतल बुझेलै, मुदा पढ़वाक इच्छा नहिं भेलै। फेर वएह बितलाहा बात सब मोन परि गेलै। नोकरी लगलाक बाद बहुतो प्राध्यापक कोनो–ने–कोनो बहन्ना बना ओकरा ल'ग अयवाक प्रयास करैत रहैत छलखिन्ह। ओ सबके गंभीरतापूर्वक टारि दैत छल। वर्माक चाटुकारिता त' ओकरा आरम्भहि सँ हास्यास्पद लगैत छलै तथापि भोर–साँझ चुट्टी जकाँ ससरैत वर्मा ओकर भेटक' जाइत छलै। फेर शुरू भेलै साँझक चाय–नाश्ता। किछु दिन बाद ओकरा अनुभव भेलै जेना वर्मा संगे चाय पीवाक ओ अभ्यस्त भेल जा रहल छलि। ओकर अनुपस्थित हेवाक ओ कारण ताकय लगैत छलि।

वर्मा के सुधा अपना विषय मे सब किछु यथावत कहने छलै, तथापि वर्मा जखन विवाहक प्रस्ताव रखलकै त' ओकरा नीके लागल रहै। एहि प्रस्तावक समर्थन ने त' सुधाक माय केने छलखिन्ह आर नहिं त' वर्माक परिवार। वर्माक माय त' विरोध मे पेटकुनियाँ द' देने रहथि, तथापि रजिस्ट्री–विवाह क' वर्मा सुधाक डेरा पर आबि गेल छल।

प्राय: एके साल बाद सुधाक कर्त्तव्य सूची आ वर्माक अधिकारक सूचि नमहर होइत गेल। वर्माक अनुसारे सुधा के 'आनन्द' हटा क' नामक आगू वर्मा जोड़ि लेवाक चाहैत छलै, बैंक मे संयुक्त खाता आवश्यक छलै, बचत–पत्र या जीवन–बीमाक कागज पर उत्तराधिकारी मे दूनू के एक दोसरक नाम देवाक चाहैत छलै। आब वर्मा के सुधा मायक एनाइ पसिन्न नहिं पड़ैत छलैन्ह आ नहिं पसिन्न छलैन्ह सुधाक कोनो परिचित पुरुषक डेरा पर एनाइ। सुधाक निर्देशन मे काज केनहार शोध–छात्र के निरर्थक खिसिया देने छलखिन्ह। सुधा के अनुभव भेल रहै जे जाहि वातावरण आर भाव के ओ पसिन्न नहिं करैत छल वएह वातावरण ओकरा चारू कात पसरि रहल छलै।

ओ अपना के कोनो परिधि मे बान्ह' नहिं चाहैत छलि। ओ त' चाहैत छलि जे दूनू दिस सँ सहज प्रेम, अधिकार आ कर्त्तव्यक भाव होइ। विवाह सँ पूर्व आ विवाहक किछु दिन बाद तीनू भावक बड्ड बेशी आदान–प्रदान भेल छलै। मुदा तकर बाद ओकरा मात्र कर्त्तव्य–बोध कराओल गेलै। ओकर अधिकार, भावना, सुख–दुख नगण्य भ' गेल रहै। समाजक विद्रूप व्यंग्य आ कुदृष्टि ओ भोगि चुकल छल, तकर पुनरावृत्ति ओकरा विचलित क' दैत छलै। वर्मा के बुझेवाक प्रयास ओ केने छलि, मुदा सब निरर्थक। तखन सुधा क मोन सेहो विरोध क' देने छलै।

कहुना क' तनावक बीच दू बरख ससरल त' दूनू क मोन मुक्ति लेल छटपटाय लागल रहै। वर्मा एक दिन हल्ला-हंगामा क' माय-बापक डेरा पर चल गेल छल आ बाद मे उच्च शिक्षाक नाम पर विदेश जयवाक जोगाड़ क' नेने छल। सुधा एक तरहे निश्चिन्त भ' गेल छल। सम्पर्क जोड़वाक कोनो प्रयास नहिं केलक। सुधाक भावना जोर पकड़ि रहल छलै जे पुरुष अशिक्षित हो या अल्प शिक्षित या उच्च शिक्षित ओ पत्नी के खुट्टा सँ बान्हल गायक रूप मे देख' आ राख' चाहैत अछि।

कतेको साल एकाकी जीवन बितेलाक बाद सिन्हा ओकरा सम्पर्क मे आयल छलाह। बेशी काल सामाजिक आ सांस्कृतिक कार्यक्रम सब मे सिन्हा सँ भेट होव' लागल छलै। अवसर भेटला पर सिन्हा ओकर व्यक्तित्व, बुद्धि-प्रखरता, भाषण क्षमता आदिक प्रशंसा करैत नहिं अघाइत छलाह। कहियो काल सुधाक डेरा पर आबि जाइत छलखिन्ह आ कोनो विशेष साहित्यिक, सामाजिक या राजनैकि विषय पर बड़ी काल धरि चर्चा चलैत रहैत छलै। एमहर प्राय: छओ मास सँ आवाजाही बढ़ि गेल छलैन्ह आ जखन-तखन विवाहक प्रसंग पर सोचवा लेल सुधा के बाध्य क' दैत छलखिन्ह। पत्नी सँ तलाक क कारण बेमेल विवाह, बेमेल विचार कहने रहथिन्ह। बहुत सोचला पर सुधा अपन पारिवारिक जीवन लेल एक आर प्रयास करक निश्चय क' सिन्हा संगे अपन जीवन जोड़ि लेलक।

सुधा के फाटक खुजवाक आ बन्द हेवाक शब्द सुनेलै। केवाड़ खोलि देखलक - लेटर बॉक्स मे किछु लिफाफ छलै। चिट्ठी सब निकालि क' देखलक - एकटा लिफाफ पर ओकर पिताक लिखावट छलै। लिखावट के ओ नीक जकाँ चीन्हैत छलै। की लिखने हेथिन्ह तकरो ओकरा आभास छलै। अध्यापन शुरू केलाक बाद यदा-कदा ओकरा उपदेश आ धमकी दैत रहैत छलखिन्ह। ओकरा हँसि लागि गेलै - बगुला माछ नहिं खेवाक उपदेश दैत छै। पत्र के पढ़ि ओ किताबक त'र दबा देलक जेना प्रतिरोधी के पाथर त'र दबा निश्चिन्त भ' गेल हो।

पत्र में पिता अपना विचारक पुनरावृत्ति केने छलखिन्ह। सुधाक पुर्नविवाह सँ हुनका मानसिक कष्ट भेल छलैन्ह, सामाजिक प्रतिष्ठा के धक्का लागल छलैन्ह। सुधा के मोन परलै नेनावस्थाक किछु घटना, जे एखनो ओकरा विचलित क' दैत छलै। सुधा प्राय: छओ या सात बरखक रहल हयत। ओकर पिता गर्वपूर्वक दलान पर किछु गोटे के सुना रहल छलखिन्ह - हमर परिवार क पाँजि, मूल त' तेहने अछि जे बड़का-बड़का पाईवला आ परोपट्टाक नामी गिरामी सब एहि परिवार मे वैवाहिक संबंध जोड़वा लेल इच्छुक रहैत छलाह। हमर बाबाक चारि विवाह, फलाँ ठाम... फलाँ ठाम, हमर पिताक तीन विवाह फलाँ-फलाँ....ठाम।

सुधा अपन बाल-सुलभ प्रश्न केने छलै - बाबू यौ! हमरा कैकटा बाबी छलीह? भुलिया के त' एकेटा बाबी छथिन्ह। उत्तर छलैन्ह — तोरा तीनटा बाबी छलखुन्ह। सुधाक दोसर प्रश्न भेल छलै - आ बाबा कैकटा छलाह? प्रत्युत्तर मे सुधा गाल पर पाँचो आंगुर उखड़ि गेल छलै आ भेल रहै ओकरा मायक एक ढ़ाकी गंजन - जखन संस्कारहीन खानदान मे विवाह कयलहुँ तखन धीया-पुताक संस्कार नष्ट हयब स्वाभाविक। कतेक बेर मना कयल जे बेटी के दलान पर नहिं आबय दियौ, आब पैघ भेल, मुदा हमर के सुनत? बाप मैट्रिक तक पढ़ा क' अक्षर कट्टू डाइन बना देने छैन्ह त' फुलि क' कुप्पा भेल रहैत छथि। जे बड्ड काबिल से तीन बेर क' ......आदि-आदि।

सुधा कनैत आंगन गेल रहय त' माय कोरह मे सटा शान्त केने छलै मुदा मायक अपना आँखि सँ नीर झहर' लागल छलै। एहि तरहक गंजनक ओ अभ्यस्त भ' गेल छलि।

सुधाक पिता ओकर विवाह मात्र बारह बरखक अवस्था मे, सुधाक मायक विरोधक उपरान्तहु, एक सम्पन्न

परिवारक लड़का संग करा देने छलखिन्ह। शिक्षाक अभाव आ पाईक अधिकताक कारण ओ लड़का अनेको दुर्गण पोसने छल। तकरा सुधाक पिता पुरुषोचित गुणक संज्ञा देने छलखिन्ह। सासुर स' सुधाक पढ़ाई बन्द क' देवाक आदेश आयल छलै कारण ब'र के एहि दिस अपना कोनो अभिरूचि नहिं छलैन्ह। नियमानुसार कनियाँक शिक्षा ब'र सँ बेशी नहिं हेवाक चाहैत छलै।

पिता स्कूल जायब बन्द करा देलखिन्ह। माय नेहोरा क' गामे पर मास्टरक व्यवस्था करा देने रहैक, एहि आशा मे जे कम-सँ-कम बेटी दुरागमन सँ पहिने, प्राइवेट सँ सही, मैट्रिक त' क' लियै। मास्टर राखब ओकरा माय लेल काल भ' गेलै। मास्टर संगे अवैध संबंधक लांछना लगा मारल पीटल गेलै आ एक दिन घर सँ निकालि सेहो देल गेल।

अपन शिक्षक पिता ल'ग ओकरा माय के शरण भेटल छलै। पिता के पहिनहिं सँ आय सँ अधिक खर्च रहैन्ह तथापि प्रभुक इच्छा मानि बेटी आ नातिन के समेट लेलैन्ह।

किछु दिन बाद पिताक सलाह पर ओ सब शोक-संताप बिसरि टीचर्स ट्रेनिंग क' नेने छलि। ओकरा माय के ओकर नानाक मानसिक आ आर्थिक सहयोग प्राप्त छलै।

जखन सुधा-माय के मधुबनी में शिक्षिका मे बहालीक चिट्ठी भेटल रहै त' सुधाक नाना सत्यनारायण भगवानक पूजा केने छलखिन्ह। मोन के आश्वस्त केने छलाह जे हुनकर बेटी अपन बेटीक सेहो पालन-पोषण क' लेत तथापि आजीवन अपन आशीर्वादक हाथ माथ पर सँ हटय नहिं देलखिन्ह।

सुधाक माय स्वयं अभाव सँ लड़ल मुदा सुधा के आर्थिक अभावक अनुभव नहि होव' देलकै। सुधाक प्रत्येक सफलता आ पुरस्कार मे ओकरा अपन संघर्षक सफलता बुझाइत छलै। जहिया सुधा के महाविद्यालय मे अध्यापन काज भेटल रहै ओकरा माय के अपन दिन-रातिक मेहनति, संघर्ष आ अपन जीवन सार्थक हेवाक गर्व भेल रहै।

वर्मा सँ सुधाक विवाह ओकरा माय के नीक नहिं लागल छलै। जखन माय के अयला सँ सुधाक वैवाहिक जीवन मे अशान्ति क अनुभव भेल रहै त' ओकर माय सुधा ओत' गेनाइ बन्द क' देने छलै। सुधा बेशी काल जा भेट क' अबैत छलि।

सुधा अपना के वर्माक अनुकूल बनयवाक प्रयास केने छलि मुदा ओकर मोन सब तरहक अधीनता आ मात्र कर्त्तव्यक परिधि मे अपना के नहिं बान्हि पबैत छल। एके सालक संगति मे वर्माक अहंकार चरम पर आबि गेल छलै। ओ कखनो, कोनो बातक नकारात्मक उत्तर सुधा सँ नहिं सुनय चाहैत छल। यैह दूनूक संबंध विच्छेदक सब स' पैध कारण छलै। कतेको वर्ष एसगर रहलाक बाद ओकर एकाकी जीवन मे सिन्हाक प्रवेश भेल छलै। कियो हितैषी सुधाक पिता के समाद देने हेतैन्ह तईं एहन लोहछल पत्र आयल छलै। बहुत संयमित भाषा मे पिताक पत्रक उत्तर देवाक ओ सोचलक मुदा जखन लिख' लागल त' अचेतन रूपे ँ भावना पर नियंत्रण नहिं रहलै। लिखलक –

आदरणीय बाबू,

सादर प्रणाम।

अहाँक पत्र पाबि अत्यधिक प्रसन्नता भेल। हमरा माय के अहाँक जीवन मे आ परिवार मे कोनो स्थान नहिं भेटलै मुदा हमरा लेल अहाँक जीवन मे आ परिवार मे स्थान बनल अछि। इहो नीक लागल जे हमर कोनो काज अहाँक जीवन आ परिवार के प्रभावित करैत अछि। अहाँक सामाजिक प्रतिष्ठा के ठेस लागल, अहाँके मानसिक कष्ट भेल।

मात्र बारह बरखक अवस्था मे अहाँ हमरा मायक संगे निष्कासित केने छलहुँ। हमर माय एखन तक सिन्दूर-चूड़ी पहिरि विधवाक जीवन जी रहल अछि, ओ अहाँक प्रतिष्ठा के बढ़ा रहल अछि? हमरा विवाहिता भैयोक' सिन्दूर-चूड़ीक इच्छा नहिं होइत अछि, कारण हम बेर-बेर विधवा नहिं होव' चाहैत छी।

बाबू! हम कोनो नव काज त' नहिं क' रहल छी? लोक कहैत छै नेना पर वातावरण आ आनुवंशिकता क बड्ड प्रभाव पड़ैत छै। संभवतः एही दुआरे हम अहाँक वंश-परम्पराक पुनरावृत्ति क' रहल छी। भविष्य मे हम अहाँक भावना आ प्रतिष्ठाक ध्यान राखब।

(जँ मानी त')
अहाँक बेटी
सुधा

घंटीक आवाज सुनि सुधा केवाड़ खोललक त' मार्या अपन दूनू बच्चाक संग प्रवेश करैत बाजल - ई की दीदी, अहाँ एखन तक कॉलेज वला कपड़ा नहिं बदलने छी? भरिसक खयबो नहिं केलहुँ? मात्र टेबुल-लैम्प जरेने छी? बाहर सौंसे अन्हार भ' गेल छै। होइत छल अहाँ आब घंटी बजायब, आब घंटी बजायब। दूनू बच्चा जिद कयलक त' हमहीं घंटी बजेलहुँ। सुधाक थाकल स्वर छलै – हँ मार्या, चारू दीस बहुत अन्हार भ' गेल छै। एक कप चाय बना दे। ❑

समस्या अपन अपन

चौरसिया घड़ी दिस देखलक। बाबू लोकनि कें आफिस स' घुमवाक समय भ' गेल छलन्हि। हुनका सभ लेल पान 'लाख दुखक एक दवाइ' भ' गेल छलन्हि। ओ सभ पानक दोकान पर निश्चित बिलमैत छलाह। चौरसिया अपन पान-दोकानक तीन दिस स' अयना लगेने छल, जे दोकान कें निखारि देने छलै। गाहक सब प्रत्येक कोण स' अपना के निहारैत रहैत छलाह। ओ अयना पर पानिक छिटका द' ओकरा चमका लेलक। ''चौरसिया-पान-दोकान' वला तख्ती के सेहो पोछि यथास्थान राखि देलक। ओना त' गाहक भरि दिन अबैत जाइत रहैत छलै मुदा संझुका नियमित गाहकक ओकरो प्रतीक्षा रहैत छलैक। ओ किनको दिस प्रत्यक्ष रूपें तकैत नहि छल मुदा अपन जुलफी के झटका द' प्रत्येक आगन्तुक कें अयना मे देखि लैत छल। भांति-भांति क गाहक आ भांति-भांतिक विचार। कियो पानक पीक कें घोंटय वला कियो बीच सड़क पर पिच्च-पिच्च क' पीक फेकैत नाना विध स' नाना समस्याक समाधान करयवला, कियो घर स' कोल्हुआरे नीक क विचार राखयवला आ घरक समस्या स' कनछी कटैत एके बेर भोजन बेर मे थाकल-ठेहियाल होयबाक नाटक करयवला गाहक रहैत छलै। चौरसियाक कान सबटा सुनैत रहैत छलै मुदा हाथ आ आंखि व्यस्त रहैत छलै - पान, कथ, जर्दा, चून, मसालाक समन्वय बनयबा मे।

दू दिनक बाद ओ नारायण बाबू के अबैत देखलक त' चौरसियाक आंखि मे चमक आबि गेलै। कारण-गाहक छुटलाह अछि नहि से भरोस आ दोसर किछु नव-चहटगर गप्प अवश्य सुनेताह। हुनकर गप्प कहवाक ढंग ओकरा बड्ड रोचक लगैत छलै। कनेक कालक बाद अयना मे शिव बाबूक छवि प्रतिबिम्बित भेल। गाहकक आगमन प्रसन्नता देलकै मुदा तत्काल आशंका घेरि लेलकै। दुनू आगन्तुक संभवतः संबंधी छलाह। दुनू गोटे कें अपन-अपन समस्या घेरने छलन्हि। नारायण बाबू बेटी बियाह लेल व्यग्र छलाह त' शिव बाबू बालकक बियाह लेल। दुनू गोटे अपन-अपन समस्याक पुष्टि

मे ततेक तार्किक भ' जाइत छलाह जे वातावरण के कटु बना दैत छलै आ से चौरसिया के कनेको पसिन्न नहि छलै। ओ त' गुलाब-जलक फुहार जकाँ ओतयक वातावरण के प्रफुल्लित, सुगंधित शीतल हेबाक कामना करैत छल जे ओकरा दोकान लेल सेहो शुभ हेतै।

नारायण आ शिवक दृष्टि-समागम भेल। उद्‌गार प्रकट भेल - अहा हा, शिव बाबू?

वाह-वाह अपूर्व, नारायण बाबू! आइ हमर यात्रा बहुत शुभ अछि। अपनेक दर्शन भेल।

चौरसिया अयना मे तकलक - दूनू गोटे विमुग्ध भेल हाथ जोड़ने एक दोसर दिस ताकि रहल छलाह जेना आंखि पुछि रहल हो - समस्याक समाधान भ' गेल की? मुदा प्रत्यक्ष रूपें मात्र दूनू बिहुंसि रहल छलाह।

चौरसियाक आनन पर सेहो आस्वस्तिक लेबल लगलै मुदा भीतर मोन आशंकित छलै। गप्पक प्रसंग शिव बाबू दिस स' आगू बढ़ल - शुद्ध त' समाप्त भ' गेलै, कन्यादान भेल?

नारायण बाबूक चेतन मन प्रत्यक्षत: कवच धारण केलक। विचारि लेलाह - ई कतबो प्रहार करताह हम तीत नहि होयब तथापि मोनक एक कोन कहलकनि- अपने सन विभूति वरागत कें रहैत एतेक जल्दी कोना कन्यादान होयत? उपर स' शान्त रूपें सब रस उझलैत, उत्तर छलन्हि - हम अहां त' काजक माध्यम होइत छी। जन्मक संगहि उपरवला समय, स्थान, व्यक्ति निर्धारित क' दैत छथिन्ह, जकरा अनुसारे गठबन्धन होइत छै। हमरा लोकनि अबूझ, एक दोसर कें दोषारोपण करैत छी।

दोसर प्रश्न भेलन्हि - कथा त' अहां कें कैकटा ने छल? उधमपुर वला त' सोझरायल छल? नारायण बाबू तरहथी परक जर्दा फांकि मुंह कें कोचियबैत बजलाह - यौ महाराज! उधमपुरक लोक सोझरा जाय त' नामक सार्थकता कोना हेतै? जखन सब गप्प मानि लेलियन्हि त' सुना देलन्हि - कन्याक माय नोकरी करैत छथिन्ह, तखन पढ़ल-लिखल बेटी, सेहो कौनभेन्टक, अवश्ये नौकरीक इच्छा रखने हेतीह। ओ इच्छा त्यागय पड़तन्हि। महिलाक नोकरी करब हमरा लोकनि के पसिन्न नहि। अनेरो कनियां टेढ़ियाल रहैत छै। एक इच्छा भेल कहि दियन्हि - इहो अहींक आदेशानुसार होयत मुदा आत्मा स्वीकार नहि कयलक जे बेटीक मुंहक संग दिमाग के सेहो जाबी लगा दियै।

नारायण बाबू शिवबाबू दिस उन्मुख भेलाह-अहांकें त' सेहो एकटा कथा मे बेश पढ़ल-लिखल कन्याक प्रस्ताव छल। मेधावी कन्या छल। परिवार सेहो आर्थिक रूपें सम्पन्न आ सुसंस्कृत छल?

शिवबाबू कने मोन पाड़ैत सन खखसि क' बजलाह - हँ, हँ ओ कथा? छल त' ठीके मुदा ओहि मे कनेक मोन खटकि गेल।

की भ' गेल?

एकटा निर्लज्ज सन हंसी-हंसैत शिवबाबूक उत्तर छलन्हि - अहाँकें त' बुझले अछि, हमरा घर मे सबहक लम्बाइ कने कमे छै। तें हम कनियां कने लम्बे तकैत छियै, नईं त' अगिला पीढ़ी आर भुट्ट भ' जेतै। ओहि कन्याक लम्बाइ बड्ड सामान्य छलै। वर्ण सेहो कने गोर तकै छियै।

प्रश्न भेलन्हि - अहांक बेटा त' पिंडश्याम छथि? - हँ यौ ते ँ ने कन्या गोर चाही। भलाइ त' हुनके लोकनिक होयतन्हि। आगाँ जँ झंझटि स' बचि जाइथ। शिवबाबू कें मोन पड़लन्हि - हुनकर भौजी त' गोरि-नारि छथिन्ह, मुदा बाल-बच्चा सब पिंडश्याम छन्हि, तथापि प्रकट नहि भेलाह।

चौरसिया के ई सब टीका-टिप्पणी नीक नहि लागि रहल छलै। ओ दुनू गोटे सोझे अयनाक सामने ठाढ़ भ'

जगह छेकने छलखिन्ह। अयना मे अपना कें निहारबाक इच्छा सबके होइत छै। दोसर, पान एके बेर लैत गेलखिन्ह मुदा जर्दा, मसाला, चून, सुपारीक तगादा कतेको बेर। आब ओकर तगादा भेलै – मालिक पाइ? पाइक तगादा दुनू मे किनको नीक नहि लगलन्हि। एक गोटे कहलथिन्ह – रौ तोहूं हद्द करैत छें। दोसरक कहब छलन्हि – भागल कहां जाइत छियौ?

दूनू गोटेक हाथ संगे जेबी पर पड़लन्हि। नारायण बाबू कुटिल मुसकी दैत बजलाह – भाइ! हमरे देब' दिय'। हम कन्यागत छी। एखन सब ठाम हमहीं जेबी मे हाथ दैत छियैक। बरागतक हाथ जेबी दिस कखनो नईं जाइत छै।

शिवबाबू पुन: निर्लज्ज हँसीक संग अपन हाथ ठामहि रोकि लेलन्हि। प्रस्ताव भेलन्हि – अबेर भ' रहल अछि, आब डेरा चली। दोसर गोटेक उत्तर छलन्हि – दुर महाराज! कने अबेरे क' डेरा जायब, नहि त' सुनय पड़त – ई खगल अछि ओ खगल अछि, ई नहि भेल त' ओ नहि भेल, निरर्थक प्रवचन। अशान्ति स' कने दूरे रहय चाहैत छी।

मुदा खगताक पूर्त्ति त' हेबेक चाही। चलू, आब जे हेतै से झेलल जाय। नहुंए डेगे दुनू गोटे आगू बढ़लाह त' इच्छा भेलन्हि – एक बेर चाह पी लेल जाय। सामने अपन चाहवलाक दोकान अछि। चाह-दोकानक बेंच पर बैसैत दू कप चाय देबय कहलथिन्ह।

चाहवला कनडेरिये आंखिये दुनू गोटे कें देखलक आर आशंकित भेल – दू कप चाह पर नहि जानि कतेक काल बेंच छेकने रहताह। एतय शिव बाबू अपन व्यग्रताक मोटरी पहिने खोललाह – एकटा बात बुझलियै भाइ। अहां कें खराब नहि लागय, कन्यादान स' बरदान बेशी कष्टप्रद अछि। बेटीक लेल अहां दस दुआरि जा सकैत छी मुदा बेटा लेल जायब त' लोक के हेतै जे बेटा निश्चित रूपें अकारथ या बेमाह छन्हि। बेटीक बियाह क' अहां निश्िंचत भ' जायब मुदा बेटाक बियाह क' अहां निश्चिन्त नहि भ' सकैत छी। पुतहु पर अहांक परिवार निर्भर करत। हुनका नैहरक दू-चारिटा अबिते रहत, अनेरो अहांक घरक व्यवस्था मे टांग अड़ायत आ मीन-मेख निकालैत रहत। जँ किछु बाजब त' घर अशान्त होयत। बेटा कोना बिमुख भ' गेल, अहांकें भान तक नहि होयत। बेटा कें पढ़ल-लिखल आधुनिक कनियाँ चाहियैन्ह। हमरा नीक कुल-शील, सभ्य, सुसंस्कृत आ आफिसरक बेटी चाही। बौआक माय कें गाम अयला पर कने घोंघ-मड़ौत केनिहारि, श्रेष्ठ कें आदर आ छोट कें स्नेह केनिहारी आ घर-दुआरि सम्हारयवाली पुतहु चाहियन्हि। बौआक नव नोकरी छन्हि, गृहस्थी नवे रहतन्हि तें बुझनुक सासुर होयब आवश्यक। शिवबाबू एकटा दीर्घ नि:श्वास लेलैन्ह तखन प्रभुक इच्छा।

नारायण बाबू एतेक काल धैर्य धेने छलाह। आब अपन संयमक कवच उतारि फेकलाह – अयँ यौ त' बेटी की बलाय होइत छै? ओकरा लेल सौम्य, सुन्दर बर नहि चाहियै? ओकर सासुरक परिवार नीक कुल-शील वला नहि चाही? काल्हि भेने ओकर परिवार टुटि जाइ या मतान्तर होइ त' हमरा कष्ट नहि हयत? हमर बेटी-जमाय हमरा स' बिमुख भ' जायत त' हमरा उद्वेग नहि लेत? हम त' बेटीक पढ़ाइ पर ओतबे ध्यान राखल जतेक बेटा पर। तखन ई विभेद कियाक? एहि वाक्‌युद्ध मे दुनू गोटे ध्यान नहि देलथिन्ह जे कतेक गोटे हिनका दिस कान पथने अछि। स्थितिक ज्ञान होइते दुनू अपना के संयमित केलाह। ऐहि बेर पाइ शिवबाबू देलथिन्ह। बजलाह – चलू भाइ डेरा चली, आब कतहु नहि बिलमब। दुनूक समस्याक पलड़ा समान अछि। ककरा अपन पलड़ा ल'त करय पड़त नहि जानि। सबकें अपन समस्या पहाड़ लगैत छै आ अनकर समस्या राई। ❑

धैर्या

एक तऽ उत्तर मुँहक बरंडा ताहि पर मनी प्लान्ट स' छाड़ल ग्रिल। भोर स' घरक काजक क्रममे पानि छूबैत-छूबैत

धैर्या के अंतिम दिसम्बरक कड़कैत जाड़ कंपकपा देने छलै। रौद तापक ओकर अदम्य इच्छा मोने मे रहि जाइत छलै। पहिने उमा-महेशक दूनू बच्चा संगे रहैत छलै त' ओकरा पाछू इहो कनेक काल छत पर रौद तापि लैत छल। दूनू के बाहर बोर्डिंग मे पठा देलकै। आब उमाक कहब छलै -एसगर मे बूढ़ी सीढ़ी स' ओघड़ा जेती त' एकटा कलंक लगा जेती। बिछान ध' लेती, हिनकर परिचर्या के करत? जावत उमा-महेश डेरा मे रहैत छल, कड़कैत जाड़ सन कड़कैत बोल सुनवा मे अबैत छलै। दस बजे स्कूल जयवा काल दूनू बेगती डेरा बन्द क' बाहर सँ ताला लगा दैत छलै। धैर्याक दुनियाँ समटि जाइत छलै – बरंडा आ सामनेक गाछ-वृक्ष पर। ओ अपन ओछायल पटिया पर परि रहल। हाथ-पयर सोझ करैत एक पैघ उच्छवास लेलक। ई उच्छवास आत्मग्लानिक छलै या पश्चातापक या किछु काल लेल भेटयवला शान्तिक, ई ओ स्वयं नहि बुझि सकल।

ग्रिल सँ अमलतासक एकटा गाछ देखाइत छलै। समय अयला पर ई गाछ फूल सँ लदायल रहैत छलै त' कखनो पातो सब झड़ि जाइत छलै। ठुट्ठ गाछ रहि जाइत छलै ओकरे जीवन सन। ओकर माय कहैक सबहक जीवन मे सुखक बाद दुख आ दुखक बाद सुख अबैत छै। मुदा धैर्या के अपना हिस्सा मे सुखक सर्वथा अभावे बुझायल रहै। गाछ पर फुदकैत आर चूँ-चूँ करैत चिड़ै ओकर एहि एकान्तवासक सहचर बनि गेल छलै।

गाछ पर एक जोड़ी मैना अपन दू नवजात बच्चा के स्नेहिल भाव सँ निहारि रहल छल। काल्हि तक दूनू बच्चा खोंता स' निकलैत नहि छलै। आइ डारि पर बैसल चहैक रहल छलै। दू चारि दिन मे पूर्ण रूपे ँ उड़वा योग्य भ' जेतै। एकाएक पैघ मैना जे ओकर माय या बाप होइ, चोंच मारि चूँ-चूँ केलकै। धैर्या सोचलक – संभवत: शिकारी बिलाड़ि स' बचि क' रहक लेल सिखा रहल होइ।

धैर्या के मोन पड़लै अपन माय। पुत्रक कामना मे ओ अपन माय-बापक पांचम कन्या छलि। ते ँ ओकर नाम धैर्या राखि माय सेहो धैर्य धारण क' लेलखिन्ह। मुदा पिता के आगू लेल वंशधरक कामना कचोटैत रहैत छलैन्ह। विचारक तन्द्रा मे धैर्याक हाथ नव रँगल ग्रिल पर चल गेलै। ओकर सौंसे देह मे करेंट जकाँ दौड़ गेलै। नव रंग कयल ग्रिलक चिपचिपाहटि मे आंगुर के सट'क बदला डरे पाछू फेका गेलै। मोन पड़लै उमा आर महेशक तनल भृकुटिक संग वाण-वाक्य – ''ई बुढ़िया जीवय नहि देत। बूढ़ा त' पाप क' चल गेला। भोगि रहल छी हम सब।''

धैर्या नेने सँ एहन झटका सहवाक अभ्यस्त छलि। ओकर जन्म सेहो झंझावातक बीच भेल रहै। ओ त' आजीवन धैर्यक परीक्षा दैत रहलि। मायक राखल नाम के सार्थकता भेटि रहल छलै। जखन नीक-बेजाय, सही-गलत, साँच-फूसि बुझवाक वयस नहि भेल रहै तखने ओकरा आभास भेल रहै माय-बाप मे मतभेदक। पाँचो बहीनक प्रति स्नेहक दरिद्रता। पुत्र प्राप्तिक लालसा। आस्ते-आस्ते पिता के खर्चा वहन करवा मे असौकर्य होइत गेलैन्ह। पिताक नोकरी आ मायक सिलाई-कढ़ाईक आमदनी स' परिवारक गाड़ी ठीके-ठाक चलि रहल छलै। ओही बीच पिता अपन बदली आन शहर मे करा लेने रहथिन्ह। ओकरा सबके भेट भेना मासक मास भ' जाइ। क्रमश: ई अन्तराल सालक सेहो होवय लगलै। आर्थिक सहयोग मे सेहो क्रमश: कटौती होइत गेलै।

धैर्याक चिन्तन क्रम मे व्यतिक्रम भेलै एकटा छोट गेन्दक 'धप्प' सँ। सेकेंड नहिं बीतल हेतै कि नेनाक स्वर अयलै - नानी! गेन द' दिय' ने। गलती स' अहाँ दिस चल गेल। माँ या नानी सम्बोधन सुनवा लेल धैर्याक कान तरसि क' रहि गेल छलै। प्राय: एहि पदक प्राप्ति प्रत्येक नारी-जीवनक सार्थकता सिद्ध करतै अछि। धैर्या के कहवाक इच्छा भेलै जे बौआ खूब खेलाउ, हमरा सोझा मे खेलाउ मुदा उमाक विकृत चेहरा मोन परलै - बुढ़िया भरि दिन सूति क' बितबैया, ने किछु देखबाक प्रयास करैत अछि ने किछु सुनवाक। हड़बड़ा क' गेन्द के तेना सड़क पर फेकलक जे ओ

बच्चा हँसैत अपन गेंद ल' क' भागल।

धैर्याक माय कहथिन्ह - नामकरण सोचि विचारि क' करी। व्यक्तित्व पर ओकर प्रभाव पड़ैत छै। असगरो मे ओकरा हँसी लागि गेलै। माय-बाप अपने केहनो रहय बेटा-बेटी के राजा रानी हेवाक, जज-कलक्टर हेवाक कामना करेत अछि आ ओही मोन सँ आशीष द' जुड़ाइत अछि। मुदा होनी के कियो नहिं जनैत अछि। जिनका नामक सिन्दूर लगा धैर्या एहि घर मे आयल छलि हुनक नाम छलैन्ह सत्यनारायण। धैर्याक संग ओ जीवनक आरम्भे कयलैन्ह असत्य स'। तखन नारायण क कोनो गुण हुनका मे हयब ओहू स' बेशी असत्य। सत्यनारायणक पुत्र महेश पुत्रबधू उमा। महेशक महान ईश हेवाक सत्यता यैह छलैन्ह जे घरक सब काज समय पर आ एसगरि कयलाक उपरान्त ओ बुढ़िया, बहिरी, अन्हरीक उपमा पबैत छलीह।

महल्लाक कन्या-विद्यालय सँ अपन जेठ बहीन सबक पढ़ल किताब पढ़ि धैर्या मैट्रिक पास कयने छलि। सरकारी स्कूलक फीस बहुत कम छलै। ओहो ओकर माय हेड मैडमक हाथ-पैर जोड़ि माफ करा लैत छलैक। मैडम दया क' स्कूलक बच्चाक यूनीफार्म सीबय सेहो ओकरा माय के दैत छलखिन्ह। जाहि सँ बहुत मदति भ' जाइत छलै।

मैना सबक चीं-चींक विलाप सँ ओकर तन्द्रा भंग भेलै, लगलै जेना प्रलय आबि गेल होइ। ओ झुकि क' नीचा देखलक एकटा बिलाड़ि किछु सूँघैत पयर दबने बढ़ि रहल छलै। मैना सबके झपट्टा मारल जयवाक डर भेलै, तेँ अपना भरि तीव्र स्वर स' प्रतिरोध कयलक। सृष्टिक बड़ पैघ विडम्बना छै। अपन-अपन संतान, परिवारक सब रक्षा करैत अछि, मुदा अनका पर झपट्टा मारवा लेल सब श्रेणीक जीव अवसर तकैत अछि।

ओकरा मोन परलै महल्ला मे प्राय: लोकके ई बुझवा मे आबि गेल छलै जे एहि परिवारक पुरुष संरक्षक कात लागि गेल छै। तेँ भक्षक बिलाड़ि जखन-तखन पयर दबा झपट्टा मारक प्रयास करैत रहैत छलै। धैर्याक माय अपना भरि पुत्री-सम्पदाक रक्षा लेल तत्पर रहैत छलीह, मुदा निश्चिन्त नहिं कारण सेन्ह परक डर सतत् घेरने रहैत छलैन्ह। एक दिन धैर्या ल'ग मायक प्रस्ताव भेल रहैन्ह - अहाँ अपना मामा ल'ग चल जाउ। ओतय कोनो नोकरीक जोगार भ' जायत संगहि अहाँक सुरक्षित रहवा स' हमर मोन निश्चिन्त रहत। धैर्या स' पैघ दू बहीन के ओकर दू मौसी अपना संगे ल' गेल छलै जे बिवाहक कोनो ब्योंत लगयवाक प्रयास करतै।

मामा ओतय पूर्ण जोड़-तोड़क बाद एक निजी विद्यालय मे धर्या के छोट नेना सबके पढ़यवाक काज भेटल रहै। पारिश्रमिक महज मामूली तथापि ओ प्रसन्न छलि जे मायक किछुओ भार कम भेलै। सत्यनारायण ओहि विद्यालयक संचालक छलाह। धैर्याक व्यक्तित्व, कार्यकुशलता, व्यवहार-कुशलता स' बहुत बेशी-प्रभावित। किछु मासक बाद धैर्या के प्रस्ताव भेटलै- जँ छात्रावास निरीक्षिकाक भार ग्रहण करी त' भोजन, आवास, नि:शुल्क, संगहि पारिश्रमिक बढ़ि जायत।

धैर्या के सत्यनारायण मे नारायण हेबाक भ्रम भेल रहै, जे मात्र भ्रम छलै। ओ सहर्ष प्रस्ताव स्वीकार क' नेने छलि। माय के आर्थिक सहायता क' धैर्या मानसिक रूपेँ कने आश्वस्त भेल छलि। समय ससरि रहल छलै। धैर्या भोर सँ आधा राति तक विद्यालय आ छात्रावास-व्यवस्था मे ओझरायल रहैत छलि। बहुत कुशलतापूर्वक अपन प्रत्येक दायित्वक निर्वाह क' ओ स्वयं सेहो प्रसन्न छलि।

किछु मासक बाद सत्यनारायण अनुकम्पाक एक गोटी आर आगू बढ़ा देलखिन्ह - विवाहक प्रस्ताव राखि। पहिने त' धैर्या के विश्वास नहिं भेलै। मुदा सत्यनारायण क आकर्षक व्यक्तित्व, मधुर वाणी, गंभीर चेहरा सेहो ओकरा 'नहि' नहिं कहय द' रहल छलै। जखन दोसर आर तेसर बेर प्रस्ताव अयलै त' ओ माय आ मामा क सहमति पाबि आगू बढ़ल

छल। मात्र दू-चारि गोटेक उपस्थिति मे बिना कोनो बाजा-गाजा, ताम-झाम क एक पंडित द्वारा किछु मंत्रोच्चारणक बाद दूनू एक सूत्र मे बन्हा गेल छल। माय आ मामा संतुष्ट छलखिन्ह जे बिन बापक गरीब बेटी के नीक घर-बरक आश्रय भेट गेलै।

विवाहक बाद धैर्या के पहिल ठेस लागल रहै महाबार पारिश्रमिक तुरंत बन्द भ' गेलै। सत्यनारायणक अनुसार आब ओ विद्यालयक संरक्षिका छलि। सब किछु ओकरे छलै। अपना माय के कोनो सहायता देबा सँ ओ असमर्थ छलि, कारण सत्यनारायणक इच्छाक विपरीत कोनो कार्य ओकरा लेल शोभनीय नहि छलै।

धैर्याक कर्त्तव्य-दायित्व मे छात्रावास आ विद्यालयक अतिरिक्त गृह-कार्य सेहो आबि गेल छलै। ओ अपना के गृह-लक्ष्मी सिद्ध करैत सत्यनारायण क संचय-कोष मे यथेष्ट वृद्धि क' रहल छलि।

प्राय: दू वर्षक बाद अपन संतान लेल धैर्याक इच्छा हुलकी मारने रहै त' सत्यनारायण अपन शतरंजी चालि स' ओहि इच्छा क निवारण कयने रहथिन्ह – दिन-राति त' अहाँ बच्चे क परिचर्या मे लागल रहैत छी। ई सब बच्चा त' हमरे लोकनिक छी।

धैर्या जहिया-कहियो सत्यनारायण संगे हुनका गाम जयवाक इच्छा प्रकट कयलक त' सत्यनारायण क उत्तर रहैत छलैन्ह – अहाँ एतहि ठीक छी, गामक वातावरण अहाँके अनसोहाँत लागत। दोसर, विजातीय विवाह सँ गामक लोक अनेरे बवाल उठायत। धैर्या के पुन: ठेस लागल रहै - त' की गामक लोक के हिनक विवाहक एखन तक कोनो जानकारी नहि छैन्ह? जखन कि मास मे एक-दू बेर ओ निश्चित रूपे गाम जाइत छथि?

विवाहक तेसर वर्ष बीत गेलै। मोन नहिं मानलकै त' सत्यनारायणक अनुपस्थिति मे धैर्या लेडी-डाक्टर सँ अपन परीक्षण करेलक। लेडी-डाक्टर के ओकरा मे कोनो त्रुटि नहिं बुझयलै। पति के जाँच करयवाक सलाह देने रहै। बहुत अनुनय-विनय आर जिद कयला पर सत्यनारायण बम विस्फोट कयने रहथि – ओकर एक विवाहिता पत्नी पहिने सँ छै। ओ एक पुत्र आ एक पुत्रीक पिता अछि। दोसर संतानक जन्मक बाद ओ परिवार-नियोजन करा नेने छल।

ओहि विस्फोटक धमाका आइयो ओकरा मस्तिष्क के सुन्न कयने छै। त' की मात्र एक नि:शुल्क सहायिका लेल ओ असहाय धैर्याक जीवन नष्ट कयलक? धैर्याक इच्छा भेल रहै जे चिचिया क' सत्यनारायणक चक्रचालि के सौंसे पसारि देवाक, ओकरा गाम जाय ओकर कीर्त्ति-पताका फहड़यवाक, सबकिछु छोड़ि-छाड़ि कतहु चल जयवाक। मुदा एक दोसर विकराल प्रश्न सोझाँ ठारह् छलै - पिता के कात भेलाक बाद जतेक समस्याक सामना ओ सब कयने छल पुन: ओहि आगि मे ओकरा जरय पड़तैक मायक संताप कतेक बढ़तै ई ओ सहजहि आकलन क' सकैत छलि। गिद्ध व्यक्ति आ गिद्ध-दृष्टि क सामना ओ कोना करत। समाज मे सत्यनारायण सह-सह क' रहल छै। धैर्या पुन: धैर्य धारण कयलक जे एतय कम-स' कम गिद्ध सब स' बाचल रहब, बूझब जे एक बेइमान क नि:शुल्क सहायिका छी। आब ओकरा मोन मे सत्यनारायण लेल ने आकर्षण छलै, ने प्रेम, ने सम्मान।

सत्यनारायणक बाद उमा आ महेश विद्यालयक संचालक, संरक्षक भेल। धैर्या के विद्यालय सँ हटा मात्र आवासक सेवा-भार भेटलै। संभवत: ओकर वयस देखि सेवा-मुक्त कयल गेलै। उमा-महेशक अनुकम्पा मानल जाय अथवा लोक-लाज अथवा स्वार्थ जे धैर्या के ओ लोकनि सड़क पर नहिं छोड़लैन्ह।

बाहर ताला खुजवाक आवाज भेलै। उमा आर महेशक अयवाक समय भ' गेल छलै। धैर्या चौंक क' उठि बैसल। हाँई-हाँई पटिया समटय लागलि। कोना बेर बीत गेलै ओकरा सुधियो नहिं रहलै। दीर्घ उच्छवास क संग स्वर छलै - हे ईश्वर तहूँ हमरा धैर्यक कतेक परीक्षा ल' रहल छ'? आबहु त' शरण दैह। ❑

एक आवश्यकता मुदा अतिरिक्त

किछु वर्ष पूर्व एक हिन्दी पत्रिकाक कतेको अंक मे विभिन्न लेखक द्वारा लिखल लेख ''आवश्यकता है पत्नी के अलावे एक प्रेमिका की'' शीर्षक सँ प्रकाशित भेल छल। संभवत: सम्पादकक आह्वान पर अथवा प्रत्युत्तर मे ''आवश्यकता है पति के अलावे एक प्रेमी की'' शीर्षक सँ सेहो किछु लेख प्रकाशित भेल छल। आवश्यकताक सार्थकता सिद्ध करवा लेल दूनू शीर्षकक लेख सब मे बहुत रोचक आ व्यंग्यात्मक तर्क सब प्रस्तुत कयल गेल छल।

ओही तरहक जीवन्त घटना एक कवि-गोष्ठी मे देखवा आ सुनवा मे आयल। कवि गोष्ठी अपन घमासान स्तर पर छल। गोष्ठीक संचालक महोदय वरीयताक अनुसारे एकाएकी कवि लोकनि के माइक पर आमंत्रित क' रहल छलाह। प्राय: प्रत्येक आमंत्रण सँ पहिने समयाभावक विवशताक कारणे ँ एक कविता सुनयवाक अनुरोध रहैत छलैन्ह। प्रत्येक कविता पाठ क बाद श्रोतावर्गक थपड़ी गड़गड़ा जाइत छल आ मंच पर आसीन कवि लोकनि दिस सँ – वाह-वाह, अद्वितीय अद्‌भुत, विलक्षण उपमा अछि आदिक अभिमत आबि रहल छल। कवि लोकनि उत्साहित भ' संचालकक निर्देशन बिसरि एकटा आर छोट सन कविता, जे वास्तव मे छोट सन नहिं रहैत छल आ एही गोष्ठी लेल टटका रचित रहैत छल, सुनावय लगैत छलाह।

क्रमानुसारे एक नवतुरिया कवि के आग्रह कयल गेलैन्ह। ओ पछिला कवि लोकनिक अनुसरण करैत एक कविता-पाठक बाद दोसर कविता-पाठक आरम्भ करैये जा रहल छलाह कि मंचस्य एक वयस्क कवि व्यंग्यात्मक रूपे ँ टोकारा देलखिन्ह – एकेटा कविता रहय दियौक, एहि कविताक प्रेरणा कतय सँ भेटल ओकरे कने व्याख्या क' दियौक।

नवतुरिया कवि कननमुँहें हतोत्साहित होइत बजलाह – हमरा होइते छल हमर कविता पर जँ श्रोतावर्गक थपड़ी बजबो करत त' मंच सँ वाह-वाह, अद्वितीय आदि किन्हुँ नहिं सुनब, उनटे व्यंग्य कयल जायत। मक्खनपुरक कवि-गोष्ठी मे सेहो पराभव जी एहिना हमरा लज्जित आ अवहेलित करक प्रयास केने छलाह, जेना हम राजदरबारक मूर्खराज होइ।

नवतुरिया आक्रोशित भ' बैस त' गेलाह मुदा अपन समवयसी एक कवि भाई ल'ग भरास निकालि रहल छलाह – हमहूँ त' परम प्रचंड छी। सब किछु के रोदन ल' बाबू ल'ग जाइत छी। हुनका बुझबैत-बुझबैत थाकि गेलहुँ जे हमरा पत्नी के जँ गाम मे रहब आवश्यक छैन्ह त' हुनका ओतहि रहय दियौन्ह। अहाँ सबक सहारा छथि, धीया-पुताक परिचर्या करैत छथि, घर सम्हारने छथि। मुदा हमरो त' भानस-भात लेल, घर सम्हरवा लेल एकटा चाही। अपने हाथो झड़काउ, नोकरीयो करू त' साहित्य लेल समय कोना बचत। सर्वोपरि कविता सृजन लेल एकटा प्रेरणा-स्रोत चाही जे लब्ध प्रतिष्ठित कवि हेवाक लेल आवश्यक। अप्रत्यक्ष रूपे ँ बाबू के संकेत देने छलियैन्ह त' खिसिया क' कहने रहथि - मुँह ने कान, अपने काँकोड़ सन भेल छथि, हिनकर घरवाली आ बच्चा के हम पोसि रहल छी आ हिनका चाहियैन्ह दूनू हाथ मे लड्‌डू, आमदनी अठन्नी आ सोचि रहल छथि खर्चा रूपैया।

तखन हमरो अपना तर्क छुछुन्न लागल छल। एतेक कम पाईवला नोकरी आ यदा-कदा कवि-गोष्ठीक एकावन टाका सँ दू ठामक खर्च कोना चलत? गाम सँ भेटयवला चाउर-दालि, चूरा-अचार दुर्लभ भ' जायत। मुदा कविता-लेखनक अमल छूटत नहिं, मंच आ श्रोता दिमाग मे घुमबे करत, संगहि कवि-गोष्ठी मे अपमान सेहो सह्य नहिं होइत अछि। किछु करैये परत।

मित्र कवि-भाईक मंतव्य छलैन्ह – अर्थक अभाव मे जँ चन्द्रमुखी सूर्यमुखी या ज्वालामुखी भ' जेतीह त' दोसर

पराभव भ' जायत। दुखी कविक उत्तर छलैन्ह-तखन श्रृंगार, प्रेम, प्रकृति वर्णन छोड़ि रौद्र रसक कविता लिखब। नहुएँ स्वरे मित्र-कवि के कहलैन्ह – हम जाति-पाति पर विश्वास नहिं करैत छी, पाई-कौड़ी सेहो नहिं लेबै, कोनो कमौआ प्रेरणाक अता-पता लगाउ ने। ❑

प्रतिशोध

हमर डेराक सामनेक फुटपाथ पर गोर दसेक खोपरी बसल छल। सड़कक दूनू कात पाँच फीट चौड़ा फुटपाथ छलै। हमरा घरक सामने छल 'राजवारी'। ओकर लम्बा आ ऊँच बाउन्ड्री-वाल खोपरी बनयवा मे सहायक छलै। सब खोपरीक बनावट प्राय: एके ढंग क। तीन सँ चारि फीटक लम्बा कने मोटगर गाछक डार्हि या कोनो विज्ञापनवला आलमुनियम या लोहाक छड़ चारू कोन पर स्तम्भ क काज करैत छलै आ एक दिस राजबारीक देवाल त' तीन दिस देबाल आ चारक काज करैत छलै– प्लास्टिक आ पुरान कपड़ा। ओही मे फट्टक सेहो लागि जाइत छलै। ओहि लम्बा झोपड़पट्टी मे हमरा एकेटा बंगाली परिवार बुझना गेल छल। बांकी सब मैथिली-भाषी परिवार। कारण बुझना गेल छल जे बंगाली परिवार के उपाय भेला पर 'खोला-बारी' मे चल जाइत छल आ एतुका खोपरी बेच दैत छल। मैथिल के गाम मनीऑर्डर केनाई बेसी आवश्यक बुझना जाइत छलैन्ह, जतय घरक लोक जमीन कीनैत छलैन्ह आ गृहस्थी चलैत छलै।

सरो अर्थात् सरस्वती ओहि बंगाली परिवारक बेटी। नाक-नक्श आकर्षक, कठमस्त। किछु डेरा मे चौका-बर्त्तन, झाड़ू-पोछाक काज करैत छल। संग मे प्राय: पाँच बरखक एक बेटी आ नोकरीक प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ घरवला छलै। घरवला भोरे जाई आ दस बजे रातिक बाद आबै। गृहस्थी नीके जकाँ चलबाक आभास भेल छल। खोपरीक पतियानी मे एकटा खोपरी छलै कमुआ अर्थात् कमलेश्वर क। सुनबा मे आयल छल ओ भागलपुर जिलाक कोनो गाम सँ प्रताड़ित भ' भागि क' आयल छल। प्राय: पच्चीस बरखक जवान। रोजीक नाम पर भाड़ा पर लैत छल एक हाथ रिक्शा। जाहि मे कमुआ जोताइत छल आ उघैत रहैत छल मोटरी। भने ओ मोटरी सजीव होइ या निर्जीव। एसगर होयवाक कारणे ँ स्वभाव मे निफिकरी आ मस्तमौलापन छलै। सिनेमा संभवत: बेशी देखैत छल, ते ँ हीरो सब जकाँ जुलफी के झटका देब, गीत गायब, सिनेमाक डायलॉग बाजब ओकर स्वभाव भ' गेल छलै। गरमीक राति मे बेशी काल हमरा डेराक छज्जा तर रिक्शाक अगिला भाग मे पटरा लगा सूतैत छल। तखन ओकर भोजन होइत छलै – पियाजू (कचड़ी), बेगुन-भाजा (भाटाक तरूआ) आ मुर्ही। कखनो काल सरो क बेटी ओकरा ल'ग सहटि क' आबि जाई त' ओहो भोजन मे संग दैत छलै। ओही मे सँ किछु अपना फ्रॉक मे समेट क' बेटी अपन माय लेल सेहो रखैत छल। अपन खिड़की सँ हम चुपचाप सब तमाशा देखैत रहैत छलहुँ। बाद मे बुझायल जेना एक पतोरा दूनू माय-बेटी लेल अलग सँ अनैत छल। पेटक रस्ते कमुआ कहिया आ कोना सरोक हृदय पर राज करय लागल ई नहिं बुझना गेलै। कोनो प्रेम-बाण चला दूनू एक दोसरा के मोहि लेलक। सहोक घरवला दूनू के विमुख करवाक लेल साम, दाम, दंड, भेद सब अपनेलक मुदा दूनू पर त' कोनो भूत सवार छलै। अरोसिया-परोसिया सेहो उचित-अनुचित बुझेने रहै। सरोक घरवला अपमानक घोंट पीबि एक भोर जे गेल से फेर घुरि क' नहिं आयल। सरोक माय कमुआ के बड्ड गरियेने रहै। सरो अपना मायक खोपरी सँ निकलि कमुआक खोपरी मे प्रवेशक' गेलि। किछु दिन दूने के देखि ककरो स'ख लागि सकैत छलै। दू शरीर एक प्राण छलै। सरो आब एके डेरा काज करैत छल। बड़ मनोयोग सँ भानस करय आ कमुआ क बाट तकैत रहैत छल। कमुआ बेशी

ओही रोड बाटे सवारी ल' जाय लागल। कखनो काल अबैत-जाइत बेटी हाथ क' कागज मे किछु बान्हल, प्राय: खयवाक वस्तु, पकड़ा दैत छल। कमुआ सरो के निहारैत, मुस्कीयाइत रिक्शा नेने दौड़ जाइत छल।

समय के त' जेना पाँखि लागल छै। आगू बढ़ैत गेल। सरो के दोसर बेटीक जन्म भेलै। डेराक काज छोड़य पड़लै। परसौतीक टूटल देह, दू बच्चाक परिचर्या। पहिने जकाँ कमुआक तीया-पाँछा पार नहिं लेगे। दूनूक दायित्व बढ़ि गेलै। रहि गेलै मात्र रिक्शाक सहारा। आमदनी सिकुड़ि गेलै, खर्चा बढ़ि गेलै। कमुआ अपना भरि रिक्शाक खेप बढ़यवाक प्रयास करैत छल मुदा शरीर संग नहिं दैत छलै। खर्चक पूर्त्ति नहिं भेला पर दूनू मे झिकझिक बढ़िते गेलै। कमुआ के सह्य नहिं होइ त' सरो के डेंगा दैत छल। सरो शारीरिक रूपे ँ भिड़वाक साहस नहिं करैत छलि। अपन प्रबल अग्निवाण सँ कमुआ के बेध दैत छल। माये-बहनिये गारि द' ओकरा ओध-बाध क' दैत छल, हर-हर, खट-खट बढ़िते गेलै। हठात एक दिन कमुआ निपत्ता भ' गेल। लोकक अनुमान रहै भरिसक गाम पड़ा गेल।

किछु दिन सरो कुहरैत रहल। पैंच पर कतेक दिन घर चलितै। जल्दीये अपना के सम्हारलक आ दिनचर्या मे परिवर्त्तन अनलक। करेज के पाथर क' दू डेरा काज ध' लेलक। दूनू बेटी के सुतले छोड़ि अहल भोरे काज करय चल जाइत छल। अबैत छल त' छोटकीक फकसियारी देखि बड़की सेहो फकसियारी कटैत निष्प्राण भेल रहैत छलै। ककरा पलखति छलै ओकर कनैत बेटी लेल बिलमवाक। सब अपन-अपन रोजी-रोटी लेल बेकल रहैत छल।

प्राय: एक मास बितला क बाद कमुआक उदय भेलै। सरो ओकरा आ ओकर तेरहो पुरखाक उद्धार क' देलक। ओहि दिन कमुआ शान्त रहल। अपन निपत्ता रहवाक कारण पर सफाई देलक, अपन बेटी माने सरोक छोटकी बेटी के दुलारक। सरो भानस करय गेलि त' हाथ धऽ उठा देलकै। बजार सँ खैक अनने छल। फेर रिक्शा आबि गेलै आ जिनगीक चक्का पूर्ववत चलय लागल। अरोसिया परोसिया निचेन भेल – दूनू के भगवान सद्बुद्धि त' देलखिन्ह।

समयक चक्र ककरो निचेन सँ बेशी दिन कहाँ रहय दैत छै। कखनो शान्ति, कखनो अशान्ति। कखनो शान्तिक पलड़ा ल'त रहैत छै कखनो अशान्ति क। सरो आ कमुआ जतबे एक दोसर के प्रेम करैत छल ओतबे दूनू के एक दोसर सँ अपेक्षा भाव सेहो छलै। किछु मासक बाद फेर वएह रामा, वएह खटोला। हरहर-खटखट क शुभारंभ। भोर, साँझ, दुपहरिया, निसभेर राति कोनो समयक पाबन्दी नहिं। कखनो क' दूनूक चिचियाब सँ महल्लावलाक कान फाटय लगैत छलै। दूनू एक दोसरा पर लांछना लगावय, उलहन दैत रहैत छल। तो ँ चल जो त तो ँ चल जो। तोरा गेने हम पाप सँ उबरब त' तोरा गेने.....। तोरा लेल हमरा नई खगत, त' हमरा नञि। अरोसिया-परोसिया दूनूक एहन क्रिया-कलाप के ओकरा लोकनिक दिनचर्या मे मानि नेने छल ते ँ बीच-बचाव त' दूर आर सब दूनू के चारिटा गारि द' दैत छलै। लोक बजबो कोना करैत, कमोबेश सब खोपरीक त' वएह हाल रहै। जखन झगड़ा चरम पर रहै छलै तखनो लोक तमसगीरे भेल रहैत छल। बिन पाईक तमाशा देखैत। झगड़ा-गारिक बीच सरो एकटा गप्प बेशी काल बाजय - जतेक कुटवाक छौ कूटि ले जखन बदला लेबौ त' जिनगी भरि कुहरिते रहि जेबे ँ। कमुआ तखन आगि मे घी ढ़ारय– बड़-बड़ घोड़ी भासल जाय ई घोड़ी कहय कत्ते पानि, हुँह बड़-बड़ गेला तऽ मोंछ वला एला आ कत्ते कि ने.....

किछु दिन बाद रातिक बारह बजेक लगीच छल हेतै। बड़ गुमार छलै। बिजलीक लाइन सेहो गुम रहै। घरक भीतर मोन अकुला रहल छल, एना मे निन्न कतय? खिड़की सँ देखायल -हमरे दिसका फुटपाथ पर कमुआ बेटी के छाती सँ सटेने टहलि रहल छल। निसभेर सूतल लोक सँ दूनू दिसक फुटपाथ भरल छल। हमरो कनेक साहस बढ़ल। केबाड़ फोलि लतमारा पर बैस गेलहुँ, अई आशा स' जे कनेको स्वच्छ बसात भेटत त' अकुलाहटि कमत। कमुआ के

जागल देखि कनेक आश्चर्य सेहो भेल। ओ त' सबेर-सकाल रिक्शा परपटरा लगा सूति रहैत छल आ भोर मे सरोक हुथकारला पर उठैत छल। तखन दिनचर्या मे ई परिवर्त्तन कोना भ' गेलै। बेटीक मोन खराब हेवाक आशंका भेल। बजा क' पुछलियै त' कहलक – आई सातम दिन छियै एकर माय छोड़ि क' चलि गेलै। दू दिन तक त' भेल जे अपने चलि एतै। माय के कतहु बच्चा छोड़ि क' रहि हेतै। अपना भरि तकबाक प्रयास केलियै, नहिं भेटल। ओइ घरक बेटी के संगे नेने गेल। ई सतत कनिते रहैत छै। सात दिन सँ ठीक सँ सुतलो नहिं छी। लोक कत्ते तरहक गप्प कहैत अछि। कियो कहैया – हावड़ा टीशन पर देखने छलियै, त' आन मरद संगे जाइत छल। सब सुनि लैत छी। हम रिक्शा चलायब कि बच्चा पोसब? रिक्शा नहि चलायब त' गुजर केना हेतै? हम बोल-भरोस देने रहियै -तोहूँ त' मास दिन बाद धुरि आयल छले ँ, ओहो अयबे करतौ।

हमरा सरोक झगड़ाक बीच मे दोहरबैत कथा मोन पड़ल – तोरा सँ तेहन बदला लेबौक जे जन्म भरि कुहरबे ँ। कनेक काल लेल मोन मे आयल – जँ सरो आन पुरुख संगे रहत त' ओहू सँ पहिने कमुआ आन स्त्री संगे रहय लागत। बीच मे पिसायत ओकर बेटी अ जँ सरो घुमि क' नहिं आओत त' एहि प्रतिशोधक आगि मे जरत मायक करेज आ ओकर बेटी। ई ओकर केहन असंगत प्रतिशोध भेलै? ❑

पीड़ा

प्राय: दस वर्ष पूर्व बड़का बाबू संसार छोड़ि गेलाह। मुदा सौंसे गाम सर-कुटुम्ब एखनहुँ हुनकर घर-आँगन, परिवारक चर्चा हुनके नाम सँ जोड़ि क' करैत छल। बड़का बाबूक पत्नी एक बौआसीनक रूप मे एहि परिवार मे प्रवेश कयने छलीह। क्रमश: माय, काकी आ तकर बाद बड़की बाबीक रूप मे संबोधन पाबि रहल छलीह।

बड़की बाबीक पर-पोताक उपनयनक शुभ-अवसर छलैन्ह। गर्मीक छुट्टी हेवाक कारण प्राय: सब सर-संबंधी बड़ उल्लास सँ आयोजन मे सम्मिलित भेल छलखिन्ह। सम्पूर्ण परिवार दलमलित छल। आइ-माई, कनियाँ-बहुरिया, बेटा-बेटी, नेना-भुटका सब अपना-अपनी क' अपसियाँत। कियो साड़ी संग साया-ब्लाउजक मैचिंग देखा रहल छलै त' कियो कोन साड़ी पहिरब के समस्या सँ अपसियाँत छल, कियो गीत क कॉपी ताकि रहल छल, त' कियो मड़वा सजयबा लेल रंगीन कागज।

बड़की बाबी के इच्छा भ' रहल छलैन्ह कनेको काल कियो हमरो ल'ग बैस गप्प करैत। एहन मे बाबीक मोनक पीड़ा उखड़ि जाइत छलैन्ह। बड़की बाबी के भगवान मात्र एक पुत्र देलखिन्ह। बेटीक जुट्टी मे ललका फीता सँ फूल बनयवाक मनोरथ मोने रहि गेलैन्ह। कोनो कबुला-पाती काज नहिं कयलकैन्ह। कहल जाइत छै - नेना मे बेटी छाया जकाँ मायक संग रहैत छै त' वयस्क भेला पर ओलतीक छाहरि जकाँ सुख, सानत्वना दैत छै। बड़की बाबीके अपन बेटाक उपनयन मोन पड़ैत छैन्हि। बड़का बाबूक सहयोग पाबि अपन सब स'ख-मनोरथ पूरा कयने छलीह। हलुआई बैसा एगारह तरहक मधुर बनवेने छलीह। एक-एकटा मुँगवा सेर-आधा सेर क छलै। तीन गामक 'जयवारी-भोज' केने रहथि। सब ज'न आ बहिया-परिवार के साड़ी-धोती रंगरेज सँ रँगवा क' पहिरेने रहथि। कतेको वर्ष तक लोक ओहि उपनयन आर भोजक चर्चा करैत रहि गेल छल। बड़ हुलसि क' बड़की बाबी अपन बेटा-पुतहु ल'ग प्रस्ताव रखने छलीह - बौआ, पौत्रक उपनयन अछि, ज'न-बनिहार के साड़ी-धोती देबै ने? जुड़ायत त' बड्ड आशीर्वाद देत। अहाँक बाबू त' अहुँक उपनयन मे आ अहाँक बच्चाक उपनयन मे कतेक वस्त्र दान केने रहथि, से त' मोने हयत। आशीर्वाद कखनो

अकारथ नहिं होइ छै।

सुनितहिं पुतहुक भौंह-कपाड़ सिकुड़ि गेलैन्ह - ई त' एकदम्मे भसिया गेल छथिन्ह। आब हिनकर वला जमाना रहलै? सब कचड़ि क' खा लेत, पहिर लेत आ मुँह चमका क' कुचेष्टा। करैत चल जायत। आब सबके साँय - बेटा पंजाब, नेपाल, दिल्ली कमाय लागल छै; पहिने वला स्थिति नहिं छै।

बेटाक उत्तर सेहो नकारात्मक छलैन्ह - नहिं त' बरूआ-बापक ओ सट्ठा छैन्ह नहिं त' हमरा ओ कूबत अछि जे एहि तरहक बात सोचबो करी। माय, आब तोंहू अपन समय क बात बिसरि जो।

बाबीके कहक इच्छा भेलैन्ह - तैयो बूढ़ - पुरान फाटल आ मैले धोती-नूआ में रहैत अछि। ओ हतप्रभ छलीह। पुतहु के बजैत सुनने रहथि - पाईक कोनो मोल छै? हमर साड़ी तीन हजार मे, बरूआ मायक साड़ी अढ़ाई हजार मे, बरूआ क डिजाइनर धोती-कुरता, चद्दरि तीन हजार मे। आर-त' आर बड़की बाबी क साड़ी सेहो दू सय मे।

बड़की बाबी के अपन साड़ी-क सूत आ रंग देखक इच्छा भेलैन्ह। मुदा कियो कोनोटा कपड़ा नहिं देखयने छलैन्ह। जँ अपन साड़ी बाबी नापसन्द क' दितथिन्ह त' असमंजस क स्थिति भ' सकैत छलै। जखन बड़का बाबूक बोल-बाला छलैन्ह त' बड़की बाबी हरदम अपना लेल फैन्सी रंग आ सूत महीन चुनैत छलीह। आब सूतक संग सामंजस्य क' लेने छलीह, रंग क बेर मे असौकर्य भ' जाइत छलैन्ह। ओहुना सब बौर्डर-प्रिन्टक साड़ी अनैत छलैन्ह। ओ बुझैत छली जे बरूआ के माय एखन बहुरिये छथिन्ह, हुनकर कोनो चलती नहिं छैन्ह। बरूआक दादी माने बड़की बाबीक पुतहु बड्ड बुधियारि छथिन्ह। भीख देबा सँ केने काल पहिने साड़ी कोचिऔने एथिन्ह आ हूलिमालि मे दस गोटे क बीच हुनका डॉर मे साड़ी लपेटि पहिराय देथीन्ह।

बड़की बाबी बरूआ के भीख मे कतेक टाका देथिन्ह अहु लेल मोन मे गुनधुन भ' रहल छलैन्ह। परपौत्रक उपनयन देखब कम भाग्यक गप्प नहिं छै। हुनका वश मे त' आब किछु छैन्हिये नहिं। ओहो पुतहु सँ माँगय पड़तैन्ह। पुतहु छथिन्ह जे कोनो बात मे हुनका ल'ग खुजिते नहिं छथिन्ह। हुनकर इच्छा भेलैन्ह जे अपन बेटा के बजाय मोन क गुनधुन दूर क' लेथि। बजयला पर बेटाक पुरने गप्प-मोन ठीक छउ ने? गठिया क दर्द बढ़ि गेलौ? दू-चारि दिन दर्द बर्दाश्त कर तखन वैद्य जी सँ दवाई आनि देबउ। हे, हम कने पाहुन सबके देखने अबैत छी। बाबी पुनः हुइल माइलक भरल घर मे एसगरि बैसल रहि गेलीह।

अकस्मात तीन-चारि टा नेना दउरैत-खेलाइत बाबीक सोझाँ सँ जा रहल छलै। ओहि मे बरूआ के देखि बाबी हुलसि क' पकड़य चाहलखिन्ह। मुदा ओ त' तीर जकाँ हाथ छोड़ा क' परायल। बड़की बाबी के सन्तुलन नहिं रहलैन्ह, ओ ओघराय गेलीह। घोल भ' गेलै - बड़की बाबी खसि पड़लीह। स्थिति बुझला पर पुतहुक लोहछल सलाह भेटलैन्ह - शुभ-शुभ क' काज समाप्त होवय देथुन्ह। अनेरो आफद के नहिं बेसाहथु। बड़की बाबी र्निविकार भावे टुकुर-टुकुर तकैत रहलीह। मोन कचोटि रहल छलैन्ह - हमरो ल'ग कियो कियाक नईं बैसैत अछि? हमरो कोनो समाद कियाक नईं कहैत अछि? हम त' ककरो, अनोन गप्प नईं कहैत छियै आ ने कोनो बात सँ वर्जित करैत छियै।

एहि घटनाक बाद सँ नेना सब ओंघरा-ओंघरा क' सबके देखायब शुरू क' देलक - बाबी खसली धराम आ देखनाहर सब लोट-पोट भ' रहल छल। बड़की बाबीक हृदय मे टीस उठैत छैन्ह - एक समय छल जे ओ घर क धूरी छलीह; मुदा मुखिया छलखिन्ह बड़का बाबूक माय। मायक प्रसन्नता बड़का-बाबू लेल सर्वोपरि छलैन्ह। आई बड़की बाबीक सब बात महत्त्वहीन आ नेनमतिपूर्ण भ' गेल छलैन्ह। ओ एकटा अनमाना भ' गेल छथि, हास्यक पात्र।

दू पहर दिन बीतल हेतै, बाबी के भूख जोर मारि रहल छलै, मुदा भीखक आयोजनक बादे भोजनक आयोजन

छलै। किछु बजवाक साहस नहिं भ' रहल छलैन्ह। फेर हँसीक पात्र बनि जइतथि। कनेक कालक बाद बैंड बाजाक दुदुम्भी बाबीक माथ के झमाड़ि देलकैन्ह। सिनेमा गीतक धुन पर नेना सब नाचि रहल छल। बाबी के अपन बेटाक उपनयन मोन पड़लैन्ह। आँचर पर नटुआ नचवओने छली। कबुला छलैन्ह। रसनचौकी-पार्टी मँगवओने छली। झलुआ पिपही पर भरि दिन नचारी आ सोहर बजेने छलै। संग मे गेनाक ढोलक थाप सबके झुमा दैत छलै। ओहू जमाना मे एकावन टाका नटुआ आ एकावन टाका रसनचौकी वला नेने रहैन्ह। ओ अपन खुशी सँ पाँच टाका वला जनता धोती सबके पहिरेने छलखिन्ह। जय-जयकार भ' गेल रहैन्ह।

भीखक बेर संभवत: भ' गेल रहै। पुतहु झटकारने अयलखिन्ह आ बड़की बाबी के नूआ पहिरा एगारह टाका हाथ मे धरा देलखिन्ह, भीख देबा लेल। बाबीक प्रश्न छलैन्ह - हम एतबे देबै? उत्तर भेटलैन्ह- हिनकर आशीर्वादे बड्ड पैघ हेतै। टाकाक कोन मोल छै? बाबी के रहल नहिं गेलैन्ह, पुछलखिन्ह - अहाँ की देबै? - हम त' सोना क मट्ठा बनवेने छियै, गामेक सोनार सँ। बाबी के आर किछु पुछवाक इच्छा नहिं भेलैन्ह। अवसर देबा लेल पुतहु ठार्हो नहि रहलखिन्ह। बाबी के अपन बुद्धि पर खौंझाहट भ' रहल छलैन्ह। हुनका ल'ग सोना-चानी क कम गहना नहिं रहैन्ह। सय सँ उपर चानीक सिक्का बचा क' रखने रहैथ। किछु स्वेच्छा सँ किछु लाचारी मे पुतहु के द' देने रहथिन्ह। बेटा-पुतहुक कहब छलैनह - बैंक क लॉकर मे सुरक्षित रहत गाम पर चोरि भ' जायत।

ताँतवला साड़ी बाबीक देह पर फलकल छलैन्ह। भ' रहल छलैन्ह -कियो साड़ी के सीट दितय। अपना झुकि क' काज कयल नहिं होइत छलैन्ह। मुदा बड़की बाबी लेल पलखति ककरा छलै। मोन के बहटारय लेल बाबी नचारी गुनगुनाय लगलीह। दूरे सँ जे सुनलक से बिहुँसल - बाबी परपोताक उपनयन मे मगन छथि। भीख देबाक बेर भेलै त' बहुरिया बाबीक डेंग ध' ल' गेलखिन्ह। एकटा डाली मे लाइ, चूड़ा, तिलबा, चिल्लौड़, द'क' देलखिन्ह। बरूआ जखन कहलकैन्ह - बाबी! 'भिक्षाम देहि', त' ओ नेहाल भ' गेलीह। परपौत्रक स्थान पर अपन पुत्रक रूप देखाइ परलैन्ह। भक तखन टुटलैन्ह जखन बरूआ मुसकियाइत कहलकैन्ह - बड़की बाबी ओरिया क' रहू, फेर भटाक भ' जायब। बाबी के भेलैन्ह सब दबल हँसी हँसि रहल छल। बहुरिया के बाबी कहलखिन्ह जे हुनका अपन विछान पर द' आवय लेल। ओतय दू टा कोराक चिलका पहिने सँ सूतल छल। एक कात मे बाबी कने डाँर सोझ करबा लेल पड़ि रहलीह। सौंसे देहक हड्डी कटकटा उठलैन्ह जेना बुढ़ापाक असमर्थता पर ओहो हँसि रहल होइन्ह। प्रत्येक जोड़क पीड़ा आर मुखर भ' उठलैन्ह।

डाँर ठीक सँ सोझ भेलो नहि छलैन्ह कि बहुरिया थारी मे भोजन आ लोटा मे जल आनि स्टूल पर राखि देलखिन्ह। भोजक पाँत मे बीर केरा पात परक भोजन अनेरो स्वादिष्ट भ' जाइत छै। पाँत मे भोज खेवाक इच्छा बाबीक मोन मे हिलकोर ल' रहल छलैन्ह। इहो भ' रहल छलैन्ह - भोजक सब व्यंजन कतहु थारी मे अँटल होई? ओतय बैसला पर सब किछु खइतहुँ। मुदा अपन शारीरिक असमर्थता आ पुतहुक सिकुड़ल भौंह मोन पड़ि गेलैन्ह। चुप्पे भोजन क' लेलैन्ह। कियो परसन लेल पुछैयो नहि अयलैन्ह।

हुइल माइल मे तीन दिन कोना बीत गेलै ककरो पतो नइ चललै। चारिम दिन रातिमक बिध समाप्त भेल। बरूआक मामा भीखक झोड़ा उतारलैन्ह। सबके लाई आदि भेटलै। बाबी के मात्र सुंगध सँ संतोष करय परलैन्ह। एक त' दाँतक कष्ट दोसर पेट खराब हेवाक ड'र। ते ँ कियो पुछैयो नइ अयलैन्ह।

बरूआ नव-वस्त्र, पाग, जूता पहिरि मेघम्बर लगा घुमि-घुमि क' प्रसन्न मोने आशीर्वचन आ गोड़ लगाई संग्रह क' रहल छल। बड़की बाबी पुन: मात्र आर्शीवचन द' सकलखिन्ह।

रातिम क प्रात सब जयवा लेल अपन-अपन वस्तुजात, सनेश बन्हलक। पाहुने सब संगे बरूआक माय-बाप विदा भ' गेलखिन्ह। गोर लागि क' बहुरिया चुपेचाप एकटा पचास क नोट मोड़ि क' बाबीक मुट्ठी बन्द क' देलखिन्ह। स्नेह आ विवशताक भाव देखा विदा भ' गेलखिन्ह। दोसर दिन बड़की बाबीक एकलौता बेटा अपन कनियाँ आ दसेक मोटा ल' माय सँ विदा लेवय अयलाह। ब्यौरा देलखिन्ह - गाय, महींस पोसिया लगा देलियौ। तोरा कोनो चिन्ता नई रहतौ। रोज आधा सेर गायक दूध बुधना द' जेतौ। बुलकी भानस क' देतौ। ओरिया क' रहिहें एखन बड्ड खर्च भ' गेल। हाथ पर पाई नई रहल। बाबूक पेन्सनवला पाई भेटतैन्ह त' अगिला मास पठा देबौ। आश्रमक सब सामान घर मे छौहे आदि-आदि।

बड़की बाबीक मोन भेलैन्ह जे बाजथि - बौआ! अहू मास मे त' बाबूक पेन्सन उठओनहिं हयब। मात्र दू सय हमरा दैत छी ताहू मे कोताही? एसगर पीड़ा असह्य भ' जाइत अछि, राति क' निन्न बिला जाइत अछि। एतेक बड़का घरक नीरवता डेराउन लगैत अछि। अहाँक डेराक कोनो कोन माय लेल खाली नहिं अछि? एतयक ओगरवाही सेहो बुधना क' देत। मुदा बाबी चुप्पे रहलीह। अपन विवशता पर नोर खस' लगलैन्ह। बेटा बुझलखिन्ह माय ममतावश कानि रहल अछि। बोल भरोस द' विदा भ' गेलाह। ❑

अर्न्तद्वन्द्व

जसीडीहस्टेशन।यात्रीकरेलमपेल।खोमचावला,फेरीवलाकआपाधापी।निःसंकोचमुँहचलबैत,केरा,चिनियाबदामक खोंइचा, दोना, ठोंगा आ पानक पीक आदि यत्र-तत्र फेकैत यात्री लोकनि। खोंइचा, दोना संगहि यात्री लोकनि पर हमला करैत मांछीक झुंड। बाबू-भैया, आइ-माइक परस्पर हाक पर हाक। नांगरि डोलबैत, कनेक कनछियाक' सब किछु लपकक प्रयास मे यत्र-तत्र कुकुर सब। झीसी पड़ि गेला सँ वातावरण पूर्णरूपेण खिच-खिच भ' गेल छल। बाबा वैद्यनाथक दर्शन लेल कयल श्रम आ आनन्द के ई परिवेश तीत क' देलक। एहि वातावरण सँ मुक्ति पयबा लेल बड़ व्याकुलता सँ ट्रेनक प्रतीक्षा मे छलहुँ। बीच-बीच मे निर्धारित ट्रेन सबक अयवाक समयक घोषणा रेलवे-ऑफिस सँ भ' रहल छलै। हमर प्रतीक्षित ट्रेनक लेल अन्तिम घोषणा छल ई ट्रेन अपन निर्धारित समय सँ मात्र एक सय बीस मिनट बिलम्ब सँ चलि रहल अछि।''

संजोग सँ एकटा बेंच पर बैसवाक जगह भेट गेल छल। बेंच पर पालथी मारि पत्रिका पढ़ि मोन बहटारक प्रयास मे छलहुँ। कनेक कालक बाद हमर कीनल पत्रिका के एक सभ्य व्यक्ति अपन अधिकार मे लैत कहने छलाह – ''भाभीजी, प्लीज जरा देखकर देते हैं।'' प्लीज शब्दक 'विनम्रता' हमरा मौन स्वीकृति लेल विवश क' देने छल। मोन बहटारक अन्तिम साधन ससरि गेल।

आब की कयल जाय - एहि तारतम्य मे छलहुँ, तखनहिं पाछू सँ रूनुर-झुनुरक बीच खनकैत आवाज आयल – ''आन्टी, प्लीज, हम आपके पास बैठ जायँ?'' प्लीज शब्दक करिश्मा हमरा पुनः पाछू घुमओलक। देखल - दूनू दिस दू नवयुवक सज्जन, बीच मे एक नवयुवती सजनी। तीनू के देखि 'हम' शब्द पर ध्यान गेल। तीन 'हम' के बैसय देवाक लेल हमरा बेंच छोड़िक' ठारह भ' जाय पड़ैत। कारण तीन महिला पहिने सँ ओहि बेंच पर बैसल रहबे करथि। तखने स्थिति के भँपैत एक सज्जन चहकलाह – हम नहीं सिर्फ यह बैठेगी। यह के देखि हमरो मोन चहकि गेल। 'यह' चेहरा-मोहरा, कद-काठी, वस्त्र-भूषण, हाव-भाव सँ पूर्ण रूपेण विमोहित क' लेने छलीह। माथक चौड़ा सिन्दूर, हाथक

मेहदी, चमकैत लहठी, मोती लागल टिकली, नवविवाहिता हेवाक संकेत द' रहल छल। जड़ीक काज कयल सलवार-कुरता, नागरा जूती, कान, नाक, गरदनि, हाथक गहना संग रूनुर-झुनुर करैत पायल सँ ओ आवेष्टित छलीह। केओ पुरुष जँ एना विमुग्ध भेल देखितैक त' संभवत: ओकरा संग क दूनू सज्जन ओकरा अंग-भंग क' दितैक। हमरा विमुग्ध भेल देखैत तीनू मुस्की द' रहल छल। माँछी भिनकैत वातावरण मे स्निगधा, सुगंधा के ल'ग बैसयवाक प्रस्ताव प्रियगर लागल। बगल मे बीड़ी पीबयवाली दूनू महिला सँ कनेक दूरी बनवैत हम अपन पालथी तोड़ैत सिकुड़ि गेलहुँ आ 'यह' के बैसवाक व्यवस्था भ' गेलनि। युवती के बैस गेलाक बाद दूनू सज्जन ओकरा सामने ''अहाँक आज्ञाकारी'' (your most obedient) क भाव मे ठारह भ' गेलाह। तखन हमर दृष्टि दूनू युवक पर गेल। चेहरा-मोहरा आ परिधान मे दूनू आकर्षक लागि रहल छलाह। कुल मिलाक' त्रिदल अपना के आधुनिक हेवाक परिचय द' रहल छल।

दिमागी मशीन के सेहो किछु-ने-किछु काज त' चाहबे करी ओहो निरर्थक बैसल नहिं रहि सकैत अछि। हमरो मोन मे उत्सुकता जागल। हाव-भाव आ बाजव सँ ओहि स्निगधा, सुगंधाक नहिं त' नाम बुझबा मे आबि रहल छल आ नहिं त' ओकर जोड़ीदार आ मित्र के अलग-अलग ठेकानि पाबि रहल छलहुँ। आँखि वातावरण के निरखि रहल छल मुदा मोन आ कान छल जे त्रिदल दिस ससरल छल।

त्रिदलक उल्लास आ आनन्द नुकयने नहिं नुका रहल छलै। युवतीक गरदनि मे सोनाक चेनक संग बाबाक पागक बद्धी छलै आ दूनू युवकक कलाई पर पागक टुकड़ी लपेटल। सामानक संग पेड़ाक साजी, जे बाबा धाम सँ आयल यात्री होयब स्पष्ट क' रहल छलै। अनुमान कयल, बियाहक बाद जोड़ी आ मित्र बाबाक दरबार मे हाजरी द' आबि रहल अछि। तीनूक बयसक अनुकूल गप्पक प्रसंग मैना जकाँ छने अई डारि त' छने ओइ डारि उड़ि रहल छलै।

एक युवक महिला के सम्बोधित कयलैन्ह - मीनू! हमर एक उत्सुकता शान्त भेल। तीनूक गप्पक क्रम आगू बढ़ल - मोन अछि बियाह मे गोपाल बाबू सँ परिचय करेने छलहुँ? मीनूक माथ स्वीकारात्मक रूप मे डोललैन्ह। गोपाल बाबू कतेक स्मार्ट छथि? आ हुनक पत्नी?

दोसर युवक टीप देलक - पचफुट्टी, गोल-मटोल। जखन दूनू स्कूटर पर बैसैत छथि त' देखयवला दृश्य रहैत अछि। ओ पचफुट्टी दू हाथक बैग लटका लैत अछि। एक हाथे बैग सम्हारैत आ दोसर हाथे लपकि-लपकि क' गोपाल बाबू क डाँर पकड़ैत रहैत अछि। खूबी ई जे गोपाल बाबू सतत ओकर आगू-पाछू करैत रहैत छथि। की मजाल जे बिना पुछने एक डेग उठओताह वा कोनो महिला दिस धोखो सँ आँखि उठा लेताह।

मीनू- हुनकर पत्नी प्रोफेसर छथिन ने? एक युवक - त' को भेलै? कोन तीर मारि लेलैन्ह? दोसर युवक - जँ तोरा ओहन भेट जाउ? उत्तर छलै — हम ससरफानी लगा लेब। वाक्य पूरा हेबा सँ पहिने मीनू युवक के एक धक्का देलैन्ह आ तीनू लहालोट भ' गेल। पुन: एक युवकक उल्लसित स्वर सुनायल - ओहि दिन तोरा सुनीता सँ भेट करेने रहियौ ने?

मीनू - ओ त' सुन्दरि अछि।

दोसर युवक - मुदा ओकर बाजब? बाप रे! सोझे तूफान मेल। ओ युवक दू लाइन बाजि सुनीता जकाँ तूफान मेल भ' गेल छल। दूनू युवक एक दोसर के पकड़ि ठहाका लगओलनि त' मीनू सेहो पाछू नहिं छलीह। दूनू युवक एक दोसर के हाथ पकड़ि तेना घिचलैन्ह जे खसैत-खसैत सम्हरलाह।

त्रिदलक क्रियाकलाप हमर मानसिक प्रक्रिया के अर्द्धविराम तक नहिं लेबय द' रहल छल। अर्न्तद्वन्द्वक तीव्रता समाप्त नहिं भ' पाबि रहल छल। भाव आयल - पूर्वक पांचाली दूचाली भ' त' ने अवतरित भेल छथि?

अपना पर धीया-पूताक देल टिप्पणी मोन पड़ल – माँ! तों कखनो क' सतरहम शताब्दीक लोक जकाँ गप्प करैत छे ँ। मोन के झटका देल। आखिर हम एकरा सबक विषय मे एतेक कियाक सोचि रहल छी? एहू ट्रेन के आइये एतेक विलम्ब करवाक छलै। उधार लेल पत्रिका वापस भेट गेल छल। पत्रिका खोलि ओम्हर ध्यान बहटारबाक प्रयास कयल। ओतहु नवके पीढ़ी पर आलोचना छल। अनचोके मे हमरा ठोर पर मुस्की आबि गेल। मीनू ओकरा देखलक। मीनू सँ आँखि मिलला पर बुझायल ओकरा ई नीक नहि लगलैक जे सतरहम शताब्दीक लोक ओकरा लोकनिक दुनियाँ मे हुलकी दैक।

संभवत: मीनूक आँखि दूनू युवक के इशारा कयलकैक आ दूनू अपन-अपन बैग खसा मीनू सँ सटि क' बैस गेल। किछु क्षण वातावरण मे चुप्पी पसरल रहल। मीनूक फुसफुसाहटि चुप्पी तोड़लक। एक युवक सँ ओ पुछलैन्ह - तो ँ भोलाबाबा सँ की मँगले ँ? युवकक गम्भीर भाव मे उत्तर छलै – सब बात बाजल नहिं जाइत छै।

मीनू पुन: अपन प्रश्न दोसर युवक सँ कयलक। युवकक उत्तर छलै - तोरा। पहिल युवक ओकरा पीठ पर कसिक' एक मुक्का देलकै आ तीनू हो-हो क' हँसि पड़ल। लागि रहल छलै जेना हँसीक खजाना तीनू आइये लुटा देब' चाहैत छल। एहि बेर हम सतर्क छलहुँ। बगल मे बैसियो क' कानक बहीर आ मोन के पत्रिका मे केन्द्रित करक भंगिमा मे छलहुँ। मुदा मोनक अन्तर्द्वन्द्व फेर हुलकी मारलक – पांचाली कि दूचाली?

किछु क्षण लेल तीनू मौन छल – एक दोसर के निहारैत। चुप्पी पुन: मीनू तोड़लक। तों सब त' तेना चुप्प भ' गेल छे ँ जेना मातम पुरसी मे लागल छे ँ। एक युवक दिस उन्मुख भेल – तो ँ अपना भौजीक मसियौत बहीन के देखय गेल छले ँ त' की भेलहु? कहीन ने? कने कहीन ने?

युवक मोन पाड़ैत बाजल – अच्छा ओ! बाप रे! ओ त' हमरा कहियो ने बिसरायत। दोसर युवक सेहो साकांक्ष भेल आ तीनूक मूड़ी कनेक आर सटि गेलै। युवक बखान शुरू कयलक– परीक्षा द'क' हम परूकाँ साल भौजी ओतय गेल रही। भौजी पहिनहिं अपन मसियौत बहीनक एक छिट्टा प्रशंसा क' चुकल छलीह। संगहि इहो जे बहीन हमर आनर्स ग्रैजुएट अछि, जूडो-कराटे जनैत अछि। हमरा मादे नहिं जानि की बखान कयने छलीह। भौजीक बहीन के देखक या ओकरा सँ गप्प करक नाम पर हमरा पसेना छूटय लगैत छल। संबंधी परिवार मे जानल-सुनल रहक कारणे ँ पकड़यवाक पूर्ण संभावना छल। जखन पहिल साक्षात्कार भेल त' ओकर सम्बोधन छलै -हेलो! हमर मुस्की सँ प्रत्युत्तर भेटलै त' चालू भ' गेल छल - जखन बहीन सँ भेट होइत अछि त' अहाँक बड़ाई करैत रहैत अछि। सत्ते अहाँ मे एतेक गुण अछि? हमरा द' बहीन अहाँके की सब कहने अछि? हम किछु उत्तर नहि देने छलियै। मुदा कहक इच्छा भेल छल – अहाँ 'बोतल' छी। युवक पुन: बाजल – ओकर वश चलितै त' तुरत हमरा फिल्मी स्टाइल मे जयमाला पहिराय दितय। हम त' कनेक काल बाद ओतय सँ फुरसति पाबि गेल छलहुँ। भौजी के स्पष्ट किछु नहिं कहलियैन्ह। आब ओकर स्वर व्यंग्यात्मक छलै – जँ जूडो-कराटे आ हाय-हेलोवाली गरदनि परि गेल त' बूझू जे परिवार सुधरिये जायत।

कने खौंझायल सन मीनूक स्वर सुनवा मे आयल - हेलो नहिं कहितौक त' की पयर छूबि प्रणाम करितौ या छुई-मुई भ' पैरक अंगुठा सँ माँटि कोरैत? आब माँटि कतय प्लास्टर पर अँगूठा रँगड़ैत। ओकर दोसर प्रश्न छलै – हमरा मादे अपने ँक की विचार अछि? कने सुनि त' ली?

पहिल युवक मौन छल? आब दोसर युवक टिपलक – हमरा सोझाँ हमर पसिन्न के ई दूसत एतेक साहस नहि छैक। की रौ? आ तीनू ठहाका लगओलक।

एतेक कालक तारतम्यक बाद मीनूक पति आर मित्र के चिन्हित क' सकलहुँ। मोन हल्लुक भेल, जेना कोनो

अंकगणितीय प्रश्न हल केने होई। आब दोसर अंर्तद्वन्द छल। जकरा सबके देखला सँ समयानुसार आधुनिक हेवाक भान होइत अछि ओकरा पारिवारिक जीवन मे हाय - हैलो नहिं त' की पारम्परिक संयम चाहियैक? सुनीता आ गोपालबाबू पर हँसनिहार स्वयं ओइ दुनियाँ सँ कतेक दूर अछि? मित्र आ पति के चिन्हित करवा मे घंटों लागि गेल एहन व्यक्ति अपन व्यक्तिगत जीवनक खाका केहन चाहैत अछि? हम अपन मोन के मनयवाक प्रयास कयल - शारीरिक परिपक्वता आबि गेल छै मुदा मानसिक परिपक्वता अयबा मे आर समय लगतैक।

माइक पर उद्घोषणा गूँजल – पटना जाइवला ट्रेन प्लेटफार्म नम्बर दू पर आबि रहल अछि। सब गोटे हड़बड़ा क' माल-असबाब उठा सर्तकता सँ ठारह भ' गेलहुँ। ❑

कमौआ

स्कूल मे गर्मी-छुट्टी आरंभ हेवा मे एखनहुँ एक सप्ताह बचल छलै। धीया-पुता सब गामक आम, आमक गाछी, दूध-दही, खेत-खरिहान, ऐल-फैल खेलेवाक जगह, गामक संगी-साथी आदिक चर्चा मे दिन-राति डूबल रहैत छल। बच्चा सबक फुसफुसायल शब्द सुनवा मे आयल छल - गाम मे खूब मजा अबैत छै - नहिं त' होम-वर्क आ यूनिट टेस्टक चिन्ता, नहिं त' भोरे स्कूल-बस छुटवाक डर। पोखरि मे गोहि-गोहि खेलयबा मे अलगे आनन्द रहैत छै।

निरसू पर गाम जयवाक कोनो उल्लास या प्रतिक्रिया बुझवा मे नहिं आयल जखन कि धीया-पुता कोनो विषय पर गप्प करय ओ सन्हियेवाक प्रयास अवश्य करैत छल। भनहिं मोजर नहिं भेटौक। एक वर्षक भीतर ओ अपना के परिवारक अभिन्न अंग मानि नेने छल।

परूकाँ छुट्टी मे गाम गेल रही। डेराक काज मे सहायता आ हमर अनुपस्थिति मे ओगरवाही क' सकय एहन एकटा विश्वासी लोकक लेल बड्ड व्यग्रता छल। मुदा गामक काजक ज'न-ब'न सब दिल्ली, कलकत्ता, आसाम, पंजाब ओगरैत छल। जे गाम पर छल ओ अपन विवशता देखाय गाम छोड़वा लेल तैयार नहिं छल।

एक दिन निरसूक दादी के चाउर छटबा लेल बजवेने रहियै। दादीक सधल हाथ उक्खरि मे समाँट बजारने जा रहल छलै आ निरसू मुलुर-मुलुर कखनो दादी के, कखनो उक्खरि मे सँ छिड़ियाइत चाउर के त' कखनो आँगन मे अबैत-जाइत लोक के निहारि रहल छल।

ओहि समयक निरसूक रूप साकार भ' उठल - कुपोषण सँ लिक-लिक करैत देह, कोहा सन गोल पेट, सुरकैत नाक, भगवा क रूप मे एक हाथक मैल-फाटल कपड़ा डाँर सँ बान्हल। भुट्ट हयब त' आनुवंशिक गुण छलै। समाँटक संग निरसूक दादीक मुँह सेहो अवाध गतिये ँ चलि रहल छलै। भरि गामक घटना, दुर्घटना सुना रहलि छल। ओही क्रम मे कहने रहय - एकर नाम निरसू कियाक पड़लै से बूझल अछि? एकरा मायक बाल-बच्चा जीवते नई छलै। एकर जन्म भेलै त' एकरा मरघट मे फेक अयलै। हमहीं मरघट स' उठा अनलियै आ पोसबो केलियै। पोसितियै कोना नई? दुइये बरखक रहै त' माय हैजा मे मरि गेलै।

मरघट मे फेकि अयबाक कारण पुछला पर ओकर आश्चर्यमिश्रित उत्तर छलै – आहि रौ बा! अहाँके सत्ते नईं बूझल अछि? नकारात्मक उत्तर पाबि ओ अपन ज्ञानक मोटरी खोलने छल - जकर बाल-बच्चा नेने मे मरि जाइ हइ ओ जँ जनमिते बच्चा के कतौ अनस्थरि मे फेक दई या ककरो हाथे बेच दई त' ओ बच्चा जीब जाइ हइ। एकरा निरसि क' फेक अयलै त' जीब गेलै नाम परलै निरसू। एकर छोटका भाई के काकी एक पाई मे कीन लेलकै, त' जीब गेलै।

नाम परलै बेचुआ। एकरा सँ पहिने चारिटा जनमल रहैं सब धोखा द' गेलै।

मुँहक संग निरसूक दादी क हाथ अवाध गतिये चलि रहल छलै। आब ओ छाँटल चाउर के फटकय लागलि छल। कनेक आत्मीयता क संग पुछला पर ओ निरसूक वयस, ओइ फगुआ सँ ओइ फगुआ आ तकर बाद जोड़ि क' एगारहम कहने छलि। मुदा देह-दशा आ हाव-भाव सँ ओ 6-7 वर्ष सँ बेशीक नहिं बुझा रहल छल।

हम अपन बेगरता सँ आन्हर छलहुँ। निरसू क दादी के गप्पक क्रम मे पुछने रहियै - कियो होशगर छौड़ा नजरि मे अछि जे डेरा पर हमरा संगे रहत? भानस हम अपने करैत छी। दाई अबैत अछि जे झाड़ू-पोछा, चौका-बर्त्तन क' जाइत अछि। संगे एकटा रहला पर छोट-छीन दोकान क काज आ घर क काजक खगता नहिं रहत। निरसूक दादीक अनमनायल सन उत्तर भेटल - हमरा टोला मे एहन कहाँ कोई हइ आ अपन हिस्साक उखराही आ फटकन खोंइछ मे उझील निरसूक डेंग ध' झटकि क' विदा भ' गेल छलि, जेना हम निरसू के छीनि ने लियै।

हमर विदा होयबाक दिन मे भोरे-भोर निरसूक दादी आंगन आबि कहने छलि - निरसूआ के अपना संगे नेने जेती? हिनका सब ल'ग रहत त' छौड़ा जीयत त'? भरि पेट अन्न भेटतै।

हम आशंकित प्रश्न केने छलियै – ओ बड्ड बच्चा छै, तोरा सब बिना रहतौ? कान' ने लागय। ओ आश्वस्त कयने छलि - देह पर झाँपन आ पेट मे अन्न रहतै त' देह घीचेतै। सिखा देबै त' सब काज सीख लेत। जीयत त' अहीं ल'ग जिनगी खेप लेत। अहाँ ल'ग रहत त' हमर मोन निश्चिन्त रहत। अपन बच्चा बुझि क' रखबै। जे खुशी सँ मोन हो से दरमाहा देबै। हम किछु नईं कहब। दू दिन पहिने आ ओहि दिनक गप्प मे कोनो तालमेल नहि बुझायल छल। ओ पुन: आक्रोश मे बाजल रहय – माय मुइने बाप पित्ती भ' जाइत हइ। हमरा सँ बरदाइश नईं होइ हइ। निरसुआक बाप सगही के ल' क' रहैया। अपने दूनू बेगती आ लबकीक जनमल दूनू बच्चा तीमन-भात, माँछ-भात, तरूआ-तरकारी खाइत हइ आ अइ दूनू छौड़ा के भरि छिपा माँड़ मे एक मुट्ठी भात द' क' छोड़ि दइ हइ। नूनो नेदारत। दूनू छौड़ा भूख सँ बिलबिलाइत रहैत हइ। जे से, दूनू छौड़ा के घरो ने ढूक दै हइ। हमरे मड़ैया मे दूनू ओंघराई छै। लबकी कहै छै - ''जिन्नक जनमल जिन्न हई, हमरो जिन्न लगा देत। दूनूक दानवक कोड़ल पेट हइ, कहियो नईं भरतै।''

मौगी के कनेको दरेग नईं हइ। हमर कुटिया-पिसिया सँ दूटा छौड़ाक पालन कोना हेतै?

हमरो बेगरताक पूर्त्ति नहिं भेल छल। सोचल नहिं मामा सँ कनहा मामा। छोटका बेटा वला पैन्ट-शर्ट, एकटा साबुन आ दसटा टाका निरसूक दादी के द' ओकरा तैयार क' आंगन आनय कहने रहियै। आशाक अनुकूल निरसू नहा-धो, कपड़ा पहिरि प्रसन्न चित्त आयल छल, जेना नव कपड़ा पहिर नेना मेला देखबा लेल उत्सुक रहैत अछि। बेर-बेर हिला-डोला क' पूछि नेने रहियौ – पटना जा क' दादी लेल कनबेँ त' नहिं? सब बेर नहिं के मुद्रा मे मूड़ी डोलेने छल।

गाम सँ पटना तक के रास्ता मे निरसू एको बेर गाड़ीक सीट पर नहिं बैसल। ठारह उत्सुकता सँ सब किछु निहारैत आयल छल। हमरा ल'ग भरि पेट अन्न, वस्त्र पाबि आ टी.भी. देखि निरसू मगन रहैत छल। बहुत जल्दी काज सीखक प्रयास कयलक संगहि ओकर कपड़ा पहिरबाक ढंग, केश थकरब, बाजब, उठब-बैसब सब किछु मे परिवर्त्तन होइत गेलै। स्लेट-पेन्सिल कीन देने रहियै त' अ-आ आर 1, 2 लिखबाक अभ्यास सेहो करैत छल। कखनो क' कहय - आब गाम जेबै त' दादी के सेहो नेने अयबै। लबकी (नवली माय) ओकरो खयबा लेल नईं दै छै। लबकी शब्दक संग ओकरा चेहरा पर घृणाक भाव पसरि जाइत छलै। बीच-बीच मे बोखार भ' जाइ त' पुछने रहियै - गामो पर एना होइत छलौ? कहने रहय – हमरा दादी के बोखार बूझय नईं अबैत छलै। बोखारक संग डाक्टर लीभर बढ़क दवाई देने रहथिन्ह। लीभरक दवाई ओकर पेट के सेहो सटका देलकै।

बरख लगैत देरी नईं भेलै। समय के जेना पाँखि लागल रहैत छै। स्कूल मे सब सँ लम्बा छुट्टी गरमीयेक छुट्टी रहैत छै। एहि छुट्टी मे सपरिवार गाम जयवाक नियम बनल छल। अहू बेर छुट्टी मे गाम जयवाक नाम पर दूनू बच्चा आह्लादित छल। मुदा निरसू उदास भ' पुछने छल-गाम मे हम कतय रहब? हवेली मे कि दादी संगे आ कि बाउ संगे? हम ओकर अंदेशा भँपैत आश्वस्त कयने रहियै - हवेली मे रहबे ँ। ओतहि खयबे ँ, सुतबे ँ आ फेर हमरे संगे आपस पटना अयबे ँ।

हमरा सबके गाम पहुँचैत देरी सौंसे खवास-टोली मे सोरहो भ' गेलै - निरसूआ गाम आयल छै। छौंड़ा मालिक सब जकाँ मोटर गाड़ी पर बैस क' आयल छै। एकदम बभनटोलीक बच्चा सन लगैया। छौंड़ा गोरा गेल छै। पैन्ट-सट, जुत्ता, पिन्ह क' मालिकक बेटा सन लगैया। पूरे बरख दिन पर आयल छै। खबरि पबैत देरी निरसूक बाप, दादी आ लबकी सब पहुँचल रहय। बड़ सिनेह सँ अपना आंगन ल' गेलै।

प्राय: एक घंटा बाद निरसूक बाप आ दादी पहुँचल छल। बाप कहने रहै - दरमाहा दितियै त' खोराकी क इन्तजाम करितियै। छौड़ा कहैत अछि, माछ-भात खायब। महाजन छौड़ाक अयबाक गप्प सुनितहिं दौड़त। कर्जा सधेवाक छै। हमरा पटना मे निरसूक कहल गप्प मोन पड़ल - सब दरमाहा दादी के देबै। लबकी के पाई छूब' नहिं देबै।

बजबा क' पुछलियै त' बुझनुक जकाँ कहने छल द' दियौ फेर त' सबटा बाउए के करय पड़तै। बाउ कहै छै जे हमरा मायक दवाईक खर्च आ काज (श्राद्ध)क खर्चक कर्ज बांकिये छै। पुछने रहियै - कतेक दरमाहा हेतौ? उत्तर दादी लपकि नेने रहै - हम सब की कहब, जे उचित बुझाय द' दियौ। हम ओकरा लोकनिक परिवर्त्तन पर अवाक छलहुँ। सब पर कोन जादूक असर छलै? आखिर सबहक पेट एक कोना भ' गेलै? तत्काल एक हजार टाका ओकरा बाउ के द' कहने रहियै — जयबा काल आर रुपया हिसाब क' क' देबौ। कियो किछु नहिं बाजल छल। लागल-प्रसन्न मोने गेल अछि। तीन-चारि दिन निरसूक दर्शन नहिं भेल। समाद पठयला पर दोसर दिन धोती पहिरने लद-फद करैत आयल। बच्चा सब देखिये क' हँसि देलकै। पुछने रहियै — एक बैग भरि क' पैन्ट-शर्ट अनने छे ँ, सब की भेलौ? बड्ड सहज भावे ँ उत्तर देने छल - बाउ कहैत छै जे बाहर सँ कमा क' अयला पर तोरा बयस क सब फुलपैन्ट पहिरै छै। तों हाफ-पैन्ट पहिरबें त' सब हँसतौ। आब तों पैघ भ' गेल छे ँ। पुन: निधोख बाजल छल - बाउ कहैत छै हमर घटक अबै छै, बियाह करा देतै।

ओकर सहज बजवाक ढ़ंग पर हमरा हँसी लागि गेल छल। पुछने रहियै — करबही? बूढ़ सुग्गा जकाँ संभवत: अपन बाउ क कहल उक्ति दोहरा देने छल — एखन नईं करबै त' फेर लड़की नईं भेटतै। आरो पैघ भ' जेबै त' राँड़ चाहे छोड़लाही भेटतै। हमरा सब मे लड़का-लड़की के छड़ी सँ नापि क' बियाह होइत छै। सब हमरा सँ पैघ भ' जेतै। हम कने चौल केलियै - कनियाँ के सेहो पटना ल' जेबें?

ओकर निर्विकार उत्तर छलै — धुत, एखन कनियाँ थोड़बे अयतै। ओ त' पाँच साल बाद गौना हेतै तब एतै। हम क्षुब्ध छलहुँ। साल भरि मे जतेक हम नहिं सिखा पओलियै ओहि सँ कतेक बेसी ई मात्र चारि-पाँच दिन मे सीख गेल आ कतेक प्रभावित भ' गेल अपन बाउ सँ। हम पुन: सशंकित मोने प्रश्न केने रहियै — पटना कहिया जयबे ँ?

निरसूक शुष्क उत्तर छलै - बाउ जे कहतै। हम अपनत्व देखेलियै - खेनाई खयबें? ओकर माथ नाकारात्मक रूपे ँ डोललै, कहलक— माय माछ-भात रन्हने छलै। तरूआ सेहो केने छलै।

लबकी अनायासे मायक स्थान ल' नेने रहै। निरसूक महत्त्व पबैत व्यक्तित्व पर आनन्दक संग शंका सेहो उत्पन्न भ' गेल रहय — ई महत्त्व निरसूक छैक या निरसूक सबल भेल काया क या कमायल टाका क? अबोध निरसू के

एकर ज्ञान नहिं छलै जे देह टुटला पर या कमायल टाकाक क समाप्ति पर ओ 'पुर्न मूषिको' सेहो भ' सकैत अछि। ओकर बाद फेर निरसूक दर्शन दुर्लभ भ' गेल वापस अयबा सँ दू दिन पहिने निरसूक पुछारी केलियै। ओकर बाउ आबि क' कहने रहय एखन निरसू दीदीक सासुर, पंडौल गेल अछि। चारि-पाँच दिन बाद आओत। एखन ओ जाइयो नहिं सकत। एहि शुद्ध मे ओकर बियाह करेबै। ओकर पीसा कहैत छलै अपना संगे दिल्ली मे रखतै।

हम ओकर मोन के टेबक प्रयास कयने छलियै - दिल्ली कमाइये लेल जयतौ त' हमरा संगे कियाक नहिं जाय देबही? हमरा ओतय मोन लागि गेल छै। कतेक दरमाहा लेबही कहबे ँ तखन ने? निरसूक बाउक कुटिल हँसी छलै – एतय अछिये नहिं त' की कहू? घटक सब सेहो तंग क' रहल अछि। आर किछु देवाक इच्छा त' नहिं भ' रहल छल तथापि दरमाहाक रूप मे पाँच सय टाका आर द' ओकरा विदा केलहुँ। हम छगुन्ता मे पड़ल बरख दिन पहिनेक निरसू क रूप, दयनीय अवस्था, ओकर दादीक मर्मस्पर्शी कथन, निरसूक बापक बात-व्यवहार आ ओकरा लोकनिक आजुक रूप, रंग-ढंग पर सोचि रहल छलहुँ।

आब निरसू स्वस्थ्य, देहगर बुझनुक भ' कमौआ क रूप मे ठारह छलै। ओ दिल्ली, पंजाब, आसामक कारखाना या फार्म मे काज क' जेबी भरि क' रुपैया अनतै। भ' सकैया किछु दिन बाद कोनो रोग सेहो बेसाहि अनतै। बेनिहार टोलक आधा सँ बेशी पुरूखक त' यैह गति देखि रहल छियै। कनेक प्रसन्नता सेहो भ' रहल छल जे कमौआ भेला सँ निरसूक परिवार मे सेहो मिलान भ' गेलै। ओहो जिन्नक जनमल सँ मनुक्खक जनमलक श्रेणी मे आबि गेल छल। ❑

बताहि

आर०जी० कार मेडिकल कॉलेज आ अस्पताल। अस्पतालक प्रांगण मे चारू कात आ प्रत्येक आउट-डोर विभागक सामने रोगी आ साथी (रोगीक संगे आयल व्यक्ति के यैह नाम देल जाइत छैक) क धरोहि लागल छलै। हमर गन्तव्य छल 'मनोरोग विभाग'। ओतहु वैह हाल। ओतय देखला पर अनुमान लगैत छै जे एहि विकसित आ वेज्ञानिक काल मे कतेक प्रतिशत मनोरोग सँ ग्रसित अछि। डाक्टर, स्टाफ, साथी सब हड़बड़ायल। सब भागम-भागी मे छल तथापि वातावरण मे डेराओन सन चुप्पी पसरल छल, जे अस्पतालक नियमानुसार छल। डाक्टर आर स्टाफ हड़बड़ायल छल जे साढ़े दस बजे 'इनडोर' मे रोगी देखक छलैक त' साथी सब हड़बड़ायल छल जे कोना ट्राम-बसक भीड़ मे रोगी के ल'क' सही-सलामत घर पहुँचब। ठीक एकर विपरीत रोगी सब वातावरण सँ असमपर्कित कियो पयर पासरने बैसल, कियो कनैत, कियो हँसैत, कियो स्वयं सँ गप्प करैत, कियो अदृश्य सँ झगड़ा करैत ....। हम अपन स्पेशल पेपर लेल 'केस-स्टडी' करय ओतय जाइत छलहुँ, जे डाक्टर लोकनि के सेहो इलाजक लेल आवश्यक होइत छैन्ह। सुरक्षाक दृष्टिये दू विद्यार्थी के एक संगे बैसवाक अनुमति छलै। हम आ हमर सहपाठिनी बेरा-बेरी क्रमानुसार पहिने साथी सँ तकर बाद रोगी सँ जानकारी ल' रहल छलहुँ। प्रत्येक रोगीक पाछू माथ बड्ड खपबय पड़ैत छल तथापि मोन खूब लगैत छल। जिन्दगी के नव ढंग सँ चिन्हवाक-बुझवाक ज्ञान सेहो भ' रहल छल। सब रोगीक अलग-अलग जीवनी, परिवारक जीवाक ढंग, विवशता, संबंधक उपयोग आ स्वार्थ आर बहुत किछु। रोगीक साक्षात्कार लेल आयब - जायब चालू छल। क्रमानुसार स्लिप आयल शिप्राक। ओकरा संगे ओकर माय छलै। शिप्रा चुपचाप हमरा सामनेक कुर्सी पर आबि क' बैसि गेल। शिप्राक आँखि ओकर मानसिक स्थिति कहि रहल छलै। प्रत्येक अंग मे अनावश्यक संचालन। हमरा बुझायल ओहो बहुत गहींर दृष्टि सँ हमरा देखि क' बुझवाक प्रयास क' रहल छलि। पहिल दृष्टिये ँ ओ हमरा देखवा मे सुन्दरि लागल।

एकहरा देह, चेहरा मे आकर्षण छलै। पहिरन साधारण। कारी ठोर सँ लिप्सटिक लगयवाक अभ्यस्त बुझना गेलि। बयस 20-21 वर्षक लगैत छलै मुदा ओकर माय कहलक छब्बीसम। ओकर मायके आवश्यक पूछताछक बाद बाहर बैसवा लेल कहने छलियै। हम दूनू सहपाठिनी आँखिये सँ एक दोसरा सँ पुछल जे प्रश्न पूछब के आरंभ करत, त' ओ हमरे इशारा कयलक। हम गुनधुन मे छलहुँ जे गप्प कोना आरम्भ कयल जाय कि हठात शिप्रा चुमकी संग कुर्सी सँ उठि ठार्हि भ' गेल आ अपन हाथक घड़ी दिस देखैत कहने छलि – निरर्थक समय कियाक बर्बाद क' रहल छी? हमरा ककरा संगे जयवाक अछि? माय कहने छलि - ओ अस्वस्थ्य अछि, डाक्टर सँ देखयवाक छैक। फीस देबा लेल पाई नहिं हेतै, डाक्टर साहब ल'ग हमरे परसत। बजबियन्हु डाक्टर साहब के। हमरा फौरमैलिटी एकदम पसिन्न नहिं अछि।

हम ओकर हाथ पकड़ैत बैसवाक आग्रह केलियैक आ टेबुल पर राखल पानिक गिलास ओकरा दिस बढ़ा देने छलियै। ओ एक साँस मे गटगट क' गिलास खाली क' हमरा दिस तकने छल। हम बातके आगू बढ़वैत सफाई देलियै – अहाँ जे बुझि रहल छी से हम सब नहि छी। हमरा अपन जेठ बहिन बुझि अपन मोनक गप्प कहि सकैत छी। भ' सकैत अछि अहाँक समस्याक समाधान निकलि आबय। जँ अहाँ काज करय चाहब तऽ 'डेली-वेजेज' पर एतहि काज भेट सकैत अछि।

प्रत्युत्तर मे ओकर विद्रूप हँसी छलै। फेर कनेक स्थिर होइत बाजल छल – ठीक छै, जे-जे पुछवाक अछि जल्दी-जल्दी पूछि लिय' सब ठाम एसगरे मे पूछताछ होइत छै।

हम कागज कलम ल' साकांक्ष भेलहुँ-अहाँक नाम? माय-बापक देल नाम शिप्रा। टोला-मुहल्ला आ हमरा सँ स्वार्थपूर्त्ति केनहार परिवार लेल -नगिनियाँ। ओकरा सब लेखे हम मात्र डसब जनैत छी। हुँह अहाँ डसब त' किछु नहिं हम डसब त' भ' गेलहुँ नगिनियाँ। हमरा सँ लोक स्वार्थ पूरा करैत अछि त' किछु नहिं, हम स्वार्थ पूरा केलहुँ त' भ' गेलहुँ कुलटा, नगिनियाँ। पछाति जे कियो नव नाम देत ताहि सँ नीक हम आब अपने कहि दैत छियै – देख, हम नागिन छी, मात्र डसब जनैत छीं तखन माय खिसियाबय लगैत अछि। खिसियाइत अछि त' खिसियाब'। तकर हमरा कनेको चिन्ता नहिं।

ओकरा चुप होइत देखि हमर दोसर सवाल छल – अहाँक वयस कतेक अछि? कतेक भाई-बहीन छी? ओ फेर तमसाइत बाजल - अहाँ फेर हमर समय बर्बाद क' रहल छी। बिना पुछने अहाँ हमर जान नहिं छोड़ब। एखन हम तीन भाई-बहीन छी। दूनू हमरा सँ छोट। बहीन स्कूल में पढ़ैत अछि। भाई मैट्रिक कऽ नोकरी लेल जूता घसि रहल अछि। आगू पढ़त तकर कोनो जोगार नहिं छै। बाबा (पिता) पैरालाइसिसक रोगी छथि। हुनकर रहब नईं रहब बरोबरि। ओह, हमरा ओतय दास गुप्ता के अयवाक छैन्ह। आब त' हम लोक सँ घंटा हिसाबे एग्रीमेन्ट करैत छियैन्ह। होटल मे भोजन आ गिफ्ट फ्री।

केहेन एग्रीमेन्ट? ई दास गुप्ता के छथि?

माय सँ सेहो पूछि लेने रहितियै ने? हमरा सँ बिवाह करवा लेल एक नव कैन्डिडेट। सब शुरू मे यैह कहि अबैत छथि – संभ्रान्त, नीक कुलशील वला, समाजक सभ्यता-संस्कृतिक नायक, खानदानी, लाखोंक मालिक। किछु दिन हमरा संगे मौज मस्ती करताह फेर परिवार आ खानदान मोन पड़तैन्ह त' पतनुकान ल' लेताह। तमसाइत फेर ठारह भ' कहलक - हमरा त' अहूँ नीक लोक नहिं बुझाइत छी अनेरे हमरा एतेक काल सँ बझेने छी।

हम असमंजस मे पड़ि गेल छलहुँ। गप्प फुड़ायल – भीतर अहाँक माँ के डाक्टर साहब देख रहल छथि। कनेक काल आर गप्प करब त' अहाँक समय बीत जायत।

ओ बेरा-बेरी हमरा दूनू गोटे दिस शून्य दृष्टियेँ तकलक फेर निरीह भ' पुछलक - की गप्प करब?

हम कनेक नम्र होइत कहने रहियै – अहाँ अपना जीवन सँ संतुष्ट नहिं बुझाइत छी?

ओ कनेक चौंकलि। क्रोध मे भरल प्रश्न छलै - ताहि सँ अहाँके? अपन चिन्ता करू। अहाँक भाई-बाप, घरवला, ऑफिसक काजक नाम पर ओभर टाइमक नाम पर कतय जाइत अछि, की करैत अछि से बुझि पबैत छियै? अपना घर मे सब दूधक धोअल। सबहक घरवाली सावित्री। हमरो माय आस लगेने अछि जे कोनो सावित्री पुतहु आनत आ सत्यवान जमाय। हमरा गरीबीक आगि मे झोंकने अछि। हमर दीदी एही गरीबीक आगि मे झड़कैत-झड़कैत आत्महत्या क' लेलक। तखन हम मात्र बारह बरखक छलहुँ। हमरा बड्ड मानैत छलि। अपन सब बेगरता हम ओकरे कहैत छलियै। जकरा ओ सतत पूरा करैत छलि। ओकर आत्म-हत्याक कारण हम बहुत दिन तक नहिं बुझि सकल छलियै।

हम बीच मे व्यवधान देलियैक - आब बुझवा मे आयल?

शिप्राक ठहाका सँ अगल-बगलक सब ओम्हरे ताकय लागल। ओकरा लेखे धन्य सन। कहलक - खूब पुछलहुँ। एतेक कालक गप्प मे की बुझलियै? खाली दाबी टा अछि। हमरा माय सँ बुद्धि बेशी नहिं अछि। ओकरा बलाई बाबू जे बुझा दैत छथिन्ह ओतबे बुझैत अछि। आइ-काल्हि जे काज हम क' रहल छी ओ पहिने दीदी (जेठ बहीन) करैत छलि। दस बरख सँ उपरे भ' गेल ई काज करैत। अपना पर घृणा होइत अछि। हमरो इच्छा होइत अछि पंखा सँ झूलि जयवाक। मुदा तखन हमर छोट बहीन के माय हमर स्थान लेवा लेल विवशता देखेतै। तखन मरियो क' हमरा शान्ति नहिं भेटत।

ओ कनेक काल अपनहिं मे हेरायल रहल फेर मोन पड़ैत जेना कहब शुरू कयलक – दीदी के गेलाक बाद माय बड़ सम्हरि क' नून-रोटी चला रहल छल। बाबा (पिता)क दवाई प्रायः बन्द भ' गेल छलैन्ह। हम सब हँसब-बाजब बिसरि गेल छलहुँ। एक दिन अनायास बलाई बाबू हमरा डेरा अयलाह। माय सँ गप्प केलाक बाद बड़ी काल धरि बड़ स्नेह भाव सँ हमरो सँ किछु पढ़ाईक किछु इम्हर-उम्हर के गप्प कयने छलाह। दीदी के गेलाक बाद एतेक स्नेह कियो नहिं केने छल। तेँ हुनकर नीक लोक हेवाक आभास भेल छल। जयवा काल कहने रहथि - जे कोनो असुविधा हो हमरा कहब। हम हुलसल रही मुदा माय गंभीर भेल मूड़ी खसेने रहलि।

किछु मास गुमसुम मे आर बीतल। तीनू भाई-बहीनक स्कूल सँ तगादा अयलै – बिना साल भरिक फीस भरने परीक्षा देवय नहिं देल जेतै। सरकारी-स्कूलक फीस त' बड्ड कम छलै मुदा घर मे ओकरो जोगार नहिं छलै। मकान-मालिकक तगादा नित्य तेज भ' रहल छलै। जखन कि मकानक नाम पर ओ खोला-बारी सँ बदतर छल। बाबाक दवाई बिना हालत आर खराब भेल जा रहल छलै। चारू दिस सँ सब अपन खौंझाहटि माय पर उतारि शान्त भ' जाइत छल। एक साँझ माय कहलक - तों घरे मे रहिहें। बाबा किछु मँगथुन्ह त' दिहौन्ह। हम कनेक काल मे अबैत छी। माय के बलाई बाबू ओतय जाइत पहिल बेर देखने छलियैक। कनेक आश्चर्य भेल छल। प्रात भेने तीनू भाई-बहीन के स्कूलक फीस भेटल। बाबाक दवाई अयलैन्ह। मकान मालिक के सेहो किछु द' शान्त कयल गेल रहैक। हमरा बुझवा मे भाँगठ नहि रहल जे ई सब किनका उदारता सँ भेल।

किछु मास ई क्रम चालू रहल। फेर कहियो काल पैंच आनय माय हमरा पठावय लागलि। दबल स्वरें बाबा कनेक विरोध केने रहथिन्ह। माय तकरा चुपचाप आत्मसात क' लेने छल। बलाई बाबूक स्नेह आ उदारता के देखैत बाबाक विरोध हमरा तखन निरर्थक बुझना गेल छल।

किछु दिन आर बीतल। एक दिन बलाई बाबू कहने रहथि - एना पैंच सँ कतेक दिन काज चलत? माय अहू

वयस मे कतेक जोड़थुन्ह? तों कियाक नहिं मदति करैत छहुन्ह? तोहर दीदी एही वयस मे सब भार उठा नेने छलैन्ह। हम उल्लसित स्वरे कहने रहियैन्ह – हमहूँ त' तैयार छी। हमरो कतहु काज दिया दिय' ने। बलाई बाबू कुटिल मुस्कानक संग कहने रहथिन्ह – बताहि तोरा पर त' घर बैसल टाका बरसतौक। तो ँ अपना संग परिवारक सेहो भाग्य बदलि सकैत छे ँ। बात हमरा बुझवामे नहिं आयल छल ते ँ हम मात्र हुनका दिस टुकुर–टुकुर तकैत रहलियैन्ह। तखन स्पष्ट कयने छलाह – एकटा सम्पत्तिशाली घरक लड़का तोरा सँ बिवाह करय चाहैत छौ। करबहीन? ओ तोरा परिवारक भार सेहो लेतौ। तखन जमानाक हिसाबे लड़का–लड़की दूनू बिवाह सँ पूर्व एक दोसर के परखि लेबय चाहैत अछि। पहिने दोस्ती फेर बिवाह। माय के सोहे पूछि लहुन जे विचार होव' हमरा कहि दिह'।

ओहि सँ पूर्व बिवाहक गप्प हम सोचनहु नहिं छलहुँ। बिना कोनो उत्तर देने हम डेरा चल आयल छलहुँ। बलाई बाबूक प्रस्ताव हमरा कखनो शान्त नहिं रहय द' रहल छल। घर मे अभाव देखि अन्त:करणक प्रत्येक कोन सँ आवाज आबय – तो ँ एकरा दूर क' सकैत छे ँ। घरक कलह मे, भाइ–बहीन, माय–बाबू सब के आँखि मे एके भाव भेटय – तों, एकरा दूर क' सकैत छे ँ।

प्राय: आठ–दस दिनक अंर्तद्वन्दक बाद मायके सब बात कहलियैक, संगे बलाई बाबूक प्रस्ताव सँ स्वीकृति सेहों, मायक मुखमंडल निर्विकार, प्रतिक्रियाहीन छलै, जेना ई त' सुनिश्चित छलै, कोनो पुरान परम्पराक पुनरावृत्ति।

किछु दिनक बाद बलाई बाबू एक व्यक्तिक संग अयलाह। कहि सकैत छियै एक व्यक्ति के ताकि क' अनलाह। कहने रहथि – ई छथि देवब्रत। कलकत्ताक एक पैध रईसक बेटा। हिनके बिवाह लेल नीक खानदान मुदा गरीब घरक लड़की चाहियैन्ह। आस्ते सँ हमरा दिस झुकि क' कहने रहथि – प्रसन्न भ' जेथुन्ह त' घरक सब कष्ट बिला जेतहु।

हुनका संगे जयबा लेल तैयार होइत रही त' माय दीदीवला साड़ी आर किछु नकली गहना हमरा देने छल। दीदीक पोस्ट हम जे ल' रहल छलियै। मायक आँखि डबडबा गेल छलै जेना हम ओही दिन सासुर जा रहल होइ। फेर त' हमर आ देवब्रतक भेट करक समय आ स्थान निर्धारित होइत रहल। हम अपन आत्मा के डाहैत रहलहुँ। परिवारक जरूरति पूरा होइत रहलैक। मास–पर–मास बीतैत गेल। बिवाहक गप्प उठेला पर किछु पारिवारिक झंझटि सामने देखा दैत छलाह। जकरा खत्म भेला पर बिवाहक प्रस्ताव ओ माय–बाबूक सामने राखक गप्प कहैत छलाह। हठात एक दिन कहने छलाह – ऑफिसक किछु आवश्यक काज सँ कलकत्ताक बाहर जा रहल छी। धुरि क' अयला पर अहाँ सँ भेट करब। मुदा आइ धरि भेट नहि भ' सकल। एहि महानगरी मे तकनाइयो हमरा व्यर्थ बुझायल। अपन पता गलत कहने छल।

जोगायल पाई सँ किछु दिन घरक खर्चा चलल। फेर वएह अशान्ति। सबक आँखिक एके भाषा। बलाई बाबू दोसर, तेसर, चारिम....संभ्रान्त, खानदानी रईस के आनि रहल छथि। एके घटनाक पुनरावृत्ति कोनो ने कोनो रूप मे भ' रहल अछि। हमरासँ बिवाहक गप्प पर सब ल'ग बहन्ना। वैध रूपे ँ संग रहला पर सामाजिक अप्रतिष्ठा होयतैक मुदा अवैध रूपे ँ सम्पर्क रखला सँ सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़तैक? सबके हमरासँ मात्र शारीरिक तुष्टि चाहियैक त' हमरो अपना आर परिवारक तुष्टि लेल चाही मात्र टाका। जे प्रस्ताव अनैत अछि ओकरा संगे पहिने एग्रीमेन्ट–प्रतिदिन या प्रतिघंटाक हिसाब सँ। ओ लोकनि बिजनेस मैन छथि त' हमहूँ बिजनेस लेडी छी। बिजनेस मैन जँ एक संगे अनेको काज क' सकैत छथि त' हमहीं मासक मास एकटा रईसजादा के ध'क' कियाक आगू–पाछू करी? ओ छोड़त से निश्चित त' हमहीं कियाक नहिं ओकर उपयोग क' ओकरा छोड़ि दी? परस्पर व्यवहार एकरे ने कहबै? हमर विचार सुनि हमरा मायक माथ ठनकैत छै जे हम बताहि भ' गेल छी।

शिप्रा हठात तनि क' ठारहि भ' गेल, घड़ी दिस देखलक, हमरा दिस क्रोधपूर्ण आखियें तकैत, बाजल–हमरा त' सब सँ पैघ पागल अहीं बुझाइत छी। निरर्थक हमरा घंटा भरि सँ ओझरा क' रखने छी। ई कहैत बाहर चलि गेल – हमरा बहुत लेट भ' गेल। एकर हर्जाना के देत?

हम दूनू सहपाठी अवाक एक दोसरा के मुँह ताकि रहल छलहुँ आ हम सोचि रहल छलहुँ – बताहि शिप्रा अछि या ओकर माय या हमर तथाकथित संभ्रान्त समाज? ❑

सुनरी

दिसम्बर मास क जाड़ अपन चरम सीमा पर रहै। एक सप्ताह स' सूर्यक दर्शन नहि भेल रहै। भोड़का उखरा मे सीड़क त'र सॅ निकल'क मोन नहिं होइत रहैत रहै। मुदा सब कार्य त' अनिवार्य रहैक। ओहू जाड़ मे नीलू मोन के कठोर क' देह परक शॉल फेक दैत छल, अनेरो बेर–बेर खसि–खसि क' काज करबा मे बाधक भ' जाइत छलै। पयर मे त' पैताबा पहिर लैत छल, हाथ के की करैत? कठुआयल हाथे दिनचर्या मे भिड़ जाइत छल। ओकर दिनचर्या भोर पाँच बजे सँ शुरू होइत छलै। साढ़े छओ बजे स्कूल–बस आबय सँ पहिने बेटा–बेटी के तैयार क', जलखई कराय, टिफिन पैक क' बस–स्टैण्ड पर ठार्ह क' अबैत छल। तैयो प्राण के चैन कहाँ? नित्य अपहरण क समाचार डेरेने रहैत छलै। ओ डकूबा सब थोड़े सोचैत छै जे मध्यमवर्गीय परिवार कोन मसक्कैत सँ जीवन–यापन करैत अछि? भोर सात बजे पतिदेवक ऑफिसक गाड़ी स्टाफ सबके लेबय सामने चौराहा पर ठारह भ' जाइत छलै। हुनकर जलखई, टिफिन तैयार क' नीलू अपन स्कूल जयवाक तैयारी करैत छल। पौने आठ बजे जे प्रार्थना–सभा मे नहिं पहुचैत छल ओकरा ओहि दिन प्रिंसिपल साहिबा क एक सय हिदायत भेट जाइत छलै। अपने बेशी भाग मात्र चाय पीबि, टिफिन संग ल' निकलि जाइत छल। तखन कखनो क' अपना पर खौझाहटि होइत छलै जे कियाक अपना पर दोहरा भार नेने अछि, कखनो विश्रामक पलखति नहिं भेटैत छलै।

घरक काज लेल एक टा दाई भेटल छलै। चौका–बर्त्तन, झाड़ू–पोछा क' जाइ। सप्ताह मे एक–दू दिन नागा क' दैत छलै तैयो नीलू के बहुत उसास भेटैत छलै। ओहो पछिला मास छठि मे जे गाम गेलै से एखन तक वापस नहिं आयल छलै। पन्द्रह दिन ओकर बाट ताकि नीलू दोसर दाई क जोगार मे लागल छल। ओकरा डेरा स' कने हटि क' सरकारी मकान सबक पाछू एक लाइन मे करीब पचीसो टा झोपड़ी छलै। सब झोपड़ीक महिला चारि–पाँच–सात डेरा काज पकड़ने रहैक। भोरका उखरा मे त' नीलू के समयाभावक कारणे ँ ककरो सॅ भेट नहिं भ' पबैत छलै मुदा तीन बजे स्कूल सँ वापस अयवा काल दाई सबक झुंड बीड़ीक सुट्टा लैत, उन्मुक्त हँसी क बीच अपन–अपन पकड़ल डेराक चर्चा आ मलिकाइन–मालिक क नकल करैत भेट जाइत छलै। नीलू अपन सुविधाक अनुसार भोर छओ बजे आ दिनक चारि बजे क समय कहैक त' ओ समय ककरो खाली नहिं छलै। लाचार भ' पुनः दोसर दिनक प्रतीक्षा करय लगैत छल।

अही क्रम मे एक दिन बेरू पहर हारल–थाकल नीलू सोफा पर पसरल टी.भी. देखि रहल छल आ कतय सँ काज शुरू कयल जाय ई सोचि रहल छल कि गेट खुजवाक शब्द भेलै। बाहर निकलि देखलक – डग–डग करैत आँखि, छरहरि गोर देह–यष्टि, सीथ मे सिन्दूर, कपार पर टिकुली सटने, दू जुट्टी, सलवार–कुरता, हवाई चप्पल पहिरने, प्रायः पन्द्रह–सोलह वर्षक एक बाला बिहुँसैत ठार्हि छलि। आँखिये सँ नीलू इशारा मे अयबाक उद्देश्य पुछलकैक त' ओहो

अपन आँखि नचाय हँसि क' पुछने रहै – काम करय लेल आदमी खोजैत छह? नीलू के बुझयलै अझुका दिन सकारथ अछि। दाईक झुंड मे ओ चेहरा देखल सन मोन पड़लै। उत्साहित भ' कहने रहै - हँ, हँ के करत? उत्तर भेटलै - हम करब। हमरा दुइये डेरा काज अछि। नीलू उत्साहित भ' अपन डेरा देखा देलकै, भोर आयब ओ सेहो गछलकै आर माहवारी पाई तय क' काज प्रारंभ केलक। अपन नाम ओ सुनरी कहने रहै। नामक अनुरूप नीलू के सेहो ओ सुन्दरि लागल रहै। अख्यास कयने छल जे सुन्दरि के अप्रभंश सुनरी भ' गेल हेतैक।

सुनरी खूब मनोयोग सँ डेराक काज क' दैत छलै। किछुए दिन मे नीलू के ँ ओकर स्वभाव सँ अपनत्व भ' गेलै आर एकटा वात्सल्य भाव आबि गेल रहै। बेरू पहर अपना भोजनकाल किछु ने किछु ओकरो लेल बचा क' राखै।

स्नेह पाबि सुनरी नित्य अपन जीवनक एक-एक परत नीलू ल'ग खोलि जाइत छल। पुछला पर एकदिन कहने रहै– सुनरी नाम हमरा अपन बापक राखल अछि। उत्सुकता सँ नीलू ओकरा दिस देखने रहै त' ओ ठी–ठी–ठी–ठी क' हँसैत कहने रहै – हमर माय कहने रहय जे जखन हम साल भरि के रही त' गाम मे गाछ कटैत काल हमरा बाप के साँप काटि नेने रहै आ ओ तखनहि मरि गेल। हमर बाप राजेन्द्र कुमार सन देखवा मे छल। हमरा बड्ड मानैत छल। हमरा लेल हाट सँ फराक कीनिक' अनैत छल। हमर माय तखन चौदह–पन्द्रह वर्षक छल। हमरा बापक मरिते गाम क मालिक आ छौड़ा सब माय के तंग करब शुरू केलकै। बचाबय क बदला हमर दादी हमरा मायके के धुनि क' राखि दै। किछु दिन बाद हमर नानी माय के ल' अनलकैक आ हम दू वर्षक रही त' सगाइयो करा देलकै, जे एखन हमर बाप अछि। इहो बाप हमरा मानैत अछि मुदा राति मे जखन ताड़ी पी क' अबैत अछि त' हमरा आ हमरा माय के बेबात बड्ड मारैत अछि। नीलू पुछने रहै - आ अपन जनमल बेटा–बेटी के नईं मारैत छै?

ओ सब त' साँझें सूति रहैत छै। जगलो रहैत छै त' बाबूक लड़खड़ायल आवाज सुनिते कतहु दुबकि जाइत छै। भोर होइते फेर लगबे ने करत जे ई ओएह बाबू छी।

एक दिन नीलू सुनरी के पुछने रहै – तोहर घरवला की करैत छउ? कतय रहैत छउ? सुनरीक सहजता पर नीलू विस्मित रहि गेल छल। निर्विकार भावे ँ हँसैत कहने रहै – जाह चाची, एतना दिन हो गैलै हम तोरा ई बात नईं कहिलय'? हमर घरवला दिल्ली रहैत अछि। ओकरो देखबहक त' सिनेमाक हीरो सन लगत'। जइ सेठ ओतय रहैत अछि ओकर छोटकी बेटी ओकरा बड्ड मानैत छै, कहैत छै ओकरे स' बियाह करतै। सेठक बेटी ओकरा बड्ड रुपया–पैसा, कपड़ा–लत्ता दैत छै। सेठक घर मे सबके ईं बात बूझल छै। लाख बुझयला पर ओकर बेटी जिद्द छोड़बा लेल तैयार नईं छै। हमर घरवला फगुआ मे दस दिन लेल अबैत अछि त' हमरो संगे गाम ल' जाइत अछि। सब लेल खूब कपड़ा, सनेस–बारी अनैत अछि। फेर दिल्ली जयबा काल हमरा माय ल'ग छोड़ि दैत अछि। हमरो गाम मे मोन नईं लगैत अछि। सासु–दियादनी कोनो काम क' क' हमरे नाम लगा देत। हमर ओकरा संगे जायब ककरो नीक नहिं लगैत छै। मुदा हमर घरवला कहैत अछि - तो ँ चिन्ता नहिं कर, रुपया पैसा कमा क' घर बान्हब आ तखन हम संगे रहब।

नीलू शंका केने रहै - कहूँ तोरा ठकैत त'ने छउ? सुनरी ओहिना हँसैत कहने रहै – नईं चाची, बात त' बड़ निम्मन करै छै। दिल्ली सँ सेठक बेटी वला सलवार–कुरता सब आनैया। ओना हमरामाय के सेहो ई डर छै। नीलू सोचने रहय एखन तक एहि लड़की मे दुनियाँदारीक, ऊँच–नीच, छल–प्रपंच बुझवाक सामर्थ्य नहिं भेल छै आ सुनरी क प्रति ओकर ममता आर बढ़ि गेल रहै।

किछु मासक बाद एक दिन सुनरी विशेष उत्साहित छल। अपन आँखि के नचाय बिहुँसैत कहने रहै – चाची, हमर घरवला हमरा गाम ल' जयवा लेल आयल अछि। कहैत अछि आब दिल्ली नहिं जायब। ओकर सेठ चोरीक नाम

लगा ओकरा जेल मे बन्द करा देने छलै। मुदा सेठक बेटी ओकर जमानत द'क' छोड़वा देने छलै। ओ चुपचाप भागिक' चल आयल अछि।

सुनरीक घर बसवाक नीलू के एक दिस प्रसन्नता छलै त' तोसर दिस पुनः दाईक समस्या मुँह बओने ठारह भ' गेल रहैक। नीलू अपन एक साड़ी आर किछु पाई द' ओकरा विदा क' देने रहै।

समय पाँखि लगा उड़ैत बीतल जा रहल छलै। नित्यक दौड़-बरहा मे कोना फेर दोसर खेप जाड़ आबि गेलै नीलू बुझबो नहिं कयलक। स्कूल सँ आबि ओहिना थाकल पसरल छल। स्कूल सँ आनल परीक्षा क कॉपी के देखि सोचि रहल छल जे बिना राति जगने ई कार्य सम्पन्न होवय वला नहिं।

गेट खुजवाक आहट पाबि बाहर आयल त' कने मैल साड़ी पहिरने, उजड़ल केश, धँसल आँखि, पचकल गाल, एकदम दुब्बर शरीर, कोरा मे नवजात बच्चा के ल' एक महिला ठार्हि छल। नीलू के देखि हँसि क' पुछने रहै–हमरा नईं चिन्हलह चाची?

नीलू के स्वर चिन्ह्ल छलैक – अरे सुनरी? आबै, आबै, कहिया अयले, केहन भ' गेल छे ँ? अपनत्वक स्वर सुनि सुनरीक धैर्यक बान्ह टूटि गेलै। बच्चा के करेज मे सटा फफकि-फफकि क' कानय लागल। शान्त भेला पर कहने रहैक- घरवला संग गाम गेलहुँ त' सबकिछु ठीकेठाक बुझायल। हम प्रसन्न छलहुँ जे भगवान हमर प्रार्थना सुनलैन्ह। किछु मासक बाद ई बच्चा ठहरल। हमर मोन खराब रहय लागल घरक काज नहीं कयल होय, घरवलाक सेवा से हो ओतेक तत्परता सँ नहिं क' पबैत छलियै। सासु-दियादनी क ताना-बाना शुरू भ' गेलै। घरवला एक दिन हमरे मारलक। तामस मे कहने रहियै ओतय सेठक बेटी के तरबा चटैत छलह आ हमरा पर लात उठैत छह? तखन त' ओ शान्त भ' गेल मुदा किछु दिन बाद फेर दिल्ली जयवाक रट शुरू क' देलकै। माय-बाप के त' पाई सँ मतलब छलै, ओहो सब स'ह द' रहल छलै। संगक पाई खतम भ' गेला सँ ओकरो मोन कछमछा रहल छलै। गामक मजूरी मे ओकरा मोन नहिं लगैत छलै आ मजूरीक भेटल पाई छुछुन्न बुझाइत छलै। सेठक बेटी ओकर आदति बिगाड़ि देने छलै। एक दिन अपन कपड़ा-लत्ता सरिया विदा भ' गेल। जयबा काल हमरा सिनेमाक हीरो सब जकाँ कहने गेल– सुनरी हमरा बिसरि जइहे ँ, तहूँ सगाई क' ले, बच्चा के नष्ट करबा ले। हम त' सासुरे मे रही, नित्य अपमान सहैत। हमरा माय के बूझल भेलै त' अनबा लेलक। माय सेहो कहैत अछि सगाई करबा देत। मुदा हम आब दोसर मरद नईं करब। चौका-बर्त्तन करब अपना बेटी के पढ़ायब लिखायब। दोसर मरद करब त' हमरे बाप जकाँ पीब क' आओत आ हमरा संग एकरो डेंगेतै।

नीलू सुनरीक चेहरा परक आत्मविश्वास देखि रहल छल आ सोचि रहल छल एहि प्रपंच भरल समाजक झंझावत ई कतेक दिन सहि सकत? ❑

काली पूजन

कलकत्ता-प्रवास मे जखन सिद्धपीठ काली-बाड़ी सँ पयरे-रास्ता मे दस मिनटक दूरी पर डेरा भेटल त' मोन आनन्दित भ' गेल छल। विद्यार्थी-जीवन मे बंग-बाला सखी सबके प्रत्येक काज शुरू कर' सँ पहिने ''जय माँ'', ''जय-माँ तारा'' कहैत सुनैत छलियैन्ह त' संगतिक असरि हमरो पर पड़ल छल। मिथिला मे 'जय देवी', 'जय भगवती' कहैत सुनक अभ्यस्त छलहुँ। रूप एके, नाम अनेक। भगवतीक पूजन-दर्शन मोन के आह्लादित क' दैत अछि। विचारल नित्य

खूब सकाले उठि स्नान आ घरक देवी-देवताक पूजन क' काली-बाड़ी जाक' सेहो भगवतीक पूजा करब। मुदा सोचल गप्प होइत कहाँ छै? बच्चा सबक स्कूल-बस भोरे सात बजे आबि जाइत छलै। ताहि सँ पूर्व हबड़-हबड़ बच्चा सबके दिनचर्या करा तैयार करब आ जलखई-दूध करा स्कूलक टिफिन तैयार करब। बच्चा सब स्कूल गेल त' पतिदेवक भोजन आ टिफिनक चिन्ता। साढ़े नौ बजे तक ओहो डेरा सँ निकलि जयवा लेल हड़बड़ायल रहैत छलाह। एहि हड़बड़ीक जिनगी मे प्रात: कालक काली-पूजन आ दर्शनक मनोरथ मोने मे रहि जाइत छल।

रवि दिन क कार्यक्रम हड़बड़ायल नहिं त' कने बेशीये व्यस्त भ' जाइत छल– सप्ताह भरिक बकियौता सफाई, इष्ट-मित्र सँ भेट-घाँट, गृहस्थी लेल हाट-बाजार आदि...आदि। एक दिन रविक' घरक सब काज धन्धा छोड़ि सकाले स्नान आ घर मे देवी-देवताक पूजनक' 'काली-मंदिर' प्रस्थान कयल। मेन रोड छोड़ि मन्दिर जयवाक रोड पकड़नहि छलहुँ कि एक नवयुवक पंडा पछोड़ ध' लेलक। पुछने छल- पूजा कर' आयल छी? हमर माथ स्वीकारात्मक रूपे ँ डोलल छल।

तखन पंडा कहने छल - पंडा ल' लिय'। हम नीक जेना पूजा करवा देब। फूल-माला, प्रसाद सब सस्ता दिया देब। हमरा दक्षिणा मे मात्र एकावन टाका द' देब। ओहि समय मे एकावन टाका हमरा लेल बड्ड महत्त्वपूर्ण छल। हम कने विस्फारित नेत्र सँ ओकरा दिस ताकि नकारात्मक रूपे ँ माथ डोला देने रहियै। पंडा तेजगर छल। तुरत एकावन सँ एकैस टाका पर आबि गेल। हम पुन: माथक संग हाथ सेहो नकारात्मक रूपे ँ डोला देने छलियै। मंदिर समीप अबैत देखि ओ कने तमसायल आ व्यंग्यात्मक रूपे ँ बाजल – अच्छा छोड़ूँ, अहाँ हमर पहिल जजमान छी, एगारहे टाका द' देब।

हम ओकरा बात पर बिना ध्यान देने पूजाक सामग्री कीनि मंदिर दिस बढ़ि गेलहु। पूजा लेल सैकड़ों महिला-पुरुषक अलग-अलग पतियानी छल। हमहूँ महिलावला पतियानी मे ठाऱ्ह भ' गेलहुँ। हमर बगल सँ बाट बनवैत ओहि पंडाक स्वर सुनायल–ढोंगी नहितन, खाक पूजा करत। माँक नाम पर टाका खर्च करैत कोंढ़ फटैत छैन्ह। हमर दिन खराबक' देलक। जतरे बिगड़ि गेल, जा तोरो अशुभ हेबे करत।

भोरे सराप सुनि मोन दुखी भ' गेल। फेर अपना के दृढ़ कयल - अइ बीड़ी पीनहार सँ की पूजा करायब? ओ हमरा देखि हाथक बीड़ी फेकने छल, से हमरा नजरि मे आबि गेल छल। फेर सोचल-चमड़ाक सरापने कतहु गाय मुइलैया?

चुट्टीक गतिये ससरैत प्राय: एक घंटाक बाद मंदिरक मुँहेठ पर पहचलहुँ। कालीक मूर्त्ति चारूकात सँ लोहाक छड़ सँ बेऱ्हल छैन्ह। ओतेक छोट मंदिर होइतहुँ ओहू मे प्रवेश द्वारक अतिरिक्त एकटा आर छोट फाटक बनल छैक। जाहि पर एक व्यक्ति ठाऱ्ह छल। ओकरा हाथ पर दक्षिणा रखलाक बादे कियो मूर्त्ति तक पहुँच सकैत छल। जखन भीड़ धक्का दैक त' संतुलन बिगड़ि जयवाक कारणे ँ ओकर एक पयर मूर्त्ति पर पड़ि जाइ, जकरा ओ फूर्त्ती सँ हटा लैत छल आ जोर सँ बाजि उठय – 'माँ गो'। ई संभवत: ओकर क्षमा-याचना छलै।

मूर्त्तिक आगाँ एक पंडा दहिना पयर पकड़ने छल त' दोसर बामा। एक गोटे दहिना हाथ धेने छल त' एक गोटे बामा। प्रसाद, फूल, सिन्दूर चढ़यबा लेल जखन हमर हाथ बढ़ल त' एक व्यक्ति लपकि क' ठोंगा ध' लेलक आ कहलक – एहि पर दक्षिणा राखू। हम पंडा सबक रूप देखि पहिनहिं सँ पाँचटा सिक्का निकालि मुट्ठी मे दबेने छलहुँ। प्रसाद पर सिक्का रखबाक प्रयास मे छलहुँ कि एक गोटे हाथ सँ झपटि सिक्का के पयर सँ छुआ जेबी मे खसा लेलक। पाछूक लोक धक्का द' रहल छल आ हमरा हाथ मे प्रसादक दोना वापस नहिं आबि रहल छल। नीचा मे बैसल दूनू व्यक्ति पयर मे अवरोध द' रहल छल। बाकी चारू सिक्का एक-एक गोटे के द' देलियै त' आधा सँ बेशी निकलल प्रसादक

दोना हमरा हाथ मे आयल।

भीड़ मे धक्का खाइत, जल, फूल, सिन्दूर सँ नहायल बाहर निकललहुँ त' पयरे डेरा जेबा जोग नहिं त' बगय-बानी छल आ ने देह मे स्फूर्त्ति। एकटा हाथ-रिक्शा सँ डेरा वापस अयलहुँ। एहि घटनाकक बाद पाँच साल ओहि डेरा मे रहलहुँ मुदा साहस नहिं भेल जे पुनः मंदिरक भीतर प्रवेशक' भगवतीक पूजा-अर्चना करी। बेसी काल दर्शन करय जाइत छलहुँ, मुदा मंदिरक सामने बनल चबूतरा परसँ। ओहू चबूतरा पर एक दिन एक भक्त क नहुँए आर्त स्वर सुनबा मे आयल छल – माँ। पेट खाली अछि, जेबी खाली अछि। हमर परिवार बाट तकैत रहत, आइ पुलिस स' हमर रक्षा करब। आमदनी करायब माँ! हम सोचि रहल छलहुँ भगवती जकाँ हुनकर भक्त सेहो अनेक रूप मे छैन्ह। ❑

व्यथा पत्र

भाई यौ! आई मोन बड्ड अकुला रहल अछि। रहि-रहि क' अहीं स्मरण भ' रहल छी। एतय कियो तेहेन साहित्यिक स्तरक बुझाइतो नहिं अछि। जँ ककरो ल'ग किछु बजाइयो जाइत अछि त' ओ तेना आँखि निरारि हमरा दिस देखैत अछि जेना हम किछु अर्नगल बाजि गेल होइ। अहूँ अपनहिं तक सीमित राखब। कम-सँ-कम हमरा बाबूक आगाँ त' कखनहु अनचोकहु मे एहि पत्रक चर्चा नहिं करब। गामक भुल्लुर कका मूर्ख छथि त' बेटा क शरीर पर छड़ी सँ डेगबैत छथि आ हमर बाबू पढ़ल-लिखल बुझनुक कहबैत छथि त' हमरा मानसिक रूपे ँ भाषाक वाण सँ बेधैत छथि। दूनू मे कोनो अन्तर नहिं। ओना हमर बाबू पंच-परमेश्वरक मुखिया छथि, लोक के हुनकर निर्णय विवेकपूर्ण लगैत छैन्ह, ते ँ सहर्ष मान्य सेहो होइत छैन्ह, सब केर दृष्टि मे ओ श्रद्धेय छथि मुदा हमरा बेर मे हुनकर बुद्धि सठिया जाइत छैन्ह।

एक दिन कतहु सँ पता लगलैन्ह जे गामक मिडिल स्कूल मे शिक्षक क आवश्यकता छै, फलाँ बाबूक सिफारिश पर नोकरी भेटि सकैत अछि। आब तहिया सँ हमरा पाछू लागि गेल छथि जे अहाँ दरखास्त द' दियौ। अच्छा भाई! आब अहीं कहू जे नोकरी करबो करब त' मिडिल-स्कूलकक शिक्षकक? तखन मोन मे बड्ड कचोट होइत अछि जखन बाबू कहैत छथि – एहि सँ बेशीक अहाँक योग्यता नहिं अछि। ओहो त' पैरवी पर हयत। गाम पर रहने खेती आ गृहस्थी दूनूक रक्षा क' सकब। तखन कहुना क' गुजर भ' जायत। किछुओ आरंभ त' करू। जहिया एहि सँ नीक भेटत, एकरा छोड़ि देब। जनैत छियै भाई, कहियो बाबूए कहैत छलाह – अहाँ नेना मे पढ़बा मे जतबे तेज छलहुँ ओतबे खेलौड़िया।

आब कहैत छथि – चेतन भेने लोक सजग, विवेकशील बनैत अछि, माथ पर उत्तरदायित्वक भार अयला पर परिश्रमी आ लगनशील बनैत अछि मुदा अहाँक बुद्धि मे त' नोनिया लगि गेल आ शरीर मे कामचोरक रोग। आब बाबू जे कहथु, हमरा त' लगैत अछि जे हम नेने स' परोपकारी छी। परीक्षाक समय मे संगी सब पोथी मँगैत छल त' मदद जरूर करैत छलियै। अहू लेल बाबू फज्झति करैत छलाह – अप्पन ठेकाने नहिं आ दानी-दाता बनैत छथि। हमरा किताबी-कीड़ा बनब कहियो पसिन्न नहिं छल। पहिल बेर त' मैट्रिकक परीक्षा मे अटकि गेलहुँ मुदा दोसर बेर जनता डीवीजन मे बाजी मारि लेलियैन्ह। बुॅर्जुआ क्लास हमरा कहियो नीक नहिं लागल। संभवतः ते ँ इ जनता डिवीजन हमरा बड्ड आनन्द देने छल। बाबू सेहो उसासक अनुभव कयलैन्ह। हुनका हमर योग्यताक सीमाक अन्दाज लागि गेल छलैन्ह। सूद पर टाका आनि दरभंगाक कॉलेज मे नाम लिखा देने छलाह आ दरभंगा अयवासँ पूर्व बहुत रास नीतिपूर्ण श्लोक, उपदेशक कथा आदि सुना मात्र विद्या अर्जन सँ जीवन-यापनक पाठ देने छलाह। दरभंगा मे एकटा प्राइवेट लॉज मे रहवाक व्यवस्था भेल छल।

भाई यौ! अपन पेट त' कुकुर सेहो पोसि लैत अछि। बाबूक पठाओल टाका सँ अपना संगहि किछु इष्ट–मित्रक सेहो सहायता क' दैत छलियैन्ह। एहि सँ मित्र–मंडली मे हमर धाख जमल रहैत छल जे हमरा लेल बड्ड बेशी सुखद छल। एहि सँ एकटा आर लाभ भेटैत छल – एक–दूटा मित्र अपन तैयार कयल प्रश्नोत्तर हमरा उतारबा लेल द' दैत छलाह। नोट्स या प्रश्नोत्तर तैयार करब हमरा लेल बड्ड कष्टदायक छल।

अस्तु, कहुना क' आई.ए.क परीक्षा पास कयल त' गाड़ी कनेक आर आगू बढ़ल। बाबू हमरा पढ़यवा लेल कृत–संकल्प छलाह। बी.ए. मे नाम लिखा गेल। लोक कहलक – मैथिली मे नीक नम्बर अबैत छै ते ँ मैथिली - ऑनर्स राखल। परीक्षाक समय मे एक बेर फेर भाग्य हमर संग देलक। राजनीतिक आन्दोलन जोर पकड़लक। विद्यार्थी सबके आन्दोलन मे भाग लेवा लेल आह्वान कयल गेलै। आन्दोलक नायक–नेता विद्यार्थी सब के 'जिगर के टुकड़े' आ 'देश क कर्णधार' क पदवी देलखिन्ह। एतेक पैघ उपाधि आ 'छतरी' भेटलाक बाद के मूर्ख मनहूस विषय सबके घोखैत? छूट भेटल रहै – परीक्षा–कक्ष सँ उत्तर–पुस्तिका आ प्रश्न–पत्र ल' लिय', साँझ होयवा सँ पहिने परीक्षा कार्यालय क खूजल खिड़की बाटे अपन लिखलाहा उत्तर–पुस्तिका खसा आउ। नेताजीक भाषण मे आश्वासन रहैत छलैन्ह – सत्ता–परिवर्तनक देरी छै, तखन त' सबके रोजी, रोटी आ मकान भेटैत।

बहैत गंगा मे हाथ धो हमहूँ आनर्स ग्रैजुएट भ' गेलहुँ। हमरा मे परोपकार आ नेताक गुण त' नेने सँ छल। नेताजीक सभा मे अगिला पतियानी आ घरक धुरखुर धेने रहतै छलहुँ जे नेताजीक नजरि हमरा पर पड़ैत रहतैन्ह आ प्रसन्न रहताह त' चुनावी टिकट भेटवे करत। हम त' आनर्स ग्रैजुएट छलहुँ। कतेको औंठा–छाप के टिकट भेटल रहै। समूह मे राष्ट्र–गान काल जोर–जोर सँ गाबी जे तैयो महानायक क ध्यान हमरा पर जेतैन्ह। बेशी नेता के त' राष्ट्र–गान सम्पूर्ण रूपे ँ स्मरण नहिं छलैन्ह। किछु काज नहि देलक। हमरा टिकट नहिं भेटवाक छल नहिं भेटल। अनुभवहीन कहि बारि देल गेल। अनुभव हेवा लेल कतेक दिन पछिलग्गु रहय परत इहो त' नहिं बुझि पाबि रहल छलियै।

बिना कोनो आमदनी क हमहूँ कष्ट मे पड़ल छलहुँ। कोनो उपाय नहिं देखि दोसर बाट धरय पड़ल। फेर पुरना मित्र–मंडली। हुनके लोकनिक कृपा पर चाह–पान चलय लागल। बाबू त' परीक्षाक बाद हाथ उठा देने रहथि। मायक चोरूक्का कखनो काल भेट जाइत छल। बाबू कने बेशिये अद्युता गेल रहथि, कहने छलाह - एहन ज्ञान आ रिजल्ट पर आगाँ पढ़ि कोन बड़का अफसर बनि जायब? हमरो ओतेक सार्मथ्य नहीं अछि। नोकरी ताकू, घर–गृहस्थी देखू। अहाँक समवयसी भोला दू बच्चाक बाप भ' गेल, गामे मे दोकान खोलने अछि, खूब खटैत अछि, घर–गृहस्थी सेहो कतेक सुव्यवस्थित रूपे ँ चला रहल अछि। एकटा अहाँ छी जे एखन तक बेलल्ला भेल घुमि रहल छी।

किछुए दिन बाद माय हमर बियाहक गीत गावय लागलि। बरख दिन त' टारि देलियै मुदा मायक नोर देखल नहिं गेल। ओकर कहब छलै – बियाहक बाद भार परने अपने मति–गति मे आबि जेतै। सत्ते पूछी त' कने–कने अपनो मोन डोल' लागल छल, ते ँ स्वीकृति द' देलियै।

विवाह भेल। कनियाँ संतोषी आ बुधियारि भेटलीह। ''जाहि विधि राखय राम'' क भावनावाली। चारि साल मे भगवान तीनटा प्रसाद देलैन्ह – दू बेटा एक बेटी। एकदम इन्दिरा गाँधी सरकारक अनुसार सुनियोजित–परिवार। भाई यौ! जखन अपन पारिवारिक अवस्था पर विचारैत छी त' बड्ड छगुन्ता होइत अछि। बेटाक बियाह भेल त' ढ़ोल–पीपही बजवाक' आनन्दित भेलहुँ। पौत्र–पौत्रीक जन्म भेल त' आनन्द आ बधाईक गीत गाओल गेल। जखन पुतहु आ बच्चा सबके पोसबाक बेर भेल त' बड़ कष्ट क गप्प। आरंभ मे त' छओ मास पर कनियाँ के नैहर ल' जयवा लेल भाय

अबैत छलखिन्ह। छओ मास पर बाबू लियौन करवा लैत छलखिन्ह। आब त' दूनू ठाम लोक कन्नी काट' लागल छै। लोक अपना मे सीमित भेल जा रहल अछि। पहिने संयुक्त परिवार मे एकटा कमौआ पर पूय परिवार आश्रित रहैत छल। आब त' सब अपन कनियाँ आ बच्चा के ल' अलगे राग अलापैत अछि, अलगे डफली बजबैत अछि। सबक एके रोदन – कहुना घर चलैत अछि। पाई बचिते नहिं अछि।

जेठका नेनाक पाँचम वर्ष आरंभ भेल आ आब बाबू कान खेने रहैत छथि – स्कूल मे ओकर नाम लिखयवा लेल। खिसियाक फेर ओही बिन्दु पर आबि जाइत छथि – गामक स्कूल मे अध्यापक लेल कियाक दरखास्त नहिं दैत छियै? नोन-तेलक जोगाड़ त' हयत? किछुओ बरखक अध्यापनक अनुभव भ' जायत त' हाई-स्कूल मे प्रयास क' सकैत छी। संग लागल बी.एड क' ली त' जिन्दगी सुधरि जायत।

भाईयौ! अहीं कहू त' आब हम पुन: अपना के विद्यार्थी बनाउ ई संभव हयत? बयसो त' नहिंरहल। बाबूक अनुसार - पढ़वा लेल कोनो वयस वाधक नहिं होइत छै। दिमाग काज करैत रहवाक चाही। हमरा त' बाबूक कथन एको रत्ती नहिं अरद्यैत अछि। स्कूलक नोकरी कोनो नोकरी भेलै? समयक गुलाम भ' जाउ। समय सँ पहुँचवा मे कनेको विलम्ब हयत त' हाजरी मे लाल-चेन्ह। छओ घंटा भेड़-बकरी के हाँकू। गेँटक गेँट कापी नित्य जाँचू आदि....आदि। हेड-मास्टरक जी हुजुरी करू। नहिंयौ, बिसरा गेल छल, एखन त' ओइ स्कूल मे हेड मास्टरनी अछि। महिलाक डाँट-डपट सँ नीक आत्महत्या क' ली। छओ घंटाक ड्यूटीक बाद त' देहक स्फूर्ति समाप्त बूझू। कथा-कविता की लिखब? सभा-गोष्ठी मे की ल' क' जायब? हमरा त' अहाँ सबक संगति आ साहित्यिक सभा-गोष्ठी छुटि जायत त' जीवनक स्पन्दन समाप्त भ' जायत।

आब जँ सभा-गोष्ठी सँ आर्थिक लाभ नहिं छै त' मानसिक-संतुष्टी त' भेटैत अछि। आन भाषाक पत्रिका मे हमर कथा-कविता या विचार छपत नहिं, अपन भाषाक पत्रिका मे छपैत अछि त' पाई नहि। एहि मे हमर कोन दोष? हमर साहित्य सृजन त' नि:स्वार्थ अछि। आर किछु नहि त' अपन मातृभाषाक सेवा त' क' रहल छी? अरे धीया-पुता मनुक्ख बनबे करतै। सब केर पालक उपरवला। कम-सँ-कम बाबू जावत छथि तावत त' सबके देखथुन्ह। ओतबा उपजा भैये जाइत छै। हमरा निश्चिन्त छोड़ि देथि। कालक्रमे सबटा अपने ठीक भ' जेतै।

अहीं कहू भाई, हम कइयो की सकैत छियै? ई इन्टरव्यू नेनहार सब दैंत जकाँ बैसल अभ्यर्थी के घुरैत अछि। जेना वश चलै त' काँचे चिबा सकैत अछि। देख क' तेना मुसकी देत जेना ओ महाविद्वान आ अभ्यर्थी महामूर्ख। नोकरी पयवाक उत्साह त' तखने समाप्त। हमरा बाबुए जकाँ अन्ट-सन्ट प्रश्न पूछत। कोर्सक पढ़लाहा की कोनो सिनेमाक डायलाग छियै जे धोखायल रहत? हमरा सबक कोर्स मे सामान्य-ज्ञानक कोनो पेपर कहाँ छलै? इन्टरव्यू मे बेशी ओकरे प्रश्न पूछल जाइत अछि। तखन जँ नोकरी लेल नहिं चुनल जाइत छी त' हमर कोन दोष? सब ठाम त' सिफारिशक बोलबाला छै। हमरा लेल जँ बाबू के सिफारिश कर' पड़ैत छैन्ह त' कोन अनर्गल? बाबू के इहो आक्रोश छैन्ह जे सरकारी नोकरीक वयस बीत गेल आ हमरा बुते किछु कयल पार नहिं लागल। अच्छा भाई! वयस के रोकनाइ की अपना हाथक गप्प छै? बस एक बेर हमर पोथी छपि जाय आ पाग-डोपटा सँ सम्मानित भ' जाइ त' हमरो जीवन सार्थक भ' जायत। हमहूँ प्रतिष्ठित साहित्यकार भ' जायब।

भाई यौ! सब गप्प अपने तक राखब। हमर दुखक ओर नहिं। हमर व्यथा आन नहिं बूझत। बहुत गप्पत कहवाक अछि। फेर दोसर पत्र मे......।

अहाँक

....

नीति प्रकरण

ओकरा अपना नामक आगू या पाछू कोनो उपनाम जोड़ब पसिन्न नहिं छलै। सोझे लिखैत छल माला। माय-बाप सिनेह सँ मालो या मालू कहथिन्ह त' खिसिया जाइत छल। ओकर कहब छलै – अनेरो सिनेह सँ अपने राखल एतेक सुन्दर नाम के अहीं दूनू गोटे बिगाड़ि देब त' आन सब त' मालू के भालू बना देत। तखन दूनू बेगती दुलारू धीया के हँसि क' मनबैत छलाह।

जीविका लेल पिता पंजाब गेलखिन्ह त' व्यवस्थित भेला पर अपन परिवार के सेहो ओतहि ल' गेलाह। माला ओतहि सँ मैट्रिकक परीक्षा पास केलैन्ह। आगू पढ़क इच्छा व्यक्त केने रहैथ त' पिता अपन आर्थिक आ सामाजिक विवशता देखाय वैवाहिक जीवन लेल विवश क' देने छलखिन्ह। मालाक विवाह लेल पिता मिथिलाक गाम चुनलाह। अपना ओकाइत क अनुसार बी.ए. पास, गाम मे मास्टरी करैत, किछु बीघा खेतक मालिक गोवर्धन प्रसादक परिवार दिस सँ स्वीकृति भेटलैन्ह त' नेहाल भ' गेलाह। बेटीक कुशाग्र बुद्धि आ व्यवहार कुशलता सँ आश्वस्त छलाह जे ग्रामीण परिवेश मे ओ स्वयं के अभियोजित क' लेत आ ओतहु सब क मोन मोहि लेत। पहिनहुँ छुट्टी मे गाम अयला पर ओकरा गाम बड्ड नीक लगैत छलै।

सासुर अयला पर नितान्त व्यक्तिगत रूपे ँ पतिदेव ओकर नामकरण केलखिन्ह – माला रानी आ पारिवारिक नामकरण सासु माँ दिस सँ भेलैन्ह – प्रेम कुम्मरि। माला के दूनू नाम आह्लादित करैत छलैन्ह। माला अपन विद्या आ शहरी लालन-पालन के ग्रामीण रीति-रिवाज मे सामंजस्य स्थापित करक पूरा प्रयास करैत छलीह। मुदा जे नितान्त अनावश्यक आ शारीरिक क्षमताक विपरीत बुझना जाइन्ह ओकरा नकारि दैत छलीह जे दूनू माय-बेटा के बर्चस्व पर आघात बुझाइत छलैन्ह। कुल मिलाक' पारिवारिक गाड़ी ठीके-ठाक चलि रहल छलैक। जतय चारि बासन रहत ओ कनेक टनमनेवे करत – ई सोचि माला अपना के संतोष दियावैत छलीह। एवम क्रमे पाँच वर्ष मे माला जखन तेसर पुत्रीक माय बनलीह त' सासु माँ कने बेसिये कुरबुर करय लगलीह। पोताक अभाव हुनका बेशी कचोटय लगलैन्ह, जेना पुत्र नहिं हेवाक दोषी माला रहथि।

माताजी बेटा के भोजनकाल दू संझी कने बेशिये पंखा डोलवय लगलीह आ बात-बात मे मालाक छिद्रान्वेषण होवय लागल। परिणामस्वरूप गोवर्धन प्रसाद स्कूल सँ छुट्टीक बाद मालारानी के आदेश पालन आ व्यावहारिकता सिखयबा लेल साम-दाम, दंड-भेद नीति अपनावय लगलाह संगहि लाल काक बैसार मे बेशी भाँगक गोला आ समय देबय लगलाह। लाल काकाक परिवार अपने दरकल छलैन्ह। चौबीसो घंटा दलान ओगड़ने रहैत छलाह आ अनकर पारिवारिक समस्या मे हुलकी दैत रहैत छलाह संगहि युवक लोकनि के गप्पक जाल मे बझा 'नीति' आ 'कहबी' सुनबैत रहैत छलाह। ओम्हर लाल काकी अपना घरक काज जेना-तेना सम्पन्न क' अँगने-अँगने महिला सबके 'नीति' आ 'कहबी' सँ अवगत करवैत छलीह।

एक दिन त' अतत: भ' गेल। दू दिन सँ बुन्नी झिसिया रहल छलै। उबेर हेवाक कोनो नाम नहिं। नित्य पहिरयवला कपड़ा सुखायल नहिं आ भानसक जारन सिमसिमायल। मालाक मोन अपने खौंझायल छलै ताहि पर सँ मास्टर गोवर्धन प्रसाद जखन दंड नीतिक आश्रय लेलैन्ह त' माला रानी सेहो उदंड भ' गेलीह। रौद्र रूप धारण क' घोषित कयलैन्ह – आब जँ कियो हमर देह छूअत या प्रताड़ित करत त' हमहूँ बाज नहिं आयब। हमरो थाना आ पंचैती बुझल-सुनल अछि। सौंसे गाम मे अनघोल क' मुखौटा उतारि देब। भरि दिन काज क' मरैत छी हम आ टाँग टटाइत छैन्ह हिनका सबक, भाँगक गोला द' 'नीति' बघारबाक भाड़ा हिनका छैन्ह।

गोवर्धन प्रसाद पत्नीक रौद्र रूप देखि अचंभित छलाह। झीसी झहरि क' तेज बरखाक रूप ल' लेलक। वर्षा-ऋतु बहुतो के कवि, कथाकार, लेखक, गायक आर नहिं जानि की सब बना देलक। स्वयं मास्टर गोवर्धन प्रसाद एकर वर्णन करैत नहिं अघाइत छलाह। बेशी काल मल्हार, चौमासा गुनगुनाय लगैत छलाह। मुदा आई 'सखी हे सावन के....' या 'बैरी दादुर' के स्वर बिसरा गेल छलैन्ह, रहि-रहि क' याना आ पंचैती मोन पड़ि रहल छलैन्ह।

ओ त' सुकुर जे झमटगर बरखा होइत छलै, सब अपना घर मे दुबकल छल। दर-दियाद नहिं सुनलक ने त' सबक चर्चाक विषय भ' जइतै जे मास्टर साहब केहन मास्टर छथि आ केहन पुरुख छथि जे एकटा स्त्री पर अंकुश देल नहिं होइत छैन्ह। हमर पुरखा तीन-तीनटा स्त्री पर एक संगे अंकुश रखैत छलाह।

मास्टर गोवर्धन प्रसाद उठि क' देवाल पर टाँगल अयना मे अपन प्रतिछवि निहारलैन्ह – चानि पर केश नहिं मुदा मोंछ बेस झमटगर। महाराणा प्रताप स्टाइल मे ओकरा अईंठ क' कनेक आर नोखगर क' देलखिन्ह। कृषकाय छलाह त' की भेलै? गौर मुख-मंडल पर झमटगर मोंछ पुरुख हेवाक अभिमान आनि दैत छलैन्ह। स्कूल में पढ़ल पाँती मोन पड़लैन्ह – ''विपत्तिक समय मे पुरुषक परीक्षा होइत छैक'' आर मोन के स्थिर कयलैन्ह – एहि कठिन समस्याक निवारण त' हमरे करय पड़त। ओ बुझि नहिं रहल छलाह जे आखिर एहन कोन सूत्र छै जे हमरा गाय के मरखाही आ एतेक मुखर बना देलक – ताहि सूत्रक खोज मे ओ व्यग्र भ' गेलाह। अपन साम-दाम, दंड-भेद नीति पर हुनका अडिग विश्वास छलैन्ह। भले ही स्कूल या समाज मे एहि नीति सबक प्रयोग सँ हुनका सफलता नहिं भेटलैन्ह मुदा पारिवारिक जीवन मे नीति सब पर हुनक पूर्ण आ सफल अधिकार छलैन्ह। एहि सफलता क बहुत किछु श्रेय हुनक पूज्य आ श्रेष्ठ लाल काका के छलैन्ह, जे भोर साँझ हुनका मे पुरुख हेवाक भावना जागृत करैत छलखिन्ह आ सोदाहरण पुरुषक लक्षण-बोध करबैत रहैत छलखिन्ह।

लक्षण नम्बर एक – जे असल पुरुष अछि ओकरा स्त्री के कहियो बर्हिमुखी हेवाक अवसर नहिं देवाक चाही। नीक कुल शील वाली पत्नीक पहिल लक्षण भेल – अर्न्तमुखी हयब। अर्न्तमुखी होयतीह तखन ने सासुर मे व्यंग्यवाण आ ताना-बाना सहि सकतीह। नैहरक प्रति उपराग भेटबे करतैन्ह, से ओहने के सह्य हेतैन्ह जे धर्मशिला आ धैर्यशिला होयतीह। फलां बाबू पत्नी पर अंकुश नहिं रखलैन्ह त'.... लक्षण नम्बर दू - पुरुख के कखनो पत्नीक गुणक चर्चा सोझा मे नहिं करक चाही, ने त' ओ चानि पर चूड़ा कुटती। पत्नीक अवगुण या त्रुटि तुरत प्रकाश मे अनवाक चाही, जाहि सँ ओ हीनभावना सँ ग्रसित रहथि आ अपना के सुधारवाक प्रयास करथि। जेना हुनकर बहुरिया.....। लक्षण नम्बर तीन – पुरुख के कखनो अपना पत्नी लंग अपन या अपना परिवारक कोनो कमजोरी या त्रुटिक चर्चा नहिं करक चाही ने त' ओ कमजोर नस पकड़ि लाभ उठयबाक प्रयास करतीह। जेना कि....।

लक्षण नम्बर चारि – इष्ट-मित्र, सर-कुटुम्ब, घरक प्रत्येक सदस्य के अस्वस्थ्यताक जिज्ञासा करी मुदा पत्नी

सँ हालचाल पूछब याअस्वस्थ्य भेला पर स्वयं जिज्ञासा करब सर्वथा अनुचित। जँ अहाँ एना करैत छी त' मौगियाह छी, बहुक गुलाम छी। बुधियारी त' ई भेल जे साँपो मरि जाय आ लाठियो नहिं टूटय। एहन अवस्था मे छोट भाई या बालक के कहियैन्ह – हौ, सुभव ओ अस्वस्थ्य छथुन्ह। दवाईक दोकान मे पुछि क' कोनो दवाई आनि दहुन्ह या वैद्य जी के देखा - दहुन्ह। बेशी चिन्ताक गप्प होइ त' हमरा कहि दिह'। एही तरहक दू–चारिटा नीतिक व्याख्यानक बाद बैसार पतरा जाइत छल। तखन चलैत छल भांगक गोला, जे पनवारीक दोकान सँ अबैत छल।

बरखा थम्हि गेल मुदा मास्टर गोवर्धन प्रसादक चिन्तन–मंथन नहिं थम्हल। एही चिन्ता मे छलाह कि माय आबि आवेश केलखिन्ह – बाउ! कोन चिन्ता मे छी, कनेक काल आराम क' लिय', मोन हल्लुक भ' जायत। मायक सहानुभूति पाबि मास्टर साहबक पौरुख जागि उठलैन्ह। तिक्त स्वरे बजलाह – आराम त' हमर हराम भ' गेल। लोक हमरा जीबय नहिं देत। माय केरा पातक पट्टी बन्हलखिन्ह – थोड़ेक दिन लेल प्रेम कुम्मरि के नैहर पठा दियौन्ह। बरख दिन सँ कतहु गेलो नहिं छथि। एक ठाम रहैत–रहैत मोन अकुला जाइत छै। हवा–पानि बदलतैन्ह त' मोन थीरभ' जयतैन्ह।

माला रानीक अनुपस्थिति मे होवयवला दिक्कत ओ भोगि चुकल छलाह, ते ँ एहि सलाह परमोन आकुल भ' उठलैन्ह तथापि क्लास मे पढ़य–पढ़ायल श्लोक मोन पड़लैन्ह – माता क्वचिदपि....। हुनक अहंकारी पुरुख अस्तित्व कनेक काल लेल ई बिसरि गेल जे माला रानी मात्र तीन बुतरूक माय छथि। तथापि एहि समाधान के किछु अंश तक युक्तिसंगत बूझि मास्टर साहब पत्नी दिस उन्मुख भ' प्रस्ताव दोहरा देलैन्ह।

माला रानी केवाड़क अ'ढ़ मे ठाढ़ि सब सुनि रहल छलीह। मिझाइत जिनगी जकाँ भभकि उठलीह – हम कोनो बाटक ढेप नहिं छी जे जकरा जिम्हर मोन हेतै ओंघड़ा देत। नैहर जयबा सँ पहिने हमरा आ हमर बाल–बच्चा के ढ़ंगक कपड़ा चाही आ तेल–साबुन आदिक खर्चा लेल एक हजार रुपया। हम सब कतहु भिखमंगाक रूप मे नहिं जायब। थोड़े दिन नैहर रहब त' हमहूँ खुजि क' साँस लेब।

माताजीक के पासा उनटैत बुझेलैन्ह त' कुहरैत स्वर निकललैन्ह – बौआ, ते ँ कहबी छै माय ताकय अँतरी आ बहुताकय पोटरी। माताजी बिसरि गेलीह जे ओ ककरो बहु छथि त' माला रानी ककरो माय।

मास्टर गोवर्धन प्रसाद कनेक विचलित भेलाह, आब एहि नव समस्याक समाधान कोना कयल जाय। लाल कका क बैसार मे जयवाक बेर भ' गेल छलैन्ह। मोन पड़लैन्ह नीति–प्रकरण! पुरुख अस्तित्व गरजल - बड़–बड़ गेला त' मोंछवला अयलाह। हमरा लोक चिन्हलक अछि नहिं। हमर बिलाड़ि हमरे सँ म्याऊँ। गर्व सँ मोछ के अँठैत, माला रानी के घर मे जिंजिर चढ़ा स्वयं दलान दिस टहलि गेला।

ओम्हर लाल काका अपना दलान पर उपस्थित छलाह। मास्टर गोवर्धन प्रसाद के देखि तहिं चुनौटी निकालैत बजलाह – आई बड्ड अबेर भ' गेल? भाँगक जोगाड़ हमक' नेने छी। लाल काका के मास्टर साहबक पारिवारिक कलह क मादे कोनो समदियासमादि देने छलैन्ह। कने काल इम्हर–उम्हरक पारिवारिक गप्पक बाद नीति प्रकरण आरंभ भेल। बौआ! चिन्ताक कोनो बात नहीं एकेटा नीति मोन राखब –

ढ़ोल, गँवार, शुद्र, पशु, नारी
ई सब तारन के अधिकारी।

मास्टर साहबक मोन आ आँखि दूनू अपना आँगनक बाट पर लागल छलैन्ह। लाल काकी के टाटक अ'ढ़ देने

आँगन मे प्रवेश करैत देखि पिल्ही चौंक गेलैन्ह। मोन मे अयलैन्ह – माला रानीक रूद्र रूपक कुंजी कहूँ हमर लालकाकी त' ने छथि?

लाल काकी आंगन जाय कनियां के जिंजिर खोलि बाहर अनलैन्ह। कहि रहल छलखिन्ह – हम टाटक अ'ढ़ सँ सब खेराह सुनलहुँ। अहाँक सासु सेहो ओतहि छलीह ते काते रहलहुँ। दूनू मे किनको अहाँ बिना एक्को दिन गुजर नहिं हेतैन्ह। बहु बिना पुरुख के तुरत्ते घर अन्हारलागय लगैत छैक। बूढ़ी के आब हाथ झरकायब पार लगतैन्ह? आ इहो बूझल छैन्ह जे सगही कतेक दुलाररू रहैत छैक। तखन एकटा कहबी मोन राखब–हृदय मे दुकबाक रास्ता पेटे बाटे जाइत छैक।

मास्टर साहब चोट्टहि आंगन धुरि आयल छलाह। कात मे ठार्ह भेल सब सुनलैन्ह त' बुझा गेलैन्ह जे विभषण के छथि। मोंछ पर ताव देलैन्ह त' मस्तिष्क सहजहिं तना गेलैन्ह।

समस्याक जड़ि मे जल देनिहारि लाल काकीक दृष्टि सेहो मास्टर साहब पर पड़लैन्ह त' सुर बदलि गेलैन्ह – बौआ! सब गोंटे कतय चल गेल रहियै? कियो नेना कनियाँ के बाहर सँ जिंजिर चढ़ा देने छलै। कतेक केवारी ढकढका रहल छल। मास्टर गोवर्धन प्रसादक सामने नव समस्या ठारह् छलैन्ह। सोचि रहल छलाह – लाल काकी सँ कोनो निपटल जाय। एकरो नीति–निर्धारण त' लालेकाका करताह। ❑

मूल्यांकन

रंजना आ पाठक जी क जोड़ी बेस रमनगर छलैन्ह। रंजना महिला महाविद्यालय मे अर्थशास्त्र क प्राध्यापिका छथि आ पाठक जी सुखवीर दास महाविद्यालय में राजनीतिशास्त्र क प्राध्यापक आ विभागाध्यक्ष। रंजना महाविद्यालय क अतिरिक्त गृह–काज सँ दबल रहैत छलीह। पाठक जी राजनीतिशास्त्र पढ़विते टा नहि छलाह महल्ला, महाविद्यालय आ शहर क राजनीति मे से हो रूचि लैत छलाह।

मोबाइल संस्कृति लोक के छण–छण के समाचार स अवगति करा दैत छै। पाठक जी के जखन अपना महाविद्यालय में मूल्यांकन लेल नियुक्ति–पत्र भेटलैन्ह त रंजना के सेहो मोबाइल दबा क पूछि लेलखिन्ह। जखन बूझल भेलैन्ह जे दूने गोटे के एके मूल्यांकन केन्द्र अछि त' अतिशय प्रसन्नता भेल रहैन्ह आ खुशी मे भरि घर लेल चाट, पकौड़ा कीनने आयल रहथि।

पाठकजी जतेक प्रसन्न छलाह, रंजना लेल ओ समाचार ओतेक प्रसन्नता क नहि छलैन्ह। गृहिणी आ शिक्षिका क दायित्व मे ओ ततेक ओझरायल रहैत छलीह जे तेसर दायित्व क निर्वाह लेल ओकरा अपना दिनचर्या में बहुत रास फेर–बदल कर' पड़ैत छलै। ओ सोचि रहल छल मौसम क हिसाबे जहिया ऋतू निर्धारण भेल हेतै ओहि समय में स्कूल–कॉलेज क परीक्षा आ कापी–जाँच क समस्या नहि रहल हेतै। नहि त' एक टा आट ऋतु भेल रहितै – परीक्षा आ मूल्यांकन ऋतु। एहि पाँचम ऋतु के अयला पर रंजना के एक दिस आनन्द भेटैत छलै जे अनेको शिक्षक–शिक्षिका सँ बहुत दिन बाद भेट करक अवसर भेटैत छलै, किछु नव शिक्षक–शिक्षिका सँ परिचय होइत छलै, जँ कियो अपन पुरान सहपाठी भेट जाइ त' आनन्द दुगुन्ना भ' जाइत छलै। सब सँ लाभदायी होइत छलै जे विश्वविद्यालय संबंधी अनेको बात के जानकारी भेट जाइत छलै। दोसर दिस कष्ट छलै जे हित–मीत सब पैरवी लेल रौल नम्बर देब शुरू क' दैत छलखिन्ह। अधिकांश क कहब रहैत छलैन्ह- परीक्षा नीक भेल छै। तखन कम सँ कम साइठ- सत्तरि प्रतिशत अंक दिया देबै।

कालेज सँ एहि लेल कोनो रियायत नहिं, रूटीन क अनुसार क्लास चलबाक चाही, तखन कापी-जाँच सेहो करू। हँ, अपन विभाग क सह-शिक्षिका सँ क्लास क अदल-बदल या सामंजस्य क' सकैत छी। विश्वविद्यालय क फरमान रहैत छलै - परीक्षा मे काज करब नोकरी क अभिन्न अंग क अर्न्तगत अबैत अछि, एकर अवहेलना कयला पर विश्वविद्यालय कारवाइ क' सकैत अछि। मूल्यांकन केन्द्र पर अन्य अनेको समस्या उत्पन्न होइल छलै। सब समस्या के अनदेखल करैत आ नीक पक्ष के ध्यान में राखि रंजना अपना के मूल्यांकन ड्यूटी लेल तैयार कयलक। नियत समय आ नियत तिथि पर मूल्यांकन-केन्द्रों पर पहुँचल रहय।

दूनू बेगती के कालेज कने दूरी पर छलै। मूल्यांकन केन्द्र त' कालेज स' प्राय: दस कीलोमीटर पर छलै। जयवा काल पतिदेव संग मोटर साइकिल स' चल जाइल छल। अयवा काल टेम्पो स' अबैत छल। रंजना के घर जल्दी पहुँचवाक हड़बड़ी रहैत छलै। ओकरा चिन्ता रहैत छलै – भानसक, बेटा-बेटी क होमवर्क पूरा करयवाक आ अन्य गृह-काज क। पाठक जी मूल्यांकन केन्द्रक समय-समाप्ति तक चारू दिस क हवा पानि लैत रहैत छलखिन्ह, तकर बाद चाह-पान आ मित्रमंडली संग समय व्यतीत क' राति भेला पर डेरा अबैत छलाह। हुनकर कहब छलैन्ह-सबेरे डेरा अयला पर लगैत अछि आइ कालेज गेबे नईं केलहुँ।

रंजना अपना मोन के सांत्वना दैत छल-सब के पति त' प्रोफेसर नहिं छथिन्ह, सब ल'ग गाड़ी नहिं छै, ओहो सब एसगर टेम्पो-रिक्शा सँ अबैत-जाइत अछि आ अपन दायित्व क निर्वाह करैत अछि, हमहूँ ओही श्रणी क छी।

दोसर दिन मूल्यांकन-केन्द्र क गेट पर पहुँचल त' मेला जेना भीड़ लागल छलै - गार्जियन, विद्यार्थी आ पैरवीकारक। ओकरा बुझायल रहै जे ककरो-ककरो संग ड्यूटी पर तैनात पुलिस-कर्मी क बक-झक से हो चलि रहल छलै। ओ सब महाविद्यालय-परिसर मे बैसय चाहैत छल मुदा पुलिसकर्मी के हिदायत रहै जे महाविद्यालय क शिक्षक, कर्मचारी आ मूल्यांकन मे नियुक्त व्यक्ति क अतिरिक्त ककरो परिसर क भीतर नहि आवय देल जाय। गेट पर सब के परिचय-पत्र देखब' परैत छलै।

अभिभावक आ विद्यार्थी भीतर आवय-जाय वला प्रत्येक व्यक्ति के बड़ दयनीय दृष्टि स' देखैत छलाह जे कियो त' डूबैत लेल तिनका क सम्बल बनछु। नम्बर बढ़ाव' लेल कोनो-कोनो अभिभावक त' पाँच हजार रूपया तक खर्च करवा लेल तैयार छलाह। एहन निंबुद्धि सब सँ कर्मचारी कमा क' नेहाल भ' रहल छल। रिजल्ट क बाद विद्यार्थी के फेल कयला पर कियो अयबो करता त' साफ जवाब - हमरा त' अहाँ स' कहियो भेटो नहि अछि, हम त' मूल्यांकन-विभाग मे काज कहियो नहि छलहुँ।

एक टा विद्यार्थी अपन पिता संग वाक-युद्ध क' रहल छल-अहाँके कहने रही जे गाम क कालेज स' फार्म भरब मुदा अहाँ पर त' पटना क नीक कालेज क भूत सवार छल, कनेको चोरी नहि कर' देलकै। आब पाँच हजार देबो करबै त' कोना बुझाबै जे नम्बर बढ़ल कि नहिं । कापी त' कियो देखात नहि।

मूल्यांकन-केन्द्रक भीतर के दृश्य आर अद्‌भुत छल। एक लाइन स' प्राय: दसटा कोठली मे कापी-जाँच क काज चलि रहल छल। सब महिला-परीक्षक, एक-दू टा के छोड़ि क' अपन काज मे व्यस्त' छलीह। अधिकांश पुरुष परीक्षक हाथ मे रौल नम्बर क लिस्ट नेने घूमि रहल छलाह। सीनियर शिक्षक आ नवतुरिया शिक्षक सब एके रंग व्यस्त। जतय सकारात्का उत्तर नहि भेटैत छलैन्ह ओत' अड़ि जाइत छलाह-भाई, कने लिबरल बनू, विद्यार्थी पर दया करियौ। अहाँ स' भोजन, वस्त्र मकान या नगद नहि माँगि रहल छी, मात्र पाँच-दस नम्बर बेसी देबय कहि रहल छी' हमर बात के नकारि अहाँ एक शिक्षक क अपमान क' रहल छी। जँ लिस्टधारी के बूझल होइट छलैन्ह जे अमुक रौल नम्बर

क कापी कोनो महिला-परीक्षक ल'ग छैन्ह त' ओ अवग्रह मे परि जाइत छलाह आ कोनो तथाकथित लिबरल शिक्षक स' पैरवी करवैत छलाह संगहि टिप्पणी रहैत छलैन्ह- महिला सब त' महाकंजूस होइत छथि, हुनका कलम स' नम्बर तेना निकलत जेना हीरा-जवाहरात निकलि रहल हो।

रंजना के एक पैरवीकार स' बहस भ' भेल रहै। पैरवीकार क कहब छलैन्ह-ओहिना त' एहि विषय मे विद्यार्थी कम रहैत अछि, कम नम्बर अयला पर आर ने कियो पढ़त। ओ अनाप-शनाप बकि क' चल गेल रहथि । रंजना एहि तरहक बकवास क अभ्यस्त भ' गेल छलि तें चुपचाप पुनः अपन काज में लागि गेल रहय।

एक दिन कापी-जाँच क क्रम मे ओ एक टा सीनियर प्रोफेसर के कहैत सुनने छल- सर, अहाँ गलत आदमी ल'ग आबि गेल छी, हम पैरवी पर बेसी नम्बर देब' बला नहि छी। पैरवीकार सीनियर प्रोफेसर क बयस क लाज रखैत आगू बढ़ि गेल छलाह। रंजना के संतोष भेल रहै जे ओकरा विचार स' मिलैत आरो लोक छथि। प्रायः दुइये घंटा बाद ओहि सीनियर प्रोफेसर क प्रति ओकर धारणा गलत साबित भ' गेलै। प्रोफेसर साहब अपन सीनियोरिटी देखबैत ओकरा बड़ आत्मीय भावे कहने रहथिन्ह- मैडम, कने अमुक नम्बर क आ अमुक रौलनम्बर क कापी हमरा देख दिय त'।

रंजना पुछने रहैन्ह-की कोनो खास बात, सर!

- हँ, हमर सरबेटा क कापी अछि। हमरे कहला पर अर्थशास्त्र रखने अछि। हमरा विषय क विद्यार्थी रहैत आ एही सेन्टर पर, हमरे रूम मे कॉपी जँचा रहल होइ तखन त' अस्सी परसेन्ट नम्बर एबेक चाही।

रंजना अवाक भेल ओहि प्रोफेसर क गिरगिटिया रंग देखिते रहि गेल छल। कहने रहैन्ह सर! हमर प्रधान-परीक्षक क कहब छैन्ह जे सत्तरि परसेन्ट सँ उपरवला क कापी हमरा अलग सँ देखा देब तखन मार्क्स उतारब।

—अरे छोड़ू रंजना जी! सिद्धांत आ नियम त' बहुत किछु छै, ओकर पालन कतेक गोटे करैत छथि? अहाँक प्रधान-परीक्षक तीन दिन पर एक दिन बरसाती बेंग जकाँ उगैत छथि। सब काज त' अहीं क' रहल छी। हुनका त' दूनू हाथ में लड्डु छैन्ह। कोचिंग क्लास आ ट्यूसन त' चलिये रहल छैन्ह संग लागल प्रधान परीक्षक बनल छथि, अहाँ सन परीक्षक संग छैन्ह जे सब काज सम्हारि नेने छथिन्ह, तखन बाते कोन? हम त' हुनको पैरवी करैत देखने छियैन्ह। हुनका पलखति कत' छैन्ह जे सबटा कापी आ अंकपत्र चेक करताह?

रंजना क स्वर विद्रोही भ' उठल छलै-सर पहिने हमरा कापी देख त' दिय', जँ विद्यार्थी के साठि नम्बर एतै त' हम सत्तरि क' देबै। दस नम्बर से बेशी बढ़यवाक अर्थ भेल आन विद्यार्थीं संगे अन्याय करब। जकर पैरवी नहि छै ओकर कोन दोष जे ओकरा कम नम्बर देबै?

उत्तर सुनि प्रोफेसर साहब खौंझा क' कहने रहथिन्ह -महिला प्रोफेसर सब त' एहि विषय के डुबा क' राखि देथिन्ह। नीक नम्बर नहि एतै त' विद्यार्थी एहि विषय के कियाक पढ़त।

रंजना क उत्तर छलै- सर, उत्तर पुस्तिका क सही मूल्यांकन स' कोनो विषय नहि डूबैत छै। डूबैत छै त' ओहन प्रोफेसर क कारण जे क्लास में सही ढ़ंग स' नहि पढ़ा पबैत छै आ समाज सेवा क नाम पर अनुपयुक्त कापी मे नम्बर उझील दैत छथिन्ह। एहन विद्यार्थी सब शिक्षक भ' क' की पढ़ेता। ओहने शिक्षक सब अनाप शनाप नम्बर दियाब' लेल झगड़ा तक क' लैत छथि।

एकाएक बगल के रूम स' जोरगर बहस क आवाज सुनवा मे अयलै लोकनि रंजना क रूम स' कैक गोटे उठि क' बगल के रूम मे हवा-पानि लेब' गेलाह। ओतय अंग्रेजी क कापी जँचा रहल छलै। पाँचे मिनट बाद परीक्षक

हँसैत अपना सीट पर घुरलाह। सबकेर उत्सुक दृष्टि देखि एक गोटे कहने रहथिन्ह– कोनो नव गप्प नहि। प्रोफेसर लोटन त' पुरान पैरवीकार छथि। एक टा नवतुरिया परीक्षक स' भिड़ गेल छलाह। नवतुरिया क कहब छलै –सर, अपने त' आब रिटायर करै पर छी। हमर नोकरी एखन शुरूए भेल अछि। एखनहि जँ परीक्षक स' निलम्बित भ' जायब त' आगाँ की हयत ? ते कृपया हमरा बकसि देल जाओ। हम अपने नम्बर देबा मे उदार छी। सब के मुहँ पर दबल हँसी छलैन्ह। एक गोटे टिपने छलाह–''जे डरि गेल, से मरि गेल।''

एहि डायलाग पर ठहाका लागल छलै। आन दिन जकाँ अपन काज जल्दी–जल्दी निपटा क' रंजना डेरा आबि गेल छल। अयवा काल ओ अपना पतिदेव के किछु कहितो नहि छलैन्ह कारण ओकरा बूझल छलै जे ओ राति क नौ बजे स' पहिने डेरा नहि अओताह आ जकरा ओ हुनक दिनचर्या मानि नेने छल।

राति क नौ बजे डेरा अयला पर पाठक जी रंजना के एक टा कागज धरा देने छलखिन्ह – समाज में रहवाक अछि त' सामाजिकताक निबाह करैये पड़त। अहाँ त' तेहन भारी भरकम भेल, मुँह बनेने रहैत छी जे ककरो किछु कहवाक साहसे नहि होइत छै। एहि रौल नम्बर सब के नीक नम्बर क जोगाड़ लगेबै। रौल कोड, विषय, सेन्टर सब लीखल अछि। अहीं कालेज क टीचर सब ल'ग कापी छै।

किछु कहब आ पूछब रंजना के निरर्थक बुझना गेल छलै। अनेरो घर क वातावरण अशान्त होइतैक। ओ चुपचाप कागज अपना बैग में राखि नेने छल। एहि विषय पर ओकर सिद्धांत स्पष्ट आर एक रंग क छलै । पतिदेव आश्वस्त भेल छलाह जे बड़ आसानी स' पत्नी हुनकर मान राखि नेने छलखिन्ह।

आब रंजना एक टा आसान नियम बना लेलक। जे कियो ओकरा ल'ग पैरवी कर' अबैत छलखिन्ह हुनकर नाम, कापी क रौल आ कोड नम्बर, परीक्षा केन्द्रक नाम लिखा क' राखि लैत छल आ नम्रतापूर्वक आश्वस्त क' दैत छलैन्ह–कापी निकलला पर अपनेक काज हम अवश्य क' देब। पैरवीकार बिना कोनो राग–उपराग क शान्त भावे आगू बढ़ि जाइत छलाह।

एक दिन रंजना कापी देखय पहुँचल त' अपना सीट पर लड्ड क एक पैकट राखल देखलक। पहिने त' किछु नहि फुरेलै, चारू दिस नजरि घुमेलक त' एक परीक्षक ओकर उत्सुकता शान्त केने रहथिन्ह सीताराम कालेज क पलटू सर मिठाइ अनने छथि।

रंजना चुपचाप पैकेट के उठा क' बेंच पर राखि देलक आ काज मे लागि गेल छल।

आधा घंट बाद पलटू सर हैं ..... हें....... करैत पहुँचल रहथिन्ह आ कहने छलखिन्ह – मैडम, आइ हमर मैरेज–डे अछि। हमर पत्नी रूम न॰ नौ मे कापी देख रहल छथि। अहाँ नहि आयल छलहुँ त' हमसब पैकेट राखि चल गेल छलहुँ।

रंजना बधाई दैत कहने छलैन्ह – पत्नी के सेहो बजा अनियौन्ह त' समवेत, बधाइ देब आ सब गोटे मिल क' लड्डू खायब।

पलटू सर लड्डू क मात्रा आ रूम मे परीक्षक क संख्या देखि असमंजस मे परि गेल छलाह। ओ त' मात्र रंजना के प्रसन्न करवा लेल लड्डू अनने छलाह। रंजना बात के भँपैत हूनकर असमंजस स' उबारि देने छलैन्ह सर प्रसाद कहि क' लड्डू सबके तोड़ि–तोड़ि क' द' दियौन्ह। अन्त मे हमरा देब। पलटू सर लजाइत ओहिना केलैन्ह। अन्त मे जखन रंजना ल'ग अयलाह त' हाथ पर एकटा पूरा लड्डू रखलखिन्ह आ कने सकुचाइत पुछने रहथिन्ह – मैडम, हमरवला

रौल नम्बर सब देख लेलियै?

रंजना – त' ई लड्डू ओही उद्देश्य सँ छल? हमरा लोकनिक बीच आपसी एकता आ सौहार्द सब सँ जोरगर माध्यम अछि। लड्डू के माध्यम बनेला स' लड़ी कमजोर भ' जायत। पलटू सर निर्विकार भावे रंजनाक मुँह ताकि रहल छलाह जेना बीर केरा पात पर सँ पानि छहलि गेल हो। ओ रंजना मुँहे किछु सुन' चाहि रहल छलाह। अन्त मे रंजना के कह' परलै – अहाँक सब रौल नम्बर के योग्यता स' बेशी नम्बर भेटल छै।

रंजनाक विषयक मूल्यांकन समाप्त भेलै। अन्तिम दिन जहिया ओ सब बिल जमा केलक ओहि दिन बहुत प्रसन्न छल जे बिना कोनो झंझट आ अप्रिय घटना के ओकर ड्यूटी पूरा भेल छलै। पछिला मूल्यांकन मे एक पैरवीकार स' बहुत बाताबाती भ' गेल रहै। परीक्षक लोकनि के आशा छलैन्ह जे अबेर स' सही मुदा पेमेन्ट ओही दिन भ' जेतै, तेँ बहुत गोटे रूकलो छलाह। रंजना के घरक ड्यूटी बेकल क' रहल छलै। बिल जमा क' ओ पाठकजी माने पतिदेव के बिल क पेमेन्ट लेबा लेल अधिकृत क' डेरा विदा भ' गेल छल। पाठक जी ओहुना रातिक आठ बजे स' पहिने डेरा नईं पहुँचवाक नीति बनेने छलाह। ओइ दिन त' परिश्रम स' अर्जित अर्थलाभक आशा छलैन्ह।

दूनू मे कतेक अंतर छलै। पत्नी दोहरा ड्यूटी क' परेशान छलि त' पति एकल ड्यूटी क' परेशान छलाह। ❑

धरती छोड़ाना है

कला-संगम मे कवि-सम्मेलन चलि रहल छल। संचालक महोदय मंचस्थ कवि लोकनि के एका-एकी माइक पर कविता-पाठ लेल आमंत्रित क' रहल छलाह। कियो कवि खेतक थाल-कादो आ बोनिहारिन क वर्णन क' गेलाह, कियो टूटल हवाई चप्पल आ पयर मे फाटल बेमायवाली मैथिलानी के चित्रित क' गेलाह कियो हास्य-रस पर तुलल छलाह कियो सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था पर कानि रहल छलाह।

प्रत्येक कविता-पाठ पर श्रोता-दीर्घा सँ दमगर थपड़ी बाजि रहल छलै। ओहू मे कक्ष क एक कोन सँ वाह-वाह आ थपड़ीक बेशी जोरगर आवाज आबि रहल छलै, जेना इन्टर क्लासक खुराफाती बच्चा सब पछिला बेंच पर बैस क' अनेरो सब बात पर -येस सर, येस सर करैत रहैत अछि।

संचालक महोदय कक्ष मे बैसल श्रोता लोकनि सँ संयमित रहवाक आग्रह कयलैन्ह आ कवि लोकनि सँ आग्रह छलैन्ह जँ कविता पैघ हो त' एकटा आ जँ कविता छोट अछि त' दूटा कविता क पाठ करथि। संचालक महोदय पुनः श्रोता लोकनि दिस उन्मुख भेल छलाह – कखनो खनकैत थपड़ी बजैत अछि, कखनो घेंट बाझल सन त' कखनो सूतल सन। कृपया जोरदार थपड़ी स' कवि लोकनिक मनोभावक स्वागत कयल जाय। माइक पर आमंत्रित कयल गेलैन्ह कर्मठजी के। ई विवेकशील आ गंभीर कविक रूप मे जानल जाइत छलाह। कर्मठ जी एक कविता राजनैतिक समस्या पर आ एकटा पारिवारिक समस्या पर प्रस्तुत कयलैन्ह जे पुरानआ गाओल गीत सन छलैन्ह। वाह-वाह आ थपड़ीक आवाज बड्ड आस्ते छल। हठात कर्मठ जी कसिक' माइक पकड़ि तमतमायल स्वरे बजलाह – आब हम अपन तेसर कविता सुना रहल छी आ माइक गरजि उठल – ई बलचनमा अपना के हमर बाल-सखा कहैत अछि। सब दिन स' कखनो पीठ पर कखनो छाती पर मुक्का मारैत रहल। आइयो कोन मे बैसल थपड़ी-बजयबा मे राजनीति क' रहल अछि। सबके गप्प मे फँसेने अछि। एकर त' पुरान सिद्धान्त छै — धरती छोड़ाना है। आब हम एकरा दुनिया छोड़ायब।

श्रोता-समूह मे बैसल हमर कान ठारह् भेल। अर्द्धचेतन मोन सजग भेल त' चेतन मोन पर एक पुरान स्मृति अभरल

– चतरल बरक गाछ तर बउ दी (भौजी)क दोकान। बउ दी क हाथ मे जादू छलै। छन मे लोहिया चढ़ा बीत भरि क नाम-नाम बेगुन भाजा (भाटाक तरूआ) बना गहिकीक फरमाइस पूरा करैत छल त' छन मे केटली भरि चाह बना छानि क' चुकियामे बाँटि दैत छल, कोनो गहिकी के मुरही संग बेगुन भाजा पसिन्न छलै त' ककरो चाह संग बेगुन भाजा पसिन्न छलै। अवाध गतिये ओकर हाथ चलैत रहैत छलै। ओकरा कखनो कियो विचलित होइत नहिं देखलकै आ नहिं त' जोर स' बजैत। ठीक नओ बजे राति मे कोइला बला चूल्हा के मिझा गलियारी मे अ'ढ़क' राखि दैत छल आ अन्य सामान के बान्हि ट्राम पकड़ि चलि जाइत छल।

जेना अधिकांश शिक्षक अंग्रेजी आ क्षेत्रीय भाषाक खिच्चड़ि बना पढ़वैत छथि तहिना ओजस्वी मैथिल साहित्यकार ओहि गाछ त'र हिन्दी-मैथिलीक खिच्चड़ि पका कथा-कविताक आधार आ मैथिली भाषाक भविष्य निर्धारित करैत छलाह। गोट दसेक साहित्यकार कार्यालय स' निकलि रातिक एगारह बजे तक ओतय डटल रहैत छलाह आ मैथिलीक कार्यशाला छलैत छल। तीन-चारि गोटे के नियमित रूप स' पहिने पहुँचवाक प्रयास रहैत छलैन्ह। ओ लोकनि एकान्ती क' लैत छलाह – आइ किनका धरती छोड़यवाक अछि अर्थात हुनक व्यक्तित्व, हुनक रचना, रचनाक भाषाशैली आदिक एतेक प्रशंसाक पुल बान्हल जाय जे ओहि दिनक माला उठयवाक भार के ओ अस्वीकार नहिं क' पाबथि। ओहि दिन सबकेर चाय-पान, बेगुनभाजाक भार हुनके कपार। रातिक एगारह बजे अधिकांश गोटे अपन-अपन सफलता पर प्रसन्न होइत अंतिम ट्राम पकड़वा लेल दौड़ैत छलाह। किराना आ तरकारीक झोड़ा खालिये चल जाइत छल, इ सोचैत जे डेरा जा कोनो नव आ दमगर बहन्ना बनव' परत।

जे बेशी दिग्गज आ साहसी छलाह आ जिनकर डेरा पयरेक दूरी पर छल ओ रातिक बारह बजे – जखन सिपाही सीटी बजा डंटा फटफटबैत छल – अनमनायल मोने डेरा विदा होइत छलाह। संभवत: ई सोचैत जे आब जीवनक कतेक कटु सत्यक सामना कर' पड़त, नोन-तेल, तरकारीक रूदन।

श्रोता लोकनिक थपड़ी स' वर्त्तमान मे आबि गेलहुँ, मोन मे आयल – संभवत: इहो ओही 'धरती छोड़ाना है' क भुगतभोगी रहि चुकल छथि। ❑

अनमोल आनन्द

लोक कहैत छै नेनाक आत्मा मे परमात्माक वास होइत छैन्ह। जँ घर मे छोट नेना अछि त' घरक वातावरण आनन्दमय रहत। मुदा माय-पिता नेनाक तीन बरख पुरितहि स्कूल मे नाम लिखेवा लेल व्यग्र भ' जाइत छथिन्ह।

लक्ष्मी अपन जमानाक गप्प सोचि रहल छलीह। हुनको पिता धीया-पुताक शिक्षा लेल बड़ साकांक्ष छलखिन्ह। पहिने त' पांचम वर्ष मे अक्षर आरंभ आ तकर बाद अक्षर आ संख्याक ज्ञान घर पर कराओल जाइत छलै, तकर बाद पहिला क्लास स' विद्यालय। आब त' नेना पहिले दू बरख झूला झूलि क' गीत गाबि क' स्कूल मे बितबैत अछि, तखन अक्षर-ज्ञान कराओल जाइत छै। नेना तीने वर्षक अवस्था स' अनुशासन मे बन्हा जाइत अछि, जे ओकर प्राकृतिक स्वभाव आ स्वेच्छा के छीन लैत छै। नेनाक वश चलै त' चौबीसो घंटा ओकरा लेल खेलक समय रहैत छै।

लक्ष्मी सेहो त' अपन धीया-पुता के ओकर दादा-दादीक इच्छाक विपरीत आधुनिक स्कूल आ आधुनिक वयसक अनुसार आधुनिक कायदा-कानून मे बान्हि देने छलै। ओ जनैत अछि इ समय क तगादा छै तथापि नाति-नातिन, पोता-पोती के पीठ पर ओतेक भारी-बस्ता उघैत देखि हुनका दरेग कियाक होइत छैन्ह? संभवत: मूर स' सूद बेशी प्रिय होइत

छै ते ँ की?

लक्ष्मीक तीनू धीया-पुता अपन-अपन आजीविका मे लागल छल। लक्ष्मी ल'ग अयवा लेल ककरो पलखति नहि। छुट्‌टी मे अयवा लेल पुछला पर जवाब भेटै – ढ़ेर रास होम वर्क आ प्रोजेक्ट-वर्क करवाक छैक, संगहि सुनैत छलीह – गरमी-छुट्‌टी, पूजा-छुट्‌टी, स्कूल मे भेटैत छै, ऑफिस एहन कोनो छुट्‌टी कहाँ दैत छै। ओहो अपना मोन के मना लैत छलीह ठीके त' कहैत जाइत अछि, अनेरे ओकर मोन व्यग्र भ' जाइत छै। एहि बेरक गरमी-छुट्‌टी मे तीनू सपरिवार जुटि गेलै त' लक्ष्मीक आनन्दक ठेकाने नहि रहलैन्ह। दू-तीन दिन त' सब धीया-पुता खूब हिल-मिल क' रहलै, तकर बाद इ हम्मर त' ओ हम्मर शुरू भ' गेलै। लक्ष्मी के ओहू बाल-सुलभ झगड़ा मे आनन्द अबैत छलैन्ह। बच्चा सब माय ल'ग शिकायत ल'क- जाइ त' डाँटि क' भगा दै – नानी ल'ग जाइ जो त' दादी ल'ग जो, हुनके भरोस नहि छलैन्ह जे कहिया सबकेर जुटान हयत। लक्ष्मी एकरा अपन दायित्व मानि लेलैन्ह जे धीया-पुताक बीच मनमोटाव नहि होइ आ वातावरण सतत हँसी-खुशीक बनल रहै।

सब नेना त' अल्पमतिये छल – पाँच स' बारह वर्षक। नाति-नातिन जेठ छलै। ओकरा दूनू के नानी पर पहिल अधिकार बुझाइत छलै। ओ दूनू नानी स' सटि क' या कोरा मे बैसैत छल त' छोटका पोता राजा के हृदय कचोटि उठैत छलै, कारण ओ अपना के सब स' दुलारू आ प्रिय पात्र बुझैत छल। राजाक निश्छल प्रश्न होइत छलै – मिनी दीदी! तोहर दादी कत्त छौ? तों अपना दादी ल'ग कहिया जेबें? मिनी के सवाल अप्रिय लगै त' ओहो चोट्‌टहि पूछि बैसैत छलै – तोरा नानी नइ छउ? तों अपना नानी ल'ग कहिया जेबें?

लक्ष्मी तखन बीच-बचाव करैत छल – एखन त' हम सबके बजेने छियै तखन आन ठाम कियो कियाक जायत? ओ एक पलथा पर मिनी के बैसवैत छलीह त' दोसर पर राजा के। इ देखि अन्य नाति-पोता के अपन अधिकार छुटैत बुझाइत छलै त' सब आबिक' लक्ष्मीक गरदनि, पीठ, बांहि पकड़ि झूलि जाइत छलै आ लक्ष्मी नेहाल भ' जाइत छलीह।

राति मे सुतबा काल पाँचो नेना क आग्रह रहैत छलै जे खिस्सा सुनब। लक्ष्मी नीचा मे विछान क' सबके समेटि क' अपने ल'ग सुतबैत छलीह। खिस्सा सुनैत-सुनैत सब सुतियो रहैत छल। बेशी काल ओ सब के गोनू झाक खिस्सा सुनबैत छलीह गोनू झा आ चोरक खिस्सा सुनलाक बाद मँझिला पोता ललन पुछने छलै – दादी यै गोनू झा एतेक होशियार आ चोर सब एतेक बुद्धु कियाक छलै?

राजा अपन बाल निश्छलता क परिचय देने छल – अरे बुद्धू तोरा इ बात नहि बुझल छौ? हमर मैम कहैत छथिन्ह जे बच्चा अपना स' पैघक बात मानैत अछि आ पढ़ाई-लिखाइ मे मोन लगबैत अछि ओ बच्चा होशियार बनैत अछि ओकरा सब प्यार करैत छै आ जे बच्चा लड़ाई-झगड़ा करैत अछि, चोरी करैत अछि, पैघक बात नहि मानैत अछि ओ बुद्धू बनैत अछि, ओकरा कियो प्यार नहि करैत छै।

राजाक कहवाक ढ़ंग पर जेठ बच्चा सब मुसकी द' रहल छल त' राजा पुनः पुछने छलैन्ह – दादी हमर मैम ठीक कहैत छथिन्ह ने? लक्ष्मी ओकर मनोबल बढ़ेने छलीह – हँ बेटा, मैम एकदम ठीक कहैत छथिन्ह। सब स' जेठ गोलू के पढ़ाइ स' बेशी क्रिकेट, टी.भी. कम्प्यूटर आकर्षित करैत छलै, प्रश्न केने रहैन्ह - नानी, मम्मी कहैत अछि - बच्चा सबके सब काज करवाक चाही, तखन जँ हम खेलयबा लेल जाइत छी, टी.भी. देखैत छी - या कम्प्यूटर पर किछु करैत छी त' मम्मी कियाक डाँटि क' भगा दैत अछि?

मोनू अपना स्तर स' प्रश्न क उत्तर देने छलै - दादी इ पढ़ाइ मे कम आ खेल-कूद , टी.भी. कम्प्यूटर मे बेशी समय लगबैत अछि। तखन त' गोनू झाक चोर जकाँ इहो बुद्धू रहि जायत?

गोलू तमसा गेल – सुन मोनू, बच्चा छे ँ त' बच्चा जकाँ रह; पापा जकाँ सबके बुद्धि देवाक काज नहि छौ। मिनी तमकि क' बाजल - नानी, नानी इ मम्मी वला डायलाग बाजि रहल अछि। मम्मी सुनत त' एकर ठोकैया भ' जेतै।

गोलू के अपना नानी पर पूरा भरोसा छलै, बाजल छल – ककर हिम्मत छै जे नानी के आगू हमरा छू लेत। राजा सबहक गप्प खूब ध्यान स' सुनि रहल छल, एकाएक कूदि क' बाजल - दादी, इ त' टी.भी. सिरियल मे ची-चेंग बजैत छलै, ते ँ मम्मी टी.भी. देखबा स' मना करैत छै।

गोलूक आक्रोश कम नहि भेल छलै। ओकर पुन: प्रश्न छलै – जँ टी.भी. आ कम्प्यूटर एतेक खराब छै त' सब घर मे टी.भी. कियाक छै? मम्मी-पापा सेहो त' देखैत छथि?

आब लक्ष्मी ओकर तामस शान्त करवाक प्रयास केलैन्ह – बेटा! टी.भी. आ कम्प्यूटर दूनूक ज्ञान आधुनिक युग में आवश्यक छै संगहि क्लासक पढ़ाइ सेहो ओतबे जरूरी छै। नीक नम्बर नहि आनब त' नीक स्कूल-कॉलेज मे नाम नहि लिखात। नीक नम्बरक संग नीक स्कूल-कॉलेजक डिग्री सेहो जरूरी छै। आगूक जीवन मे नोकरी या धंधा (प्रैक्टिस) या अपन परिचय देवा मे बहुत प्रभावी होइत छै। बच्चा सबके टी.भी. मे आलतू-फालतू चैनल नहि देखि खेल-कूद, समाचार आ ज्ञानवृद्धि वला चैनल सब देखवाक चाही। कम्प्यूटर पर गेम खेलाउ मुदा मारि-पीट या चोर-बदमाशवला नहि। माँ अहाँ स' बेसी बूझैत छथि, ओ अहींक नीक लेल कोनो बात स' मना करैत छथि। पैघ हयब त' अहूँ सब बात बूझ' लागब।

गोलूक चेहरा पर आश्वस्तिक भाव देखि लक्ष्मी के सेहो संतोष भेल छलै। बहस के रोकबा लेल लक्ष्मी विषय-परिवर्त्तन क' देलैन्ह। हुनका अनुभव छलैन्ह जे धीया-पुताक झगड़ाक परिणाम होइत छलै – माय द्वारा ओकरा डाँटब आ पिटाइ। तखन दूनूक माय मे सेहो आन्तरिक मनमोटाव भ' जाइत छलै। ओना उच्च शिक्षित हेवाक कारण आपकता बनल रहैत छलै मुदा फेर जल्दी जुटान नहि होइ एकर मोनेमोन निर्णय लैत छल। लक्ष्मी सब किछु बुझियो क' स्नेहक वातावरणक बनेवाक प्रयास करैत छलीह।

विषयक परिवर्त्तन भेल। लक्ष्मी आह्लादित होइत बाजल रहैथ – सब बच्चा एक-एक क' कहत जे पढ़ि-लिखक' के की बनत। पहिने जेठ सब तखन अन्त मे छोटकू। गोलू जे सब स' जेठ छल बाजल छल – हम पहिने कम्प्यूटर साइन्स पढ़ब तखन आन कोनो विषय मे विशेष डिग्री लेब। मिनी उत्साहि भ' बाजल - हम त' डाक्टर बनब। मोटका सूइ भैया के बाहि मे भोंकि देबै। जखन हमरा स' झगड़ा करैत अछि त' हमर बांहि मचोरि दैत अछि।

गोलू मिनी पर झपटबाक प्रयास केलक मुदा लक्ष्मी बीचे मे रोकि देलखिन्ह - सबके अपना मोनक बात बाज' दियौ। आब मोनूक पार छलै। ओहो जेना पहिने स' सोचने छल, बाजल - हम त' पुलिस ऑफिसर बनब। सब चोर-बदमाश के पकड़ि क' सजा दियेबै।

ललन अपन पारीक प्रतीक्षा मे छल, खूब गंभीर होइत बाजल - हमर पापा के बड्ड अबेर तक ऑफिस मे काज कर पड़ैत छैन्ह हम हुनके संग काज करब, तखन अबेर नहि हेतैन्ह आ तखन अबेर दुआरे मम्मी हुनका संग झगड़ा

नहि करतैन्ह। छोटका राजाक दिमाग बड़ तेजी स' काज केलकै, बाजल छल – नहि भैया नहि, अबेर तक काज नहि करिहें, तखन तोहर पत्नी तोरा डँटतौ। पुनः बाजल छल – हम त' प्लस टू क' क' बियाह क' लेब। हमरा घर मे काज नहि कर' पड़त। संभवतः राजा लेल प्लस टू क शिक्षा सर्वोच्च, छलै। लक्ष्मी आश्चर्य स' राजाक मुँह ताक' लागल रहथिन्ह। पुछने रहथिन्ह – पत्नी ककरा कहैत छै, तोरा बूझल छौ?

– हँ, बूझल अछि। पार्टी मे देखै छियै ने। बियाह क' क' जे लड़की अबैत छै आ सजि क' पार्टी मे बैसैत छै ओ पत्नी होइत छै। पार्टी स' ओकर मतलब 'रिसेप्सन-पार्टी' स' छलै।

लक्ष्मी पुनः पुछने रहथिन्ह – आ पति ककरा कहैत छै? उत्तर छलै – जे लड़का बियाह क' क' अबैत छै ओ पति होइत छै। सब बच्चा के मुसकी दैत देख राजा पुनः अपन निश्छलता क परिचय देने छल - दादी! अइ मे हँसै के कोन बात छै? हम ठीक कहलहुं ने?

लक्ष्मीक इच्छा भेल रहै जे पाँच वर्षक राजा के कोरह मे साटि क' अनगिनत चुम्मा ल' लै मुदा तखन पाँचो मे चुम्मा लियाबक होड़ लागि जयतैक। अपन भावना पर काबू करैत लक्ष्मी पुनः कहने रहथिन्ह - हँ-हँ एकदम ठीक कहलें एहि उत्तर पर त' पचीस मे पचीस नम्बर भेटतौ। अच्छा, आब इ कह जे पति-पत्नीक काज की होइत छै?

राजा कने काल गुम्म रहल, फेर बाजल छल - पत्नीक काज होइत छै भानस करब, बच्चा के तैयार क' स्कूल पठायब, बच्चा के होम वर्क करेनाइ, बच्चा के आ पापा के टिफिन देनाइ, बाजार स' कपड़ा खिलौना टॉफी अननाइ आ एकटा काज आर - जँ बच्चा बात नहि मानय त' पिटाइ केनाइ। लक्ष्मी – आ पति क काज की होइत छै? राजा - पतिक काज होइत छै ऑफिस स' टाका आनि क' पत्नी के देनाइ। घर मे राति क' लैप-टॉप पर काज केनाइ, भोरे स' मोबाइल पर गप्प केनाइ, चैनल बदलि-बदलि क' टी.भी. देखनाइ आ जखन पत्नी डांटय त' खाना खा क' सूति रहनाइ। फेर भोरे जखन डांट परै त' उठि क' तेयार भेनाइ, खाना खा क' टिफिन ल' क' ऑफिस गेनाइ।

पुनः लक्ष्मीक प्रश्न छलैन्ह – हमर राजा बेटा बियाहक बाद की करत? – हम सब पाइ पत्नी के नहि देबै, अपना लेल टॉफी आ डेयरी मिल्क कीनबा लेल थोड़ेक पाइ राखि लेब। हम ऑफिस स' अयबा मे देरी सेहो नहि करब।

लक्ष्मीक आनन्दक ठेकान नहि छलैन्ह। सोचि रहल छलीह – नाति-नातिन, पोता सबहक पारिवारिक जीवन नहि देख सकती मुदा नेना, सब अपन पारिवारिक कल्पना-लोक स' घुमा अनलकैन्ह। मिनी के भरिसक राजाक प्लानिंग नीक नहि लागि रहल छलै। पुछने छलि - नानी! आब काल्हि हम सबकी खेलायब?

– काल्हि हम सब अन्तराक्षी खेलायब। सब बच्चा हँ-हँ कहि कूदि उठल मुदा राजा क मोन छोट भ' गेलै - हमरा ओतेक गाना या कविता नहि अबैत अछि।

लक्ष्मी समाधान लेल प्रस्ताव रखने छलीह – राजा अंतिम अक्षर स' शब्द बाजत। जेना - म स' मांछ या मगर।

समवेत उत्तर छलै – ठीक छै, मुदा परसू हम सब कतहु घूम' जायब। निर्णय भेलै - परसू चिड़ियाखाना जायब आ भोजन बाहर करब। भोजनक बेर भ' गेल छलै। बच्चा सबके माय लोकनि भोजन लेल बजा रहल छलखिन्ह। लक्ष्मी सबके समेटि क' भोजन कराबय बैसलीह त' बड़की पुतोहु छोटकी के फुसफुसा क' कहि रहल छलखिन्ह - बूढ़ी क चेहरा पर खुशी देख रहल छी? बुझाइया पांच बरखक अरूदा बढ़ि गेलैन्ह। अपना बेटीक चेहरा पर सेहो मुसकी

देखलैन्ह, जेना सोचि रहल हो – माँ, बढ़िया फसल।

लक्ष्मी सबहक गप्प आ भाव बुझियो क' अनठेने छलीह आ सोचि रहल छलीह – इ सब एहि आनन्दक मोल के बिना अनुभव केने कोना बुझि सकैत छथि। इ आनन्द त' अनमोल अछि। लक्ष्मी अनुभव केने छलीह जे नेनाक हृदय आ मस्तिष्क त' सादा कागज छी जकर विकास परिवेश आ शिक्षाक अनुसार होइत छै।

दस दिन लक्ष्मीक घर धीया-पुताक किलकारी स' गुंजित रहल। फेर वएह रामा, वएह खटोला। बच्चा सबके वापस जेबा स' घर सुन्न भ' गेल छलैन्ह, दुख छलैन्ह मुदा सबहक सुभ्यस्तता आ नियमित पढ़ाई देखि मोन गदगद छलैन्ह। विचार अयलैन्ह – जँ एहि अनमोल आनन्दक पल के स्मृति रूप मे लिपिबद्ध क' राखी त' इ सब दिन हमरा आंखिक समक्ष साकार होइत रहत। ❑

सेवा निवृत्ति

लोक कहैत छै पूसक जाड़ हाड़ कँपा दैत छै। माघक प्रवेशक संग संक्रान्तिक बाद जाड़ आस्ते-आस्ते कम होवय लगैत छै। मुदा लगैत छलै जेना पुरना मान्यता आब सबटा उनटल जा रहल अछि। जहिना नवका धीया-पूता अगत्ती तहिना मनुक्ख अतत्तह करवा पर उतारू। तखन ऋतुए कियाक लीक पर चलत। ओहो अपन रंग बदलि रहल अछि। संक्रान्तिक प्रात सँ जाड़ किछु बेसीये बढ़ल जा रहल छलै। भोरक एगारह बजे तक कुहासा धुआँ जकाँ छाड़ने।

ओहू कुहेस मे श्रद्धा पाठक माने भरि महाविद्यालयक श्रद्धा दीदी ठीक साढ़े नौ बजे महाविद्यालय परिसर मे प्रवेश क' जाइत छलीह। महाविद्यालयक प्रधानाचार्याक उत्तरदायित्व आ कर्तव्यक प्रति प्रारंभहि सँ पूर्ण सचेष्ट रहलीह। शिक्षकेत्तर कर्मचारी के जे कार्यालय प्रभारी सब छलाह हुनको आर शिक्षक-शिक्षिका लोकनि के सेहो साठे नओ बजे तक अपन ड्यूटी पर आबि जयवाक छलैन्ह। निम्नवर्गीय कर्मचारी के आठ बजे तक आबि क' सब क्लास-रूम, परिसर आदि के साफ करक निर्देश छलैन्ह।

नित्य दिन क अनुरूप ओहू दिन महाविद्यालय आबि पहिने ओ चारू दिस निरीक्षण क' अपन चेम्बर मे बैसलीह। दाई भीतर आबि बत्ती जरा, हीटर चला देलकैन्ह आ रूमक परदा ठीक क' बाहर स्टूल पर बैस रहल।

श्रद्धाक इच्छा भ' रहल छलैन्ह जे उबेर होइतै त' बाहर बैसतहुँ जतय सँ पूरा महाविद्यालय परिसर देखाइत छलै। श्रद्धाक सेवानिवृत्ति मे मात्र चारि मास रहि गेल छैन्ह। ई महाविद्यालय सब दिन हुनका वेदना देलकैन्ह – जन्म देवाक अर्थात् स्थापना करक, ओकर बाद एक-एक विषय आर विषयक शिक्षकक पोस्ट क मान्यता दियाबय मे, त' मकान बनयवा मे, महाविद्यालय क प्रत्येक विकास मे तथापि जेना नेना के विकसित होइत देखि प्रसन्नता होइत छै तहिना महाविद्यालय के देखि श्रद्धा के बहुत आत्म संतोष होइत छलैन्ह।

शान्त वातावरण आ कक्षक एकाकीपन श्रद्धा के पूर्वक समय मोन पारि देलकैन्ह। ओ दसम् वर्गक छात्रा छलीह त' पटना सचिवालय मे कार्यरत राकेश पाठक संग विवाह भेल छलैन्ह। गामक स्कूल सँ मैट्रिक केलाक बाद पढ़वाक ब्यौत नहिं भेलैन्ह। गाम मे कॉलेज नहिं छलै। तेसर बरख दुरागमनक किछु दिन बाद पटना अयलीह त' पति ल'ग आगू पढ़क इच्छा व्यक्त कयने छलखिन्ह। राकेश पाठकक सेहो इच्छा छलैन्ह जे श्रद्धा आगू पढ़थि। पति सँ सहयोग, प्रेरणाआ उत्साह पाबि श्रद्धा नीक नम्बर सँ बी.ए. ऑनर्स क' लेलैन्ह। एहि बीच एक बेटा आ एक बेटीक माय भ' गेल छलीह,

ओकरो सही पालन–पोषण क' रहल छलीह।

श्रद्धाक सोच मे व्यतिक्रम अयलैन्ह। नीला सिंह तमतमायल प्रवेश कयलखिन्ह। सीनियोरिटी मे ई श्रद्धाक बाद छलखिन्ह। तेँ श्रद्धाक सेवा–निवृत्तिक बाद हिनका प्रधानाचार्याक पद पर आसीन हेवाक उत्साह छलैन्ह। अबितहिं ने प्रणाम, ने आदर, बजलीह – दीदी! हम त' रूटीन बनयवा सँ तंग आबि गेल छी, सबके अपन सुविधा सँ क्लासक समय चाहियैन्ह। कनेक सकुचाइत विनम्र हेवाक प्रयास कयलैन्ह – आ दीदी, अहाँके खराब नई लगवाक चाही ओहूना आब हमरा अई सब सँ छुट्टी त' भेटवेक चाही।

श्रद्धा स्थिति के भँपैत शान्त छलीह – हँ, हँ आउ बैसू। ई चारि मास बीतैत कतेक समय लगतैक। हम त' चाहैत छलहुँ अहाँ स्वयं प्रधानाचार्याक रूप मे व्यवस्था मे परिवर्त्तन अनितहुँ त' बेशी संतोषदायक होइत। नीला सिंह कनेक आर विनम्रताक नाटक कयलीह – दीदी अहाँ सन व्यवस्था ककरो नहिं कयल हेतै। हमरा त' अहाँक आशीर्वाद चाही। उठैत बजलीह – बेश, त' दीदी देखै छियै।

कनेक कालक बाद सुषमा झा प्रणाम दीदी कहैत प्रवेश कयलैन्ह – दीदी, अहाँ नीला सिंह के की कहलियैन्ह जे एतेक फुदकि रहल छथि? कनेको गंभीरता छन्हिये नहिं। दीदी, सेवा–निवृत्तिक समय दू वर्ष बढ़वे करतैक। अहाँ हुनकर मोन एतेक नई बढ़वियौन्ह। जहिया दू वर्ष बढ़वाक घोषणा हेतै, हुनका अपन प्रधानाचार्याक कुरसी दू वर्ष पाछू घुसकैत देखि कहुँ हृदय–आघात ने भ' जाइन्ह। श्रद्धा के अनेरो हँसी लागि गेलैन्ह। सुषमा झा के बैसवाक इशारा करैत पुछलथिन्ह – आर की समाचार? सुषमा क खौंझायल स्वर छल – हम त' क्षुब्ध छी। ककरो अपन हेडसिपक कुरसी देखा रहल छै, ककरो प्रधानाचार्यक। कियो विदाई–समारोहक गप्प क' रहल अछि त' कियो मधुर खयवाक। एकरे छहै छै पानि मे माछ आ नौ–नौ कुटिया बखरा। सुषमा के गेलाक बाद श्रद्धा फेर अपन बीतल समय मे मग्न भ' गेलीह। बी.ए.क बाद दू बच्चा के ल' पढ़ाई असंभव भ' गेल छलैन्ह। तैयो एम.ए. करक लेल राकेश उत्साहित कयने छलखिन्ह। गाम सँ मदद करक लेल एकटा खवासिनीक बेटी के आनि देलखिन्ह आर मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा मे एम.ए. मे नामो लिखा देलखिन्ह। हुनक परिचयक बले फार्म भरा गेलैन्ह। परीक्षा सेहो द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण कयलैन्ह। पास कयलाक बाद दू वर्ष बहुत आनन्द मे बितलैन्ह। मुदा आब राकेश हुनका नोकरी करवाक लेल प्रेरित क' रहल छलखिन्ह। जकरा श्रद्धा हँसि क' टारि दैत छलीह – अच्छा, बच्चा दूनू के कनेक बुझनुक होवय दियौ।

राकेश जेना श्रद्धा के योग्य आ आत्मविश्वासी बनयवाक भार उठेने छलखिन्ह से पूरा क' एक दिन हठात एक छोट दुर्घटना मे संसार सँ विदा भ' गेलाह। श्रद्धा अपन परिवार समटि सासुर आबि गेलीह। राकेशक पिता सुझाव देने रहथिन्ह – अहाँ नोकरी करब त' हम कमपनसेट्री ग्राउन्ड पर अर्जी द' दियै। श्रद्धा तखन मना क' गामे मे परिवारक संग रहक इच्छा व्यक्त केने रहथिन्ह।

श्रद्धाक सासुर–मनोहरपुर। एक पैघ कसबा। एहि गाम मे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, आवश्यक सब वस्तु क दोकान। एकटा नीक पैघ प्रतिष्ठित गाम। लोक सब पढ़ल–लिखल, धनिक। लोक सब सँ मेल–जोल बढ़ला पर श्रद्धा के बुझायल रहै जे लड़की सब लेल जँ एकटा कॉलेज भ' जइतै त' बहुत लड़कीक जीवन सुधरि जइतै। गामक स्कूल मे सह–शिक्षा लेल बेटी के अनुमति भेटि जाइत छलै। मुदा कॉलेज मे सह–शिक्षाक अनुमति नहिये जकाँ भेटैत छलै। तकर कारण छल – आन गाम सँ आबयवला लड़का सब लड़की सब सँ अनेरो चौल करैत छलै आ उछन्नर दैत छलै। कत्ता बेर हो–हल्ला, मारि–पीट भेल मुदा परिणाम मे वैह ढ़ाक क तीन पात। लड़कीक कॉलेज जायब वर्जित भ' जाइत

छल। मैट्रिक मे पहुँचितै बेटी लेल बर ताकब शुरू भ' जाइत छल। पाइक बले बर ताकल जाइत छल –डाक्टर, इन्जीनियर, प्रोफेसर अथवा कोनो नीक पद पर आसीन अफसर। बिवाहक बाद श्रद्धा जकाँ सुशील आ समर्पित जीवन संगी सबके नहिं भेटैत छलै। एहि तरहक बेमेल विवाहक कैकटा दुष्परिणाम गाम मे छलै। विवाह मे गनल पाई सँ लड़का विदेश गेल त' ओतहि रहि गेल। स्वदेश मे अछि त' पत्नी बच्चा पोसथु, घर देखथु, पतिक चाकरी करथु। पति के घर क बाहर अपन स्टैंडर्ड क मित्तिन छलैन्ह।

गाम क एहन पीड़ित परिवार सँ गप्प क' श्रद्धा लड़की सबक लेल महाविद्यालय खोलवाक प्रस्ताव रखने रहथि। प्रस्तावक त' सब सहर्ष स्वागत कयलैन्ह, मुदा जमीन या अर्थक सहयोग बेर सब पाछू हटि गेलाह। श्रद्धाक चिन्तन–प्रवाह एक बेर फेर रूकल। केवाड़ ल'ग महाविद्यालयक बड़ा बाबू ठाढ़ छलाह – प्रणाम दीदी।

श्रद्धा आग्रह सँ भीतर आवय कहलखिन्ह। बड़ा बाबूक नोकरी सेहो लकचियाल रहैन्ह। बड़ा बाबू दिस ताकि श्रद्धा बिहुँसलीह। कोट–पैन्ट, कनझप्पा–टोपी आ तई पर सँ मोटका उनी ओढ़ना। तैयो बड़ा बाबू धोकचल छलाह। महाविद्यालयक स्थापना काल सँ इहो श्रद्धाक संगे छथि। महाविद्यालय लेल चन्दा उगाही मे, विश्वविद्यालय जा कोनो काज करयवा मे या विश्वविद्यालय क पदाधिकारी द्वारा महाविद्यालयक निरीक्षण काल ई एक विश्वासी व्यक्ति जेना काज केने छथिन्ह। ते ँ हिनक कतेको गलती के श्रद्धा क्षमा करैत रहलखिन्ह।

बड़ा बाबू एकटा चिट्ठी देखवैत कहने रहथिन्ह – दीदी! अहाँ त' कॉलेजों मे हमर हेड छी आ घरो में। अहाँके हम गार्जियन मानत छी। आब ई कहू – ई चिट्ठी हमर बड़का बेटा लिखने अछि जे सेवा निवृत्ति काल जे टाका भेटत से हम ओकरा दूनू भाई के नामे द' दियौ। ओ सब पटना मे मकान बना रहल अछि। मदद भ' जेतै। संगहि बुद्धि देने अछि जे सेवा–निवृत्तिक बाद अहूँ थोड़े–थोड़े दिनक लेल हमरा सब संगे रहब त' मोनो लागत। इहो लिखने अछि जे अहाँके पेन्सनक पाई त' सेहो भेटबे करत। आब दुखित रहैत छी सेवा–निवृत्ति लैये लेब। दुखित के देखवाक ककरो समय नहिं छै मुदा हम सेवा–निवृत्त भ' जाइ ई चिन्ता सबके छै। श्रद्धा स्वयं विस्मित छलीह। बड़ बाबू के संतोष लेल कहलखिन्ह – एहि सब निर्णय मे शीघ्रता नहिं करक चाही।

आब बाहर रौद पसरि गेल छल। बाहर मे कुर्सी मँगवाय श्रद्धा रौद मे बैस गेलीह। एतय सँ सम्पूर्ण महाविद्यालय देखाई द' रहल छलै। प्रत्येक वर्गक पढ़ाई चलि रहल छल। किछु लड़की परिसर मे रौद मे बैसल छल। श्रद्धा के मोन पड़ैत छैन्ह – अपन गृहस्थी आ बच्चा सबक पढ़ाई कष्ट सँ चलि रहल छलैन्ह तथापि अपन गहना बेचि पाँच हजार रुपया सँ पहिने दस कट्ठा जमीन फेर ओहि पर खपराक छोट–छोट चारि कोठलीक निर्माण भेल छल। प्रथम वर्ष मे आई.ए. मे मात्र पाँच छात्रा नाम लिखेने छलै। आई ओहि महाविद्यालय के विश्वविद्यालय सँ मान्यता प्राप्त छै। प्राय: सात सय छात्रा छै। कला आ विज्ञानक अलग–अलग पढ़ाई आनर्स स्तर तक भ' रहल छै। चालीस गोट शिक्षक–शिक्षिका आ तीस गोट कार्यालय–कर्मचारी आ पन्द्रह टा निम्न वर्गीय कर्मचारी कार्यरत छथि। पहिने पाँच–पाँच रूमक कला आ विज्ञान भवन बनल फेर ओकरा दू तल्ला क' दस–दस रूमक बनाओल गेल। एकटा कसबाक लेल ई बड्ड पैघ उपलब्धि कहल जा सकैछ – एकर मुख्य श्रेय श्रद्धा के छैन्ह।

प्राय: सौंसे गाम के आ संबंधी लोकनि के सेहो ई बात बूझल छैन्ह जे श्रद्धा सेवा–निवृत्त भ' रहल छथि। याचक हुनका ल'ग सब दिन रहलैन्ह। कियो नोकरी लेल, कियो अर्थक लेल। आब त' याचनाक संग लोक उपदेश सेहो द' रहल छैन्ह जेना ओ एक निर्बुद्धि नेना होथि।

कालि्ह नवकी काकी आयल रहथिन्ह। अपन पतिक तेसर पत्नीक रूप में हुनकर गृह-प्रवेश भेल छलैन्ह। तहिया सँ ओ नवकी काकी छथि। कहैत रहथिन्ह-बौआसिन जिनगी मे बड़ पुन्न कमेलहुँ। लक्ष्मी (काकीक पोती) के पढ़ाक' मनुक्ख बना देलियै। आब कतहु बियाहो करा दियौ। बड्ड पुन्न हयत। श्रद्धा चुपचाप सुनि नेने छलीह। चपरासी थोड़ेक चिट्ठी आनि क' सामने मे राखि देलकैन्ह। विश्वविद्यालयक चिट्टीक संग हुनक बेटाक लिखल चिट्ठी सेहो छलैन्ह - सारांश छल - सेवा-निवृत्तिक बाद बढ़िया पाई भेटत। ओकरो ककरो दान नहिं क' देबै। बैंक मे अपनालेल जमा राखब। गाम वला मकान के नीक जकाँ मरम्मत करा लेब। कखनो काल ओतय गेला पर सबके कष्ट होइत छै। अई वयस मे आब अहूँ के आरामक जरूरत अछि आदि आदि। बेटा एतेक बुझनुक भ' गेल छैन्ह, एहि दिस हुनकर ध्याने ने गेल छलैन्ह। दूनू बेटा-बेटी सुभ्यस्त छलैन्ह। दूनू ओतय मकान बना नेने छल जतय नौकरी मे छल। श्रद्धा सोचने छलीह छुट्टी मे दूनू अपना ल'ग बजबैत रहैत छैन्ह -मुदा महाविद्यालय मे कहियो परीक्षा, कहियो नामांकन कहियो किछु त' कहियो किछु। पलखति कहाँ भेटैत छलैन्ह। आब निश्चिन्त भ' जा सकैत छथि। मुदा पत्र मे ओकर कोनो चर्चा नहिं छलै।

महाविद्यालय प्राय: सुनसान भ' गेल छलै। सब नमस्ते दीदी, प्रणाम दीदी कहि जा चुकल छल। बड़ा बाबू आबि टोकरा देलखिन्ह — दीदी! आई सुस्त बुझा रहल छी, मोन ठीक अछि ने? चलू अहाँक घर दिस हमरो जेवाक अछि। श्रद्धा चौंकैत कहलखिन्ह - हँ हँ ठीक छी, चलू। दरबान के कहियौ सबटा ठीक सँ बन्द क' लेत। ❑

ब'र घुरिये गेल

प्राय: बारह बरखक बाद मधु नैहर आयल छलि। एतेक दिन नहि आयल छलि कारण कोनो उपर्युक्त अवसर नहि भेटल छलै। भाइ-भाउज सब शहर ध' नेने छलखिन्ह। गाम मे सुविधा नहि रहबाक कारण बियाह-उपनयन शहरे मे भ' जाइत छलै आ मधु ओतहि निमंत्रित रहैत छल। एहि बेर आम बढ़िया फरल छलै आ भाइ-भाउज सब जुटल रहथिन्ह त' ओहो गाम जयवाक लोभक संवरण नहि क' सकल। गामक त' नक्शा बदलल छलै। अधिकांश सहोदर सब फराक-फराक गृहस्थी बसा नेने रहथि। बेसी भाग फूस आ खपराक घर पक्का मकान भ' गेल छलै। मुदा सझियाक पोखरि, इनार, मंदिर जीर्णावस्था मे छलै। सबके घरे-घर चापाकल भ' गेल छलै।

बारह बरख पूर्व जाहि बूढ़-पुरनियाँ स' स्नेह युक्त आशीर्वाद भेटैत छलै ओहि मे स' एक-दू के छोड़ि सब दिवंगत भ' गेल छलखिन्ह। ओकरा अपना पर हँसी लगलै, आब ओहो त' साइठक वयस टपि गेल छल। तखन ओ लोकनि दिवंगत भ' गेलखिन्ह त' आश्चर्य आ दुख कियाक भ' रहल छलै।

पहिल दिन त' भाइ-भाउज सब संगे आ भेट करवा लेल आयल गामक भौजी सबके गप्प मे ओझरायल रहल। दोसर दिन अहू वयस मे फुद्दी जकाँ अइ आंगन स' ओइ आंगन घुमैत रहल, सबहक कुशल-मंगल बुझैत रहल, स्नेह आ आशीर्वाद स' खोंइछ भरैत रहल।

एकटा जोतल डीह देखि सोना बाबीक रूप साकार भ' उठलै। अनेक रूप मे सोना बाबाी ओकरा मोन परलखिन्ह — मधुर स्वर मे सब आयोजन मे गीत गबैत, काज करैत काल से हो मनोयोग स' भगवतीक गीत गुनगुनाइत, कोहबर-मरवा लिखैत, जनउ तैयार करैत, चरखा कटैत, भोज भेला पर कनियाँ सबके पारस पहुँचबैत, नवजात शिशु के तेल-उकटन लगबैत आ अनुचित पर सब के फटकार लगबैत। मधु अपना मायक मुँहे सुनने छलि जे सोना बाबी अपना जीवते मे

अपन खेत आ बासवला डीह नगद ल' बेच देने छलीह, एहि शर्तक संग जे हुनका मुइलाक बादे ओ लोकनि जमीन पर कब्जा करताह। एहि शर्तक पालन सेहो भेल छल। भरि टोल मे हुनकर सम्मान छलैन्ह। हुनकर बात कियो कटैत नहि छलैन्ह।

बारह बरखक अवस्था मे सोना बाबीक कन्यादान भेल रहैन्ह आ चौदह बरखक अवस्था मे बैधव्य भेट गेल रहैन्ह। हुनकर पति पोखरि मे हेलैत काल जलकुम्भी आ लीर्‌ह मे तेना लटपटा गेल रहथिन्ह जे निकलि नहि पओलाह। घाट पर नहाइत लोकक ध्यान जावत ओहि दिस जइतै तावत जलकुम्भी आ लीर्‌ह हुनका लील गेल रहैन्ह।

किछु दिन निःसन्तान सोना के सासुर मे स्थान भेटलैन्ह, बाद मे लांछना आ प्रताड़ना होइत सुनि पिता अपना ल'ग ल' अनने रहथिन्ह। सोना अपना माता-पिता एकमात्र संतान रहथिन्ह। जाहि बाल-पोथी आ पहाड़ाक किताब के छोड़ि ओ सासुर गेल रहथि हुनका पुनः घोखवा लेल ओ भेट गेलैन्ह। माय-पिताक छाया मे समय निश्चिन्त कटलैन्ह। पिता हितोपदेश, नीति-श्लोक, जातक-कथा आ संगहि अपन अर्जित सांसारिक ज्ञान स' हुनको व्यावहारिक ज्ञान स' परिचित करा देने छलखिन्ह। माय-पिता के दिवंगत भेलाक बाद सोना पुनः अनाथ भ' गेलीह। सोनाक पिता के एहि गाम मे एक धनाढ्य स' पाँच कट्ठा जोतक आ दू कट्ठा बासक जमीन पुरहिताइ मे दान भेटल छलैन्ह त' एतहि आबि क' बसि गेल छलाह। अपन उदार विचार आ प्रवृत्ति स' भरि गामक प्रिय पंडित जी भ' गेल छलाह, मुदा सही अर्थ मे एहि गाम मे दियाद-बाद एकोटा नहि छलखिन्ह।

युवती सोना के मौसी-पीसी अपना ओतय ल' जा क' अपयश नहि लेब' चाहैत छलीह। वएह लोकनि बेरा-बेरी किछु दिन लेल चल अबैत छलखिन्ह। पैतृक जमीन के डोमना पूर्ववत बटाइ पर उपजा क' द' जाइत छलैन्ह ते ँ मुख्य अवलम्बक संग ओ निश्चित भ' गेल छलीह। स्वयं ओ अपना के चरखा, सीकी-मौनी, जनउ, सुजनी, अरिपन-पुरहरक संग व्याकरण-कौमुदी आ साहित्य-मंजूषा मे ओझरा लेलैन्ह। हुनकर एकाग्रता आ निष्ठा देखि अरोस-परोसक बेटी सब सेहो लूरि-भास आ अक्षर ज्ञान लेल घेरने रहैत छलैन्ह। सोना भरि टोलक बहीन, मौसी, पीसी भ' गेल छलीह। क्रमशः समय गति हुनका सोना नानी आ सोना बाबीक रूप मे प्रतिष्ठित क' देने छलैन्ह। बाबीक चेहरा आत्म विश्वास स' दमकैत रहैत छलैन्ह। बाबीक सशक्त व्यक्तित्व मधुक मोन आ मस्तिष्क पर अपन अमिट छाप छोड़ने छलैन्ह। मधु के मोन परलैन्ह चालीस-पैतालीस वर्ष पूर्वक एक घटना। एहिना गरमीक छुट्टी मे ओ गाम आयल छलि। तखन शुद्धक समय माने बियाहक समय छलै। गामक नवतुरिया, बूढ़, प्रौढ़ महिला सबके ठोर पर बियाह, बरियाती, परिछनि, डहकन, बारहमासा, चौमासा आदि गीत सुनबा मे आबि रहल छल। जेना गीत स' गाम मह-मह क' रहल हो। जिनका घर-कथा स' बेटी-बेटाक बियाह ठीक भेल रहैत छलैन्ह। ओ गिरहत-गिरहतनी आस्ते-सुस्ते बियाहक विधक सब वस्तु, बरियातीक भोजन आ विदाइक सब व्यवस्था क' निश्चिन्त रहैत छलाह। जिनका सौराठ सभा स' ब'र आनक आस रहैत छेलैन्ह ओहो कम-बेश तैयारी केनहि रहैत छलीह मुदा प्राण धुक-धुक करैत भगवती के छागड़, महावीर जी के रोट, ध्वजा, भोला बाबा के लाख मे जौवाँ महादेवक पूजाक कबुला करैत रहैत छल। कोनो आंगन स' सांझे भगवती-गीतक स्वर-लहरी तरंगित भ' उठैत छल त' कोनो आंगन स' रातिक बारहो बजे गीत गूंजि उठैत छल। कियो हकासल-पियासल दौड़ल आबि क' समाद दैत छलखिन्ह - परिछनि के तैयारी करू, ब'र-बरियाती आबि रहल छथि। एहि मे कियो ठकाइतो छलाह त' किनको सुतरियो जाइत छलैन्ह।

किनको बेटी रूपवती-गुणवती छलखिन्ह त' गुण-सम्पन्न, अर्थ - सम्पन्न ब'रक दाम चुकयवाक शक्ति नइ छलैन्ह, जे दाम चुकयवाक क्षमता रखैत छलाह मुदा बेटी गुणवती त' छलैन्ह रूपवती नहि हुनका वर-पक्ष नकारि दैत

छलैन्ह।

एहि सब अभाव स' ग्रस्त एक परिवार हमरा टोल मे छल। पाँच भाईक बीच एक बहीन - अर्थ आ रूपक मारल। दू-तीन बरख स' पूरा परिवार ब'र तकबा मे लागल छल। इच्छा छलै जे नून-रोटीक जोगाड़ होइ आ ब'र स्वस्थ्य होइ, जँ एहन परिवार मे कन्यादान भ' जाइ त' भाग्य बूझत। पैतृक जमीन मे स' दू कट्ठा भरना लगाव' लेल तैयार छल। भरल-पूरल, सब तरहें सुभ्यस्त परिवारक माँग पूरा करवाक क्षमता कहाँ छलै। भरना लगाएल खेत छोड़ा पाओत तकरो आस नहि छलै।

एहि मानसिक उहापोहक बीच देवदूतक रूप मे एकटा घटक समाद अनने रहथिन्ह — ब'र भाइ मे एसगर, एक बहीन आ माय-पिता छथिन्ह। घर सुभ्यस्त छै। बेटी के कहियो अन्न-वस्त्रक कष्ट नहि हयत। बियाहक खर्च वएह लोकनि उठा लेत, अहूँक घर भरि देत। ब'र कनेक तोतराइत छै, पीठ पर महादेव (कूबड़)क वास छैन्ह। जँ कथा पसिन्न हो त' एक आँखि-मूनि 'हँ' कहि दियौ। काल्हिये ब'र बरियाती दुआरि लागि जायत।

पिता के अपन अक्षमता धिक्कारी रहल छलैन्ह। भेलैन्ह जे कहियै - एहि स' नीक बेटीक गरदनि मे घैल बान्हि डुबा दियै। मुदा जेठ भाइ जोगी के भविष्य देखाइ द' रहल छलैन्ह। पाँच भाइक बीच दस क्ठाक एकमात्र पूजी मे स' भरना द' बहीनक विवाह मे खर्च करब अपन नून-रोटीक आधार के गमायब बूझि पड़ैत छलैन्ह। तखन बटाई के जमीन पर आश्रित भ' जइतथि।

पन्द्रह बरखक बेटी के विवाहक योग्य आ सासुर-परिवार के सम्हार' योग्य त' मानल गेल छलै मुदा ओकर अपन विवाह लेल विचार देबा बेर मे ओ नेना छल। जेठ बालक, जोगी, माय-बाप के बुझेने रहथिन्ह — ब'र एसगर भाइ छै। हमर बहीन ओतय रानी बनि क' रहत। हमरो सबहक एकमात्र अवलम्ब, जमीन, बाँचि जायत।

पिताक शंका छलैन्ह — गौआँ की कहत? कहूँ सब बारि नहि दियै? जोगी शंकाक काट उपस्थित कयने छलाह — गौआँ हमर खर्चा चलवैया? हमरा बहीनक विवाहक खर्चा देत? सार्मथ्यहीन माय-बाप करेज पर पाथर राखि मौन भ' गेल छलाह आ जोगी घटक के अपन स्वस्ति द' बहीनक बियाह ठीकक' लेलाह। अपन सहोदर पर्यन्त के सब बात स्पष्ट बूझय नहि देलखिन्ह। विवाह लेल चारिम दिन निर्धारित भेल।

चारिम दिन भोरे स' जोगीक आंगन मे चाउर, दालि, चूरा, आटा, तरकारी आदि बोरा मे भरि क' भरिया सब आन' लागल छल। पाँच भार त' मात्र दहीक मटकूर छल आ कतेको चँगेरा केरा-मधुरक। भरिया सब समाद देलक — ओ सब अनोखेपुर स' बुझनुक झा ओतय स' आयल अछि। बुझनुक बाबूक बेटाक बिवाह जोगी बाबूक बहीन स' ठीक भेल छैन्ह। टोलक नवुरिया आ आइ माइ खोज-पुछारी मे पहुँचय लगलखिन्ह। कनियाँ बन' वाली गौरीक सखी-बहिनपा सबक हँसी-ठिठोली स' आँगन गुंजित भ' गेल।

सांझ होइतहि ब'र बरियाती क आगमन संग ढोल-पिपही, रसनचौकी बाजय लागल। जोगी, चारिटा पेट्रोमैक्स टोलवैया स' मांगि-चांगि क' अनने छलाह। सौंसे आंगन-दलान इजोत छिरिया रहल छल। जोगीक हित अपेक्षित नवतुरिया सब बरियातीक स्वागत मे लागि गेल। प्रौढ़-प्रतिष्ठित सब बरियाती ल'ग बैसत आपकता देखा रहल छलाह। नेना-बूढ़, वयस्क कुल मिलाक' बरियाती मे गोट पन्द्रहेक व्यक्ति छलाह। एक प्रश्न बरियाती दिस स' त' एक प्रश्न सरियाती दिस स' चलि रहल छल। सरियाती बेसी उल्लसित छलाह जे जोगी-परिवार बेटीक भार स' मुक्त भ' रहल छल। बरियाती

कनेक बेसी-शिष्टता आ सौम्यता धारण केने छलाह। ब'र आ ब'रक पिता त' जेना मुँह नहि खोलवाक सप्पत खेने छलाह।

एकटा नवतुरिया जे शरबत पिया रहल छल, ब'र के कहलकैन्ह – मुँह मे दही पौर क' आयल छी? किछु बजैत कियाक नहि छी?

नवतुरिया पुनः खोचारलक – अहाँ बौक त' ने छी? ब'र महोदय चुप्पे रहलाह। नवतुरिया उक्कठी छल। पुनः टोकारा देलक – शरबत पीब' लेल मुँह खोलब कि हमरा काँरी आनय पड़त?

आब ब'र क सहनशीलता सीमा नांघि गेलैन्ह। चिकरि उठलाह – छा... छा... छाल, तो... तो... तोला की बु... बु.. बुझाइत छौ, ब... ब... बल काबिल छे ँ?

नवतुरिया घोल केलक – भाइ यौ, काका यौ! ब'र खाली कुबड़ा नहि अछि, इ त' परम तोतराहा अछि। तइ पर अकरैत कोना अछि जेना थानाक दरोगा रहय।

बरियातीक मुँह लटकि गेलैन्ह जे आब सरियाती कोन रूपे स्वागत करत आ सरियातीक मुँह लटकि गेलैन्ह जे जोगी केहन ब'र उठा अनलाह।

वातावरणक गहमागहमी देखि पिता के बियाह मे भांगठ क अनुमान भेलैन्ह त' क'ल जोड़ि ठाढ़ भ' गेलाह आ दूनू पक्ष के संबोधित कयलैन्ह – हम गरीब क संग परम अभागल सेहो छी। हमर नाव के पार लाग' दियौ। हम क'ल जोड़ि सब स' विनती करैत छी। बरियाती-सरियाती दूनू पक्ष गंभीर भ' गेल। तावत कनियाँक जेठ भाई, जोगी, आँगन स' 'आज्ञाक डाला' ल' ब'र क पिता क समक्ष राखि देलैन्ह। विध पूरा भेला पर पुनः डाला ल' भगवतीक आगू राखि अयलाह।

टोल क स्त्रीगण आगाँक विध लेल अंगना क मुँह पर थहाथही ठाढ़ छलीह। मैथिल-ललनाक गीतक खजाना भरल रहैत अछि। स्वर-लहरी तरंगित भेल–

गे माइ हम नहि आजु रहब एहि आंगन, जौं कूबड़ होयता जमाय। बरियाती पक्षक कान ठाढ़ भ' गेलै, मुदा सब संयमित छल। सोना बाबी कात-करोट स' अपन दायित्व निमाहि रहल छलीह। ओ प्रत्यक्ष रूप स' विध-व्यवहार मे सहभागी नहि होइत छलीह मुदा विध सब हुनके स' पूछि क' होइत छलैन्ह।

बियाहक वातावरण के बुझलाक बाद बाबी गौरीक दोसर भौजी के कहने रहथिन्ह – गौरी के धोबिन स' सोहाग दिया दियौ। गौरी के आंगन मे आनि पालो पर बैसा देल गेलै जे धोबिन सोहाग देतै।

हिचुकैत गौरी स' बाबी पुछने रहथिन्ह – कनैत कियाक छे ँ? घर-बर पसिन्न छौ ने?

– माय-बाबू, भैया-भौजी के पसिन्न छैन्ह त' ठीके छै, हम की कहब। बाबी– तखन मुँह पर हँसी कियाक नहि छौ? तोरा माय के एको बेर नहि देखलियौ? कोन काज मे लागल छथुन्ह? तखनहि गीतक स्वर-लहरी पुनः उठल– जनक लला ठाढ़ छथि छुआरि, सखी सब परिछनि चलू। बाबी उम्हरे विदा भ' गेली। दू सज्जन अंगनाक मुँह पर राखल स्नानी-चौकी पर ब'र के आनि ठाढ़ क' देलखिन्ह। आब मिथिलाक विधक अनुसार ब'र महोदयक शारीरिक निरीक्षण आ बौद्धिक परीक्षण आरंभ हेवाक बेर छलैन्ह। ब'र स' डराडोरि, जनउ आ पहिरल वस्त्र के त्यागि नव धोती, चद्दरि, जनउ, डराडोरि, पहिरवाक, आग्रह विधकरी दिस स' भेलैन्ह।

ब'र के पसेना छूटय लगलैन्ह। हड़बड़ायल सन बजलाह – नइ, नइ, हम स... स... सबटा नवे प.... प... पहिल क' आयल छी। नवतुरिया महिलाक झुंड ठहाका लगेलक। प्रश्न भेलै – की कहलियै? कने फेर स' कहियौ त'? गौरीक बड़की भौजी जे विधकरी सेहो छलीह, बात सम्हारलैन्ह – लाज होइत हेतैन्ह। एकटा धोती दैत झुंड के कहलखिन्ह – दू गोटे स' धोतीक अर्ह क' दियौन्ह, कपड़ा बदलि लेताह।

प्राय: आधा घंटाक घोंघाउझक बाद ब'र के विध लेल तैयार कयल गेल। गोट-गोट क' छओ टा गंजी-अंगा जखन हुनका शरीर पर स' उतरल त' खिन्नकाय पीठ पर प्राय: पसेरीक आकार मे कूबड़ स्थापित छल। ओहि भार स हुनकर शरीर मे धनुषाकार झुकल छल।

ब'रक रूप देखि महिला-मंडली छगुन्ता मे परि गेल छल। सबके मुँहक गीत बिसरा गेलै, ठोर सिया गेलै। कहुना क' ब'रक जनउ, डराडोरि, धोती बदलल, गेल। विधकरो डोपटा 'स' शरीर के आवेष्टित क' चानन-काजर, ठोप लगा माथ पर घुनेस आ गरदनि मे माला धारण करा देलखिन्ह। आब बेर छलैन्ह चँगेरा मे राखल वस्तु के चिन्हबाक। ठक, बकक बाद घाइठ चिन्हलैन्ह त' झुंड मे स' एक गोटे चौल केलखिन्ह – तोरा माय के....।

ब'र क तामस पुन: असह्य भ' उठलैन्ह बजलाह – ह... ह... हमला माय के जे कियो गा...गा.. गालि देत ह... ह... हम ओकल जी.... जी.... जीह घीच लेबै। महिला-मंडली सकदम भ' गेल। सब नहुँए-नहुँए ससरय लागल त' विघकरी आग्रह क' रोकि लेलखिन्ह। तखन सोना बाबी आगू आबि ब'र के पुछने रहथिन्ह – अहाँक गाम मिथिला मे नहि अछि की? इ सब विध-व्यवहार कहियो देखने-सुनने नहि छियै। अहाँक बापो इ सब विध-व्यवहार केने हेताह। भाग मानू जे एहन रूप-गुण पर गौरी सन लक्ष्मी आ सुशील कनियाँ भेटत।

ब'रक लोहछल उत्तर छलैन्ह – अल्हुआ क ल... ल... लक्ष्मी। हम पाँ... पाँ... पाँच हजाल लुपैया आ एतेक भा... भा... भाल-दोल (भार-दोर) देलियैन्ह त... त.... तखन बि... बि... बियाह भ' रहल छौ।

महिला-मंडली मे कनफुसकी होमय लागल छल– बियाह स' पहिने एहन बोली आ व्यवहार छै त' बियाहक बाद गौरीक कोन गति करतै? इ ब'र त' कूबड़ा, तोतराहक संग र्निबुद्धि सेहो छै। कोन ज्ञाने भाइ-बाप एहन उठा अनलखिन्ह। सोना-बाबी गौरीक बड़की भौजी के कहने-रहथिन्ह – यै कनियाँ! पाँच भाइक बीच एक बहीनक इ दुर्गति? जँ अन्न-वस्त्र लेल एहन कुठाम मे फेकि रहल छियै त' स्वस्थ्य आ नीक बोली-व्यवहार वला बोनिहार स' बियाह करा दियौ। सेहो नहि त' गरदनि मे घैल बान्हि पोखरि मे डुबा दियौ, इनार मे धकेल दियौ, कर्त्तव्यक इति श्री भ' जायत।

ब'र के एतेक अपमानक अनुमान नहि छलैन्ह। परिछनिवला चौकी पर स' बेंग जकाँ कूदि दू स' तीन धाप मे दलान पर छलाह आ कहैत सुनल गेलाह – ह... ह... हमल लु... लु.... लुपैया आ भाल-दोल (भार-दोर) घुला दे। आब ह... ह... हम पाँ... पाँ.... पाँच हजाल गना क' बि.... बि.... बियाह क' देखा देबौ।

दलान पर आधा, बरियाती अशुभ घटित हेवाक आशंका स' लघुशंकाक लाथे घसकि गेल रहथि। गौरीक भाइ आ पिता आंगनक रूखि देखि बुझि गेलाह जे इ विवाह महिला-मंडली नहि होवय देत। तेँ हाथ मे बचल चारि हजार टाका आ खर्च नहि भेल भार-दोर ब'रक पिता के तत्काल सुपुर्द क' देल गेलैन्ह। एक हजार टाका लेल एक मासक समय देवाक निवेदन क' क'ल जोड़ि ठार्ह भ' गेल रहथिन्ह।

ब'र-बरियाती घूरि गेल। गौरीक पिता अपना के अभागल मानि मुँह नुका नेने रहथि। अगत्ती नेना सब बहुत

दिन तक फकरा पढ़ैत रहल – कानल कनियाँ रहिये गेल, कानी छँटाल ब'र घुरिये गेल।

ओहि घटनाक बाद जोगी सोना बाबीक प्रति मात्र कटु वाक्य बजैत छलाह। सोना बाबी के सुनबा मे आयल छलैन्ह जे जोगी बजैत अछि – बुढ़िया अपने जकाँ गौरी के सेहो नैहर मे जिनगी बितबेतै। अपने जकाँ भरि टोलक नौरी बना देतै। ओहि घटनाक बाद बाबी अपन मसियौत-पिसियौत आ साधारण परिवारक अपेक्षित कुटुम्ब ल'ग गौरीक गुणक बखान आ परिवारक असमर्थताक चर्चा करैत छलीह। बाबीक सत्प्रयास स' अगिला शुद्ध मे एक अल्पवयसी आ निःसंतान विधुर जे स्कूलक शिक्षक छलाह, स' गौरीक बिवाह बिना कोनो विशेष ताम-झाम आ बिना दहेजक भ' गेल रहै। सासुर जयवा काल गौरी सब स' बेशी, बाबीक गरदनि लागि हिचुकि-हिचुकि क' कानल छल। ❑

अपन अभिव्यक्ति

कोनो काजक लेल प्रोत्साहन आत्मबल अनैत छै। साहित्यिक अभिरूचि स्कूल काल स' अछि। स्कूल-कॉलेज क पत्रिका मे लेख छपल छल। कलकत्ताक छात्र-जीवन मे अपन साहित्यिक गुरूजन लोकनि स' मैथिली मे लिखा लेल प्रोत्साहन भेटल त' लेखनी ससरल ओहि समय मे हमर निवास-स्थान पर प्रायः निःय मैथिली साहित्यकार आर मैथिली-सेवी लोकनिक जुटान होइत छलैन्ह। लगैत छल जेना सब पर मैथिली रूपी भांगक नशा चढ़ल होइन्ह। ओहि प्रभाव स' हमहूँ असमर्पकित नहि रहलहुँ ''अनुभूति'' नामकरण क कारण अछि जे प्रायः प्रत्येक कथाक पात्रक संग हम जीने छी, घटित घटना हमर हृदय के प्रभावित कयलक । हम ओकरा लिपिबद्ध करक प्रयास कयल। साइठ के दशक मे तत्कालीन 'मिथिला-दर्शन', 'मिथिला-मिहिर', 'शिखा' आ 'कथा-पुष्प' मे किछु मौलिक आ किछु अनुदित कथा आ लेख छपल।

सत्तरि के उत्तरार्द्ध मे पटना-वासी भेलहुँ त' एतय क आकाशवाणी स' सेहो कथा-पाठ, परिचर्चा आ लेख-पाठक अवसर भेटल। किछु पोथी आ पत्रिका मे सेहो लेख आ कथा छपल। कच्छप-गतिये लेखन चलैत रहल। संग लागल गृहणी आ शिक्षिका क ड्यूटी बड़ करगर छल तेँ लेखन प्रक्रिया के अवाध गति नहि द' सकलियै।

दिना-दिनी एतय क साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था स' जुड़ैत गेलहुँ त' हित, मीत, आपकता एखनिहार क क्षेत्र सेहो बढ़ि गेल। ओही मे स' किनको कथन छलैन्ह – नेना स' अहाँ कथा पढ़ैत-सुनैत जवान भ' गेलहुँ, त' किनको कथन छलैन्हं - जवान स' बूढ़ भ' गेलहुँ मुदा अहाँक लिखल कथा-संग्रह देखवा मे नहि आयल।

बहुत साहस क' कथा सब जुटेने छी। प्रारंभिक किछु कथा हेरा गेल जे उपलब्ध भेल ओकर प्रस्तुति ''अनुभूति'' मे अछि।

दैनिक-जीवन मे घटना आ व्यक्तिक व्यवहार के घटित होइत सब देखैत छथि मुदा ओकरा अनुभव करवाक दृष्टिकोण नितान्त वैयक्तिक होइत छै। एके घटना एक व्यक्तिक जीवन के अस्त-व्यस्त क' दैत छै त' दोसर लेल ओ घटना बड़ सामान्य रहैत छै। ''अनुभूति'' क प्रति खटगर-मिठगर प्रतिक्रिया क हमरा प्रतीक्षा रहत।

– पन्ना झा